मनचाही सन्तान

पुत्र या पुत्री

मन्त्र, मणि एवं औषधि प्रयोग

डा. अनिल मोदी



ॐ क्लीं ॐ देवकी सुत,
गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं,
शरणं गतः क्लीं ॐ॥







मनचाही सन्तान

पुत्र या पुत्री

(मन्त्र, मणि एवं औषधि के द्वारा)

प्राय: माता और पिता कामना करते हैं कि हमारे इस बार पुत्र हो या इस बार पुत्री हो जावे, परन्तु क्या यह सम्भव है? और कैसे?...

पुत्र या पुत्री देना तो भगवान पर ही निर्भर है। किन्तु फिर भी मन्त्र, मणि और औषधि द्वारा आप मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा सम्भव कर दिखाया है इस पुस्तक के यशस्वी लेखक **डॉ. अनिल मोदी** ने जिनके अत्यधिक परिश्रम एवं शोध ने अन्ततः यह सिद्ध कर ही दिया कि ऐसी कोई समस्या नहीं है कि मनचाही सन्तान को जन्म नहीं दिया जा सके। पुस्तक में मन्त्र एवं मणि के साथ-साथ औषधि के सेवन पर भी बल दिया है।

यह पुस्तक सभी वर्ग के दम्पत्तियों, जिज्ञासु पाठकों और विशेष रूप से इस बार 'पुत्र' हो या 'पुत्री' हो के इच्छुकों के लिए उपयोगी है।

बेटा हो या बेटी लड़के लड़की में भेदभाव नहीं करें यह स्लोगन दीवारों पर या कागजों तक ही ठीक रहते हैं। व्यवहार में जिसके पुत्र नहीं है वह कितना दु:खी है और जिसके पुत्री नहीं है वह माँ कितनी दु:खी है, यह तो वे दु:खी दम्पत्ति ही बता सकते हैं।

"घायल की गति घायल जाने, जो कोई घायल होय।"

यह पुस्तक पढ़कर मनचाही सन्तान पैदा करें।

— डॉ. अनिल मोदी

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥

रणधीर प्रकाशन की उत्कृष्ट प्रस्तुति

मनचाही सन्तान

पुत्र या पुत्री

(मन्त्र, मणि एवं औषधि के द्वारा)

मन्त्र, मणि एवं हिमालय के योगियों द्वारा प्रदत्त औषधि से मनचाही सन्तान प्रदान कराने वाली अनुपम पुस्तक

लेखक

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त, भारत के महामहिम राष्ट्रपति से पुरस्कृत

डॉ॰ अनिल मोदी

(महाकाल उपासक)

एम॰ए॰ हिन्दी, एम॰ए॰ संस्कृत, एम॰ए॰ वेद, पी॰एच॰डी॰ ज्योतिष, ज्योतिष विशारद (कृष्णमूर्ति पद्धति)

मूल्य : 100-00

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

प्रकाशक : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे)
हरिद्वार-249401
फोन : (01334) 226297

वितरक : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

दिल्ली विक्रेता : **गगन बुक डिपो**
4694, चरखेवालान (निकट नई सड़क, दाईवाड़ा)
दिल्ली-6

लेखक : **डॉ. अनिल मोदी**

संस्करण : **सन्** 2008

शब्द सज्जा : **जे के प्रिन्टोग्राफर्स, दिल्ली-6**

मुद्रक : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली-92**

MANCHAHEE SANTAN : PUTRA YA PUTRI
Written & Collected by : Dr. Anil Modi
Published by : Randhir Prakashan, Hardwar (India)

लेखक की ओर से

भारतवर्ष में जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण है कि प्रत्येक व्यक्ति एक लड़का एवं एक लड़की पैदा करना चाहता है, सामान्य व्यक्ति की इस कामना को राज्य सरकारों और केन्द्र सरकार की कोई भी नीतियाँ लागू कर दें कुछ फर्क नहीं पड़ने वाला है।

मेरे विचार में आज तक विभिन्न राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकार ने जनसंख्या नियन्त्रण के लिए सख्ती तो की, लेकिन ऐसा कभी नहीं सोचा कि प्रत्येक व्यक्ति को एक पुत्र और एक पुत्री पैदा करने की शिक्षा को अनिवार्य विषय बनाकर जनसंख्या नियन्त्रण कर लिया जाये।

अपने शिशु का लिंग निर्धारण स्वयं करने की इच्छा रखने वाले माता-पिता के लिए यह पुस्तक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष अनुभव हो रहा है। जिससे जन सामान्य लाभ उठा सकेगा।

इस पुस्तक में बताये गए नियमों का पालन करके आप अपनी इच्छा अनुरूप पुत्र या पुत्री ही उत्पन्न कर सकते हैं। जिनके सन्तान नहीं है, मासिक धर्म बन्द हो गया है, उम्र अधिक हो गई है वे भी हिमालयी जड़ी-बूटियों से सन्तान उत्पन्न कर सकते हैं। मनचाही सन्तान ही होने से वे राष्ट्र और देश जो जनसंख्या नियन्त्रण करना चाहते हैं, उनके लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी है।

प्रस्तुत पुस्तक में किसी भी दम्पत्ति को पुत्र या पुत्री ही मनचाहे अनुसार पैदा हो, बताई गई विधि अत्यन्त सरल, पूर्ण प्राकृतिक, सात्विक अनाक्रामक तथा नैतिकरूप में स्वीकार्य और वैज्ञानिक दृष्टि से पूर्णतः सुरक्षित है। अपने शिशु का स्वयं लिंगनिर्धारण करने के इच्छुक दम्पत्तियों को यह

पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए तथा इस व्यवसाय से सम्बन्ध रखने वाले व्यक्तियों को भी इसका अधिकाधिक प्रचार करने की दृष्टि से इसे पढ़ना चाहिए और जनसंख्या नीतिनिर्धारकों को जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने की दृष्टि से इसे एक साधन के रूप में अपनाना चाहिए।

मैं अपने गुरुदेव के आशीर्वाद से पाठकों को यह सन्देश देना चाहूँगा कि वह इसमें दी गई बातों को अपनायेंगे और जीवन में मनचाही सन्तान पायेंगे। आप अपने उद्‌देश्य में सफल हों, इसी आशा से मंगलकामना करता हूँ।

—लेखक

लेखक की ओर से पाठकों का आह्वान

दम्पत्तियों द्वारा दो बच्चों के परिवार का चुनाव न करने के पीछे यह मानसिकता रही है कि उनके दोनों बच्चे एक ही लिंग के हैं और वे कम-से-कम एक बच्चा विपरीत लिंग का चाहते हैं, या कम से कम एक लड़का तो अवश्य ही चाहते हैं। यदि वे बच्चे के लिंग का चुनाव पहले ही करने में सक्षम हो तो निश्चित रूप से प्रत्येक दम्पत्ति एक लड़का एवं एक लड़की ही उत्पन्न करना चाहेगा, बस इसी समस्या का समाधान इस पुस्तक में मैंने करने का प्रयास किया है।

मेरे पूज्य गुरुदेव श्री शेलेन्द्र शर्मा हिमालय योगी जो ४००वर्षीय आयु में आज भी जीवित हैं वे कहते हैं कि मन्त्र-मणि से भी औषधि प्रबल है। हिमालयी जड़ी-बूटियों में इतना दम है कि आप चाहें लड़का तो लड़का और एक लड़की चाहें तो लड़की होगी। एक लड़का और एक लड़की प्रत्येक के हो जावें उसके पश्चात् परिवार नियोजन के उपायों को अपनायें जिससे अन्य बच्चों के जन्म पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि पर नियन्त्रण पाने का इससे बेहतर और क्या उपाय हो सकता है कि एक सरल और प्राकृतिक पद्धति का प्रचार माता-पिता में किया जाए, जिसके द्वारा वे इच्छानुसार लिंग का चुनाव कर बच्चे पैदा करने में सक्षम हों। भारत में भावात्मक, आध्यात्मिक, सामाजिक और धार्मिक रूप से लड़कों का ही महत्व है। भारत ही नहीं अपितु विदेशों में यथा पाकिस्तान, बांग्लादेश, चीन, नेपाल और अन्य कई देशों में लोग लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को अधिक चाहते हैं, इसलिए लड़कियों का प्रतिशत कम हो गया है और महिला अपराधों में वृद्धि हुई है।

भारत सरकार एवं विभिन्न राज्य सरकारों की दृष्टि में दो बच्चे बस कोई भी हों, चाहे दो पुत्रियाँ हों तो भी वह कहती हैं कि बेटा-बेटी ए समान हैं। परन्तु यह विचारधारा सिद्धान्तिक है क्योंकि सरकार ने कितने दण्ड निर्धारित कर दिये परन्तु व्यक्ति पुत्र की कामना किये बिना रह ही न सकता है और वैसे भी देखा जाये तो पुत्र बिना क्या है?

भारत सरकार या राज्य सरकारों की अवधारणा—दो बच्चे कोई भ

शहरी क्षेत्र के दम्पत्तियों की अवधारणा—एक पुत्र एक पुत्री अथवा दो पुत्र हो तो भी परिवार नियोजन परन्तु दोनों पुत्रियाँ हो तो एक प्रयास और

ग्रामीण क्षेत्र के दम्पत्तियों की अवधारणा—दो लड़के एक लड़क अथवा केवल दो लड़के, कोई लड़की नहीं।

ऐसी अवस्था में इस पुस्तक को प्रत्येक दम्पत्ति के पास गुरुदेव के आशीर्वाद से पहुँचाना अत्यन्त आवश्यक हो गया कि हमारे राष्ट्र पावन भार वर्ष का भी कल्याण हो और प्रत्येक दम्पत्ति अर्थात् माता-पिता एक पुत्र ए एक पुत्री के स्वामी बनें।

पुस्तक लेखन में पूज्य गुरुदेव के आशीर्वाद के साथ धर्मपत्नी श्रीमत रेखा मोदी जो एम.एस.सी.,बी.एड. तथा पी.जी.डी.सी.ए. है उन्होंने सराहनी सहयोग किया है। मेरी धर्मपत्नी ने बताया कि जिस स्त्री के पुत्र नहीं है उसकी व्यथा को एक पुरुष नहीं समझ सकता है। ऐसे में तो आपकी य पुस्तक ही उसके कुल का दीपक लायेगी और आपको ढेरों आशीर्वा मिलेगें। बस धर्मपत्नी की इसी प्रेरणा से यह पुस्तक अथक प्रयासों के पश्चात् आपके कर कमलों में प्रस्तुत है।

आपका अपन

—डॉ. अनिल मोदी

M.A. हिन्दी, M.A. संस्कृत, M.A. वे

P.hd. ज्योतिष, ज्योतिष विशारद (कृष्णमूर्ति पद्धति)

पता :

ज्योतिष दर्शन

सेंट्रल बस स्टेण्ड, उदयपोल, उदयपुर (राजस्थान)

मोबाईल : ९४१४१-७२७२७

अनुक्रम

१. एक पुत्र उत्पत्ति आवश्यक—सरकारी सख्त आदेश कन्या-हत्या का कारण ११
२. विवाह के साथ ही इस पुस्तक को दहेज में देना माता-पिता का कर्त्तव्य १४
३. सन्तान शब्द का स्पष्टीकरण एवं अर्थ १६
४. प्रारब्ध में पुत्र लिखा ही नहीं है तब भी पृथ्वी के तीन अमृत से पुत्र प्राप्ति सम्भव १८
५. पुत्र प्राप्ति हेतु विभिन्न प्रकार के मन्त्र २०
गर्भस्तम्भन, गर्भरोग, सुखप्रसव आदि विविध प्रयोगों हेतु मन्त्र ५८
६. सब धोखा दे सकते हैं; मन्त्र नहीं ७८
७. मन्त्र जप स्वयं करना श्रेष्ठकर ८१
८. पुत्र प्राप्ति हेतु व्रत एवं अनुष्ठान ८३
पुत्र प्राप्ति हेतु व्रत ८३
पुत्र प्राप्ति हेतु विभिन्न अनुष्ठान ८६
९. पुत्र प्राप्ति हेतु नौ प्रकार की मणि ८७
पुत्र प्राप्ति हेतु प्रथम मणि : मन्त्र-व्रत अनुष्ठान ८७
पुत्र प्राप्ति हेतु द्वितीय मणि : इष्ट कृपा प्राप्त करना ८८
पुत्र प्राप्ति हेतु तृतीय मणि : ताबीज ९१
पुत्र प्राप्ति हेतु चतुर्थ मणि : रत्न मणि ९२
पुत्र प्राप्ति हेतु पंचम मणि : साधु-संतों का आशीर्वाद, माता-पिता का आशीर्वाद ९३
पुत्र प्राप्ति हेतु छठी मणि : टोना-टोटका ९४
पुत्र प्राप्ति हेतु सप्तम मणि : यन्त्र १०४
पुत्र प्राप्ति हेतु अष्टम मणि : गुरुकृपा-गुरु आशीर्वाद १२४
पुत्र प्राप्ति हेतु नवम मणि : स्त्री-पुरुष संयोग एवं औषधि १२७
१०. मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री प्राप्त करने हेतु १२८

आहार-विहार १२८
कपड़े (वस्त्र) १३०
द्रव्य १३१
योनि के वातावरण को डूश द्वारा परिवर्तित करना १३१
संसर्ग के समय आसन १३२
बारम्बार संसर्ग १३२
आवेग अथवा उत्साह अथवा कामोत्तेजना १३३
तनाव १३४
आचार-विचार, आहार-विहार एवं गर्भाधान की तैयारी १३५
गर्भाधान हेतु पक्ष एवं रात्रि १३६
सम रात्रियों की गणना १३७
शुक्ल पक्ष एवं समरात्रि में ही संसर्ग करने में उत्पन्न होने वाली समस्याएँ १३९
कुछ गलतफहमी या शंकाएँ १४२
पुत्री पैदा करने हेतु गर्भाधान पक्ष एवं रात्रि १४४
वैज्ञानिक दृष्टिकोण १४६
पुत्र पैदा करने हेतु पाँच प्रश्नों पर मनन १४८
पुत्र प्राप्ति के २७ टिप्स १५४
११. **औषधि खण्ड** १६१
पुरुषों के लिए १६१
स्त्रियों के लिए सन्तानोत्पत्ति चिकित्सा योग १६९
मासिकधर्म सम्बन्धी विभिन्न चार रोग एवं औषधि विवरण १७०
गर्भ धारण नुस्खे १७३
गर्भ रहने पर पुत्र-पुत्री उत्पन्न करने वाले नुस्खे १७५
सुखपूर्वक प्रसव उपाय १७७
बन्ध्या बनाने वाली औषधियाँ १७८
गर्भिणी की ९ महीने की चिकित्सा १७९
पुत्र प्राप्ति के इच्छुक माता-पिता के लिए विशेष सूचना १७९

एक पुत्र उत्पत्ति आवश्यक-
सरकारी सख्त आदेश कन्या-हत्या का कारण

लिंग निर्धारण के उपरान्त भ्रूणहत्या आम है। समाचार पत्रों में अभी भी मादा शिशु की हत्या के समाचार प्रकाशित होते रहते हैं। लड़कियों की उपेक्षा के कारण समय से पूर्व मृत्यु एक सामान्य बात है। प्रत्येक माता-पिता चाहते हैं कि पुत्री नहीं हो तो कोई बात नहीं, समाज में सिर ऊँचा उठाकर चलने के लिए पुत्र तो होना ही चाहिए। ऐसे सामाजिक परिवेश से माताओं के हृदय पर शारीरिक भावनात्मक और आर्थिक चोट पहुँचती है।

भारत के राजनेता, अर्थशास्त्री चीन देश का उदाहरण देते हैं, जबकि चीन में एक शिशु का नियम भी मादा शिशुओं की हत्या का कारण बना हुआ है। जनसंख्या वृद्धि की समस्या पर गम्भीरतापूर्वक नियन्त्रण पाने की दृष्टि से चीन ने 'एक परिवार—एक बच्चे' का नियम बनाया है फिर भी प्राचीन रीति-रिवाज में कोई अन्तर नहीं आया, जिसमें पहला बच्चा मादा होने पर उसकी हत्या कर दी जाती थी। कई माता-पिता पुत्र की कमी महसूस करते हैं। आंकड़े इस बात के साक्षी हैं कि इस प्रकार लाखों मादा शिशुओं की हत्या हुई और माता-पिता को गहरा आघात लगा। एक बच्चे के नियम में परिवर्तन किया गया और पहले शिशु के रूप में पुत्री पैदा होने पर एक और शिशु को जन्म देने की छूट प्रदान की गई।

४ अप्रैल, १९८६ के टाइम्स ऑफ इण्डिया समाचार पत्र में प्रकाशित सम्पादकीय में लिखा है—

''चीन का 'एक शिशु' वाला नियम असफल सिद्ध हो रहा है। वास्तव में प्रशासन को स्वयं ही नियमों में ढील देनी पड़ी, जिन्हें पहले

परिवार नियोजन हेतु सख्ती से लागू किये थे। इसका मुख्य कारण मादा शिशुओं की हत्या में अचानक वृद्धि थी। वर्ष १९८२ एवं १९८३ में ही ६,३५,००० हत्याएँ हुई। एक शिशु का नियम इस तथ्य पर आधारित था कि यदि इस शताब्दी में जनसंख्या पर नियन्त्रण नहीं किया गया तो अगली शताब्दी में देश बर्बाद हो जायेगा।"

चीन की जन्म दर कम होकर २० प्रति हजार पर आ गई है। जिसे वे और कम करना चाहते हैं, परन्तु इस नीति से मादा शिशुओं की हत्या में बृद्धि हुई जो वेद-शास्त्रों में एक निंदनीय कार्य माना है।

सम्पादकीय में कहा गया कि वहाँ परिवार में पिता, भाई और पुत्रों की सत्ता को महत्त्व माना गया। परिणामस्वरूप पुत्रों की कामना बलवती हुई और मादा शिशुओं की हत्या में निरन्तर वृद्धि हुई। साथ ही बुर्जुगों को अन्तिम समय में पुत्रों पर निर्भर रहना पड़ा। आज भी भारत सहित विश्व के विभिन्न देशों में आम राय प्रचलित है कि लड़कियाँ पराई होती हैं।

१० जून, १९९३ के टाइम्स ऑफ इण्डिया में प्रकाशित हुआ कि भारत में अवैधानिक गर्भपातः की संख्या वैधानिक गर्भपातों की संख्या की अपेक्षा कई गुणा है और अस्पतालों में भर्ती होने वाली ८० प्रतिशत महिलाओं का गर्भपात नीम हकीमों के हाथों होता है।

वर्तमान में गर्भ परीक्षण कराना कानूनन अपराध माना है फिर भी प्रतिदिन लगभग २०,००० अर्थात् बीस हजार गर्भ परीक्षण हो रहे हैं जिसमें १२,००० भ्रूण कन्याओं की हत्या हो रही है। ऐसे में केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें कहाँ-कहाँ तक कानून लगायेगी।

इस पुस्तक में खोजी गई एवं हिमालय योगियों द्वारा निर्देशित पद्धति जो अब तक रहस्यमय थी, माता-पिता को गर्भ धारण से पूर्व बच्चे के लिंग निर्धारण का चुनाव करने का अवसर प्रदान करती है। इसके द्वारा वे परिवार को पूर्ण नियोजित कर सकते हैं।

यह कहना अत्यन्त आसान है कि बेटा हो या बेटी बराबर है, सरकार ने जून २००२ के बाद तीसरी सन्तान होने पर कड़े दण्ड का प्रावधान रखा फिर भी हजारों सरकारी दम्पत्ति जिनके दो कन्याएँ थी ने तीसरा पुत्र उत्पन्न किया।

जब बड़े-बड़े अर्थशास्त्री भी एक सन्तान पैदा होने पर परिवार नियोजन नहीं कर सके तो फिर भारत की ग्रामीण जनता से कैसे उम्मीद कर सकते हैं। मेरे स्वयं के बड़े भाई सन्तोष मोदी जो एम.काम. अर्थशास्त्र में १९८८ में पूरे विश्वविद्यालय में गोल्ड मेडल प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रहे, वह विवाह तक हजारों दम्पत्तियों को सलाह देते थे कि बस एक पुत्र हो गया, बहुत है। परन्तु स्वयं ने दो पुत्र उत्पन्न किये। तात्पर्य यह है कि जब स्वयं पर बात आती है तो व्यक्ति एक पुत्र और एक पुत्री चाहता ही है। और यही अर्थशास्त्री प्रथम दो कन्याओं को जन्म दे देते तो उनका अर्थशास्त्र पानी भरने चला जाता फिर तीसरे पुत्र उत्पन्न हेतु प्रयास करते ही करते। जो सत्य है वह सुनने में सभी को कड़वा लगता है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने तो रामचरितमानस में लंकाकाण्ड के ९० वें दोहे में चार पक्तियाँ लिखी हैं—

छ.— जनि जल्पना करि सुजसु नासहि नीति सुनहि करहि छमा।
संसार महँ पुरुष त्रिबिध पाटल रसाल पनस समा॥
एक सुमन प्रद एक सुमन फल एक फलहि केवल लागहि।
एक कहहिं कहहिं करहि अपर एक करहिं कहत न बागहि॥

प्रस्तुत छन्द में भगवान् श्रीराम रावण को कहते हैं—क्षमा करना, तुम्हें नीति सुनाता हूँ, सुनो! संसार में तीन प्रकार के पुरुष होते हैं—पाटल-गुलाब, रसाल-आम, पनस-कटहल। एक पाटल फूल देते हैं, एक आम; फूल और फल दोनों देते हैं और एक कटहल में केवल फल ही लगते हैं। इसी प्रकार पुरुषों में एक कहते हैं करते नहीं, दूसरे कहते हैं और करते भी हैं और एक तीसरे केवल करते हैं परन्तु वाणी से नहीं कहते।

"Pray excuse me and listen to a sound maxim. There are three types of men in this world-those resembling the rose, the mango and the bread tree respectively. The one gives flowers alone, the second flowers and fruit both and the third yield fruit alone. Even so the one talks the second talks as well as does while the third does but never goes about proclaiming it."

प्रस्तुत पुस्तक में पुत्र उत्पन्न करने हेतु मन्त्र, मणि, औषधि का वर्णन है तो पुत्री उत्पन्न करने हेतु भी मन्त्र, मणि, औषधि का वर्णन है।

विवाह के साथ ही इस पुस्तक को दहेज में देना माता-पिता का कर्त्तव्य

सर्वप्रथम विवाह और उसके बाद सन्तान की समस्या आज सर्वोपरि है। कन्या के विवाह की समस्या किसी त्रासदी से कम नहीं; कुण्डली का मिलान करते समय बहुत बार गुण मिलते ही नहीं है। कभी मिल जाते हैं तो गण महादोष या नाड़ीदोष में विवाह नहीं कर सकते, कहीं दहेज नहीं दे पाने की समस्या, तो कहीं कन्या की शिक्षा या उसकी असुन्दरता आड़े आ जाती है। कन्या का कद लम्बा नहीं होना या अधिक मोटा होना भी वैवाहिक समस्या के कारण हैं। कभी-कभी तो सम्पन्न घराने की सुन्दर कन्या भी मनचाहा वर प्राप्त करने में सफल नहीं होती है। कोई सफल हो जाती है तो विवाह के बाद सन्तान नहीं होने से दुःखी रहती है।

तात्पर्य यह है कि कन्या की शादी कर देना; यहीं तक माता-पिता के लिए बात खत्म नहीं होती, वास्तव में कन्या के अच्छे माता-पिता तो वे हैं जो कन्या को विवाह के साथ ही एक पुत्र एवं एक पुत्री पैदा करने का ज्ञान दे। विवाह के बाद सन्तान होना भी आवश्यक होता है। सन्तान नहीं होने पर समाज पुरुष को नपुंसक और स्त्री के लिए बांझ जैसे तीक्ष्ण एवं कटु शब्दों का प्रयोग करते हैं। विवाह के बाद सन्तान नहीं होना स्त्री के लिए बड़ा अपमानजनक माना जाता है। किसी वर या कन्या की जन्म-पत्रिका देखकर यह बताना कि दोनों के पुत्र या पुत्री सुख है या नहीं इस कार्य के लिए वैसे तो प्रत्येक की जन्मपत्रिका देखकर यह कहा जा सकता है कि पुत्र या पुत्री सुख कैसा है, किन्तु कई बार वर एवं कन्या की अलग-अलग जन्मपत्रियों में सन्तानसुख होने पर भी विवाह उपरान्त सन्तान नहीं होती या कन्या ही कन्या

होती है। यह स्थिति मधु और घृत के विशेष मात्रा में मिलान सरीखी होती है। दोनों अमृत तुल्य हैं लेकिन एक विशेष मात्रा में मिलने पर विष बन जाते हैं। प्रस्तुत पुस्तक ऐसी स्थितियों का बारीकी से विवेचन करती है अतः कन्या को विवाह के साथ दहेज में यह पुस्तक देना नहीं भूलें। पुस्तक का एक-एक अक्षर पढ़ने के बाद आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि यह पुस्तक प्रत्येक परिवार में एक पुत्र एवं एक पुत्री प्रदान कराने में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। केवल यह कहने से कि शक्कर मीठी है और नमक नमकीन है कार्य नहीं चलता है; हाथ कंगन को आरसी क्या? विवाह के अवसर पर अपनी पुत्री को यह पुस्तक देकर कह दें बेटी! इसे पूरा पढ़ने के बाद ही गृहस्थी में कदम रखना ताकि आजीवन सुखी रह सको।



सन्तान शब्द का स्पष्टीकरण एवं अर्थ

नारी का रंग, रूप, गोरापन और पुरुष का पुंसत्व ही दाम्पत्य जीवन की सफलता का आधार नहीं है। उनकी सफलता तो इस बात पर निर्भर करती है कि उन्होनें एक-दूसरे को जीवन के परम लक्ष्य को प्राप्त करने में कितना सांमजस्य रखा है। हिन्दुओं के प्रामाणिक ग्रन्थ वेदों में विवाह संस्कार, सोलह संस्कारों में से एक प्रकार का संस्कार है। इसका उद्देश्य केवल भोग भोगना नहीं अपितु सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाहन करते हुए सांस्कृतिक धरोहर की आनुवांशिक परम्परा को आगे बढ़ाना है। धर्म, अर्थ और काम इन तीनों पुरुषार्थो को साधते हुए मोक्ष प्राप्ति की तैयारी करना विवाह कहलाता है। यही कारण है कि नारी का रूप और पुरुष का पुंसत्व ही दाम्पत्य जीवन की सफलता का आधार नहीं हो सकता। विवाह संस्कार में एक मन्त्र का उच्चारण किया जाता है, जिसका आशय है दोनों के हृदय इस प्रकार से एक हो जायें जैसे दो पात्रों का जल मिलकर एक हो जाता है। उसे पुनः अलग-अलग नहीं किया जा सकता। विवाह की सफलता धनवान, भौतिक सुख सुविधाओं तथा केवल भोग पर निर्भर नहीं करती है। ऐसी दृष्टि ही महर्षि वशिष्ठ के ज्योतिष ज्ञान पर प्रश्न चिह्न लगा देती है। वे राम-सीता के हृदय की गहराई को नहीं समझ सके थे। शरीर से पृथक-पृथक रहने पर भी राम-सीता का एक होना ही विवाह की सफलता है। विवाह बन्धन का परिणाम सन्तान के रूप में दृष्टिगोचर होता है। सन्तान एक पवित्र बन्धन की भूमिका निभाती है। माता-पिता बनने के बाद पति-पत्नी का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। प्रेम और स्नेह का मिला-जुला रूप है--सन्तान अर्थात् पुत्र या पुत्री। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में यदि सन्तान को देखा जाये तो वह माता-पिता की विरासत को

आगे बढ़ाती है। सन्तान को समाज के अधिकांश लोगों ने सिर्फ पुत्र के अर्थ में देखा है। यह पुरुष प्रधान समाज की देन है, परन्तु क्या आपने कभी विचारा कि आपने जो सन्तान उत्पन्न की है वह किसी की कन्या से मिलकर की है और आपकी पत्नी जिसके साथ आप प्रतिदिन शयन करते हैं वह भी किसी माता-पिता की कन्या ही है जो आपकी कितनी सेवा कर रही है। अतः कन्या समाज में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है उसे कैसे लोग नकार सकते हैं।

सन्तान का अर्थ—स्त्री और पुरुष दोनों ही अकेले रहते हैं, तब तक अधूरे हैं जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है। पवित्र विवाह-बन्धन दोनों को पूर्णता प्रदान करता है लेकिन फिर भी दोनों के भीतर एक अभाव सा खटकता रहता है। सामाजिक ही नहीं व्यक्तिगत परिप्रेक्ष्य में भी पति-पत्नी दोनों संतति सुख पाना चाहते हैं और जब पहली बार पत्नी गर्भवती होती है तो दोनों को विवाह की सार्थकता का बोध होता है इसे अवर्णनीय कहा गया है। ऐसा सुखद अनुभव प्रेम के मूर्तिमान का प्रतीक है और जब वह सन्तान आज्ञाकारी होती है अर्थात् माता-पिता के हितों का ध्यान रखने वाली होती है तो उसे पूर्वजन्म के संचित पुण्यों का फल माना जाता है ऐसे माता-पिता धन्य हो जाते हैं। कहा भी है—

जननी जने तो भक्तजन कह दाता कह सूर।
नहीं तो रीझ बांझडी मती गवाये नूर॥

गोस्वामी जी रामचरितमानस में लिखते हैं—

सुनु जननी सोई सुत बड़भागी।
जो पितु मातु वचन अनुरागी॥

पुत्र जहाँ धार्मिक कृत्यों, कुल परम्परा को आगे बढ़ाने की विरासत का उत्तराधिकारी सिद्ध होता है, वहीं पुत्री संतुलित एवं सुगठित व्यक्तित्व से दोनों कुलों के यश में वृद्धि करती है।

卐 卐

प्रारब्ध में पुत्र लिखा ही नहीं है तब भी पृथ्वी के तीन अमृत से पुत्र प्राप्ति सम्भव

जन्मपत्रिका में पाँचवां भाव पुत्र का है। पंचमेश यदि निर्बल हो, पंचम भाव पर पापग्रहों की दृष्टि हो या पंचमेश पापग्रह के साथ बैठा हो, पंचम भाव में पापग्रह बैठे हों, सन्तानकारक ग्रह बृहस्पति कमजोर हो तब कन्या ही कन्या होती है। यदि जन्म-पत्रिका में पुत्र लिखा ही नहीं है फिर भी पृथ्वी पर स्थित तीन अमृत का उपयोग औषधि के रूप में करके पुत्र प्राप्त किया जा सकता है। जिन दम्पत्तियों के कन्या ही कन्या हो तो उन्हें एक बार पृथ्वी के अमृत सेवन कर पुत्र प्राप्ति का प्रयास अवश्य करना चाहिए। कहा भी है—

"...You may be disappointed if you fail but you are doomed if you don't try"

"...Nothing impossible in the world impossible is the word which is found in the dictionary of fool."

पृथ्वी के तीनों अमृतों के नाम निम्नानुसार हैं—

क. **अमृत जोहर सत**—पृथ्वी का पहला अमृत है।

ख. **हीरा भस्म**—पृथ्वी का दूसरा अमृत है।

ग. **सोना भस्म या स्वर्ण भस्म**—पृथ्वी का तीसरा अमृत है।

उक्त तीनों प्रकार के अमृत का विवरण आयुर्वेद संहिता में है। ये अमृत अत्यन्त उच्चकोटि के रसायन हैं तथा दुर्लभ हैं और अत्यन्त कीमती हैं। इन तीनों अमृतों को पुरुषों को विभिन्न प्रकार के आयुर्वेदिक वटियों के साथ तैयार कर सेवन करने से तीन माह बाद ही पुरुष पुत्र गर्भाधान के योग्य

हो जाता है।

उपर्युक्त अमृत से तैयार होने के बाद वटी का नाम है—

क. अमृत जोहरादि वटी

ख. हीराभस्मादि वटी

ग. स्वर्ण भस्म अवलेह

ये तीन अमृत पुरुष को शून्य से एक सौ प्रतिशत बना देते हैं और तीन माह के ही सेवन से पुरुष यदि ५० वर्ष की आयु का है तब भी ३० वर्ष जैसा शक्तिशाली सन्तानोत्त्पत्ति के सम्बन्ध में होकर पुत्र ही उत्पन्न करता है। पुत्र उत्पन्न करने के लिए पुरुष शक्ति का बलिष्ठ होना अनिवार्य है क्यों XY संयोग से पुत्र उत्पन्न होता है और Y इतना शक्तिशाली हो कि वह X से युद्ध करके विजयी हो जाये। यह गुण इन पृथ्वी के तीन अमृतों में है इसलिए ये तीन अमृत तीन माह तक सेवन करने के बाद योग नहीं है तब भी पुत्र प्राप्ति सम्भव है। अतः जिन पुरुषों के कन्या ही कन्या है उन्हें इनका सेवन अवश्य करना चाहिए क्योंकि भगवान् भरोसे बैठने से कुछ मिलने वाला नहीं है। गीता में भी कर्म को महत्वपूर्ण माना है—

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्"

卐 卐

पुत्र प्राप्ति हेतु विभिन्न प्रकार के मन्त्र

मन्त्र—निश्चित वर्णसमूह द्वारा उच्चारित ध्वनि को मन्त्र कहते हैं। संक्षेप में जो शब्द, पद समूह जिस-जिस देवता या शक्ति को प्रकट करता वह उस देवता या शक्ति का मन्त्र कहा जाता है।

जीवन के सभी सुखों में पुत्र सुख सबसे महत्त्वपूर्ण है यदि शरी बिल्कुल स्वस्थ है, किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं है, घर में सभी निरो और स्वस्थ हैं, आवश्यकता के अनुसार आय भी है, परन्तु यदि पुत्र नहीं तो उस व्यक्ति का जीवन दु:खों से घिर जाता है। जिस घर में, परिवार में वं वृद्धि करने वाला पुत्र नहीं हो, वहाँ सारे सुख बेकार लगते हैं, व्यर्थ लगते हैं व्यक्ति सदैव उदास रहता है। पति-पत्नी के प्रेम में कमी दृष्टिगोचर होती है पत्नी तो चिड़चिड़े स्वभाव की हो जाती है यह कटु सत्य है इसे स्वीकार ही होगा। बेटी बहुत अधिक पढ़कर पिता का काम कर सकती है लेकि वंश को आगे नहीं चला सकती है। अत: पुत्र हो और वह भी योग्य एवं श्रे संस्कार वाला हो तो ठीक वरना कपूत पुत्र को जन्म देकर क्या करना? रा मुकुन्द सन्तानहीन थे उन्होंने भगवान् शिव की कठोर तपस्या कर पुत्र मां तो भगवान् ने कहा तुम्हें योग्य एवं संस्कारी और तेजस्वी बालक चाहिए उसकी आयु केवल सोलह वर्ष होगी। यदि अयोग्य संस्कारहीन बाल चाहिए तो उसकी आयु सौ वर्ष होगी। राजा मुकुन्द ने सुयोग्य पुत्र की काम की तो परिणामस्वरूप उनके यहाँ सुन्दर तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ जिस नाम मार्कण्डेय रखा। आप भी अग्र वर्णित मन्त्र एवं अनुष्ठान द्वारा मार्कण्डे सरीखा पुत्र प्राप्त करें।

मन्त्रों में गजब की शक्ति होती है ये विधि के विधान को भी बदल दे

हैं। गोस्वामी जी ने रामचरितमानस में लिखा है—

मन्त्र महामणि विषय ब्यालके।
मेटत कठिन कुअंक भाल के॥

अर्थात् मन्त्र जप से मस्तक में लिखे कुअंक भी मिट जाते हैं और आसानी से पुत्र प्राप्ति होती है—

मन्त्र प्रयोग न. १

मन्त्र— ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पतेः।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥

मन्त्र जप में ताम्रपत्र पर सन्तान गोपाल यन्त्र प्रतिस्थापित कर यन्त्र के समक्ष नब्बे दिन में पति-पत्नी दोनों को मिलकर सवा लाख जप पूरा करना है। जप माला पर नहीं कर सकते हैं तो एक डायरी में नित्य होने वाले जप की संख्या लिखते रहें।

नब्बे दिन तक जप के दौरान पति-पत्नी दोनों को निम्न नियमों का पालन करना है—

अ. जप के प्रथम ३० दिनों तक दोनों को शरीर पर पीले वस्त्र का धारण करना अनिवार्य है। पुरुष अपने अण्डर-गारमेन्टस एवं धोती-कुर्ता पीला या केशरिया पहनकर बैठे तथा स्त्री भीतरी वस्त्र एवं ब्लाउज तथा साड़ी पीली पहने। स्त्रियों के लिए ऋतुकाल अवधि में जप एवं यन्त्र पूजन निषेद्ध है। अतः ऋतुकाल के दौरान पीले वस्त्र भी धारण नहीं करने हैं। उदाहरणार्थ १५ अगस्त से जप शुरू किये तो पुरुष को तो ३० दिन १३ सितम्बर को ही पूर्ण हो जायेंगे अर्थात् १५ अगस्त से १३ सितम्बर तक पीले वस्त्र पहनकर मन्त्र जपें। लेकिन स्त्री ने यदि १५ अगस्त से प्रारम्भ किया और २५ अगस्त से ऋतुकाल आ गया तो ७ दिन की अवधि २५ अगस्त से ३१ अगस्त तक जप नहीं करने एवं पीले वस्त्र भी नहीं पहनने हैं। फिर १ सितम्बर से २० सितम्बर तक जप करने एवं पीले वस्त्र पहनने हैं। अर्थात् पुरुष को ३० दिन १३ सितम्बर को होंगे परन्तु स्त्री को ३० दिन २० सितम्बर को होंगे। इस

प्रकार प्रथम ३० दिन तक पीले वस्त्र पहनकर जप करने हैं। ऋतुव
में पुरुष अकेला ही जप एवं यन्त्र पूजन करे।

ब. अगले तीस दिन पति-पत्नी को दोपहर के भोजन में ५० ग्राम प्र
ग्रास में पीली वस्तु ही खानी है। यथा—बूंदी का लड्डू, बेसन
चक्की, गुड़ आदि खायें और जप करने हैं।

स. अगले तीस दिन पति-पत्नी को पीली वस्तु दान करती है। वह
कणमात्र ही करे अर्थात् एक-एक केला ही दान करें।

इस प्रकार पुरुष का प्रयोग ९० दिन में एवं स्त्री का प्रयोग १११
में पूर्ण होगा। अब आपके ही शहर या गाँव के पण्डित को बुलाकर
लाख का दसवां भाग घी, कमलगट्टा, पीले पुष्पों से हवन करें। अर्थात् १२,५
मन्त्र ''ॐ क्लीं देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते। देहि में तनयं कृ
त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥'' द्वारा हवन आहुति देने पर अनुष्ठान पूर्ण म
जाता है। हवन के बाद पति-पत्नी खीर का प्रसाद लें। इसके साथ-स
शयन कक्ष में थोड़ा गोमूत्र छिड़ककर पवित्र कर लें तथा बाल कृष्ण का अ
सुन्दर नटखट बाल क्रीड़ा करते हुए चित्र दीवार पर टांग दें। चित्र इस प्रव
टांगे की सोते समय मुँह के सामने की दीवार पर टंगा चित्र दिखाई दे। अ
दोनों अपने-अपने धर्म का पालन करें, निश्चित पुत्र उत्पन्न होता है।
सुनिश्चित कर ले कि १२,५०० आहुति पूरी लगनी चाहिए। फिर हवन
भभूती भी प्रतिदिन पति-पत्नी दोनों लेते रहें। अवश्य ही पुत्र होगा।

मन्त्र प्रयोग न. २

हरिवंश पुराण में वर्णित सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करें। यह स्तो
मूल और हिन्दी अनुवाद सहित पाठकों की सुविधा हेतु प्रस्तुत है। संस्
का ज्ञान नहीं रखने वाले पाठक हिन्दी में इस स्तोत्र का पाठ कर सकते हैं

सन्तान गोपाल स्तोत्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।
श्रीशं कमल पत्राक्षं देवकी नन्दनं हरिम्॥
सूत सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम॥

पुत्र प्राप्ति के लिए मैं लक्ष्मीपति कमलनयन देवकीनन्दन मधुसूदन भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ।

नमाम्यहं वासुदेवं सुतसम्प्राप्तये हरिम्।
यशोदांकगतं बाल गोपालं नन्द नन्दनम्॥

पुत्र की प्राप्ति के लिए यशोदा के अंक में बाल गोपाल रूप में स्थित एवं नन्द को आनन्द देने वाले वासुदेव श्री हरि को मैं प्रणाम करता हूँ।

अस्माकं पुत्र लाभाय गोविन्दं मुनि वन्दितम्।
नमाम्यहं वासुदेवं देवकी नन्दनं सदा॥

पुत्र प्राप्ति के लिए माता देवकी एवं पिता वासुदेव के पुत्र, मुनियों द्वारा वन्दित किए हुए श्रीगोविन्द को मैं प्रणाम करता हूँ।

गोपालं डिम्भकं वन्दे कमलापतिमच्युतम्।
पुत्र सम्प्राप्तये कृष्णं नमामि यदुपङ्गवम्॥

पुत्र लाभ की कामना से साक्षात् लक्ष्मीपति, अच्युत होकर भी गोप बालक के रूप में गौओं की रक्षा में तत्पर यदुकुलतिलक भगवान् श्रीकृष्ण को प्रणाम करता हूँ।

पुत्र कामेष्टि फलदं कञ्जाक्षं कमला पतिम्।
देवकीनन्दनं वन्दे सुत सम्प्राप्तये मम्॥

पुत्र की कामना से पुत्रेष्टि यज्ञ के फलदाता कमलाक्ष, कमलापते, देवकीसुत को मैं प्रणाम करता हूँ।

पद्मापते पद्मनेत्र पद्मनाभं जनार्दन।
देहि मे तनयं श्रीश वासुदेव जगत्पते॥

हे कमलापते! हे कमलनयन!! हे कमलनाभ!!! हे जनार्दन! हे जगदीश्वर!! मुझे पुत्र प्रदान करे।

यशोदांक गतं बाल गोविन्द मुनि वन्दितम्।
अस्माकं पुत्र लाभाय नमामि श्रीशमच्युतम्॥

यशोदाः की गोदी में विराजमान रहने वाले अपनी महिमा से कभी अलग नहीं होने वाले, मुनियों द्वारा वन्दना किए हुए भगवान गोविन्द को मैं प्रणाम करता हूँ। मेरे इस कर्म के फल से मुझे पुत्र प्राप्त हो।

श्रीपते देव देवेश दीनार्ति हरणाच्युत।
गोविन्द मे सुतं देहि पमाति त्वां जनार्दन॥

हे श्रीपते, देवताओं के ईश्वर, दीनों के दुःख हरणे वाले अच्युत, गोविन्द भगवान् मुझे पुत्र प्रदान करें।

भक्त कामदं गोविन्द भक्तं रक्ष शुभप्रद।
देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणी वल्लभ प्रभो॥

हे भक्तों की कामना पूर्ण करने वाले गोविन्द मुझ भक्त की रक्षा कीजिए शुभद्! रुक्मिणी! हे प्रभो! हे श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र दीजिए।

रुक्मिणी नाथ सर्वेश देहि मे तनयं मुदा।
भक्त मन्दार पद्माक्ष त्वामहं शरणं गतः॥

हे रुक्मिणी पते! हे सर्वेश्वर! मुझे पुत्र दीजिए। भक्तों के अभीष्ट को पूर्ण करने में कल्पवृक्ष स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण मैं आपकी शरण में हूँ।

देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

हे देवकीनन्दन! हे गोविन्द! हे वासुदेव! हे जगन्नाथ! हे श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिए, मैं आपकी शरण में आया हूँ।

वासुदेव जगदवन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम्।
देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः॥

हे विश्ववंद्य! हे वासुदेव! हे श्रीपते! हे पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिए, मैं आपकी शरण में हूँ।

कमलाक्ष कमलानाथ परकारूपिकोत्तम।
देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः॥

हे कमलाक्ष! हे कमलापते! हे दयालुओं में सर्वश्रेष्ठ श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरण में आया हूँ, मुझे पुत्र दीजिए।

लक्ष्मीपते पद्मनाभ, मुकुन्द मुनि वन्दित।
देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः॥

हे लक्ष्मीपते, पद्मनाभ (नाभि में कमल होने से), मुकुन्द मुनिवन्दित हे श्रीकृष्ण में आपकी शरण में आया हूँ मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

कार्यकारण रूपाय वासुदेवाय ते सदा।
नमामि पुत्र लाभार्थ सुखदाय बुधाय ते॥

आप कार्य कारणरूप, सुखदाता एवं ज्ञानी हैं, पुत्र प्राप्ति हेतु मैं आप वासुदेव को सदैव प्रणाम करता हूँ।

राजीव नेत्र श्रीराम रावणारे हरे कवे।
तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे हरे॥

हे कमलनयन! हे रावणारे! हे हरे कवे! हे देवेश विष्णो! आपको प्रणाम है, मुझे पुत्र दीजिए।

अस्माकं पुत्र लाभाय भजामि त्वां जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव रमापते॥

हे विश्वेश्वर पुत्र प्राप्ति की कामना से मैं आपकी आराधना कर रहा हूँ। हे रमापते! हे वासुदेव! हे श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

श्रीमानिनी मानचोर गोपी वस्त्रापहारक।
देहि मे तनयं कृष्णं वासुदेव जगत्पते॥

हे मानिनी! राधा के मानभंजक, गोपियों के वस्त्र हरण करने वाले श्रीकृष्ण, हे वासुदेव, हे जगन्नाथ मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

अस्माकं पुत्र सम्प्राप्ति करूष्व यदुनन्दन।
रमापते वासुदेव मुकुन्द मुनिवन्दित॥

हे यदुनन्दन, हे रमापते, हे वासुदेव, हे मुकुन्द, हे मुनिवन्दित पुत्र प्राप्ति के लिए मैं आपका यह स्तोत्र पाठ कर रहा हूँ। मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

वासुदेव सुतं देहि तनयं देहि माधव।
पुत्र मे देहि श्रीकृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो॥

हे माधव, हे तनय, हे श्रीकृष्ण मुझे पुत्र प्रदान कीजिए। हे महाप्रभो मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

चन्द्र सूर्याक्ष गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव।
अस्माकं जन्यसत्पुत्रं देहि देव जगत्पते॥

हे चन्द्र, सूर्यरूपी नेत्रधारी गोविन्द, हे पद्मनयन, माधव, जगदीश्वर हमें भाग्यवान पुत्र दीजिए।

कारूण्य रूपं पद्माक्ष पद्मनाभ समर्चित।
देहि मे तनयं कृष्णं देवकी नन्दन॥

हे पद्मनाभ, हे विष्णुसम्मति देवकीपुत्र श्रीकृष्ण हमें पुत्र प्रदान कीजिए

देवकीसुत श्रीमान् वासुदेव जगत्पते।
समस्त काम फलप्रद देहि मे तनयं सदा॥

हे देवकीनन्दन, हे लक्ष्मीपते, हे जगत्पति वासुदेव, हे अभीष्ट फलदाता श्रीकृष्ण मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

भक्त मन्दार गम्भीर शंकराच्युत माधव।
देहि मे तनयं गोपालवत्सल श्रीपते॥

हे भक्तों की कामनापूर्ति हेतु कल्पवृक्ष स्वरूप, हे गम्भीर स्वभाव वाले अच्युत! हे मंगलकारी माधव, हे ग्वाल बालों पर स्नेह करने वाले, हे लक्ष्मीनाथ मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

श्रीपते वासुदेवेश देवकी प्रिय नन्दन।
भक्त मन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो।

हे श्रीपते, हे वासुदेव पुत्र, हे देवकीनन्दन ईश्वर, आप भक्तों के लिए कल्पवृक्ष हो, हे जगदीश्वर मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे।
वासुदेवेश सर्वज्ञ देहि मे तनयं प्रभो॥

हे जगन्नाथ, हे लक्ष्मीनाथ, हे दयानिधे, हे वासुदेव, ईश्वर एवं सर्वेश्वर प्रभो, सब कुछ जानने वाले, रमानाथ मुझे पुत्र प्रदान करें।

श्री नाथ पद्मपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः॥

हे कमलाथ, हे कमलनयन वासुदेव, हे जगत्पति श्रीकृष्ण मैं आपकी शरण में हूँ मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

दास मन्दार गोविन्द भक्त चिन्तामणे प्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

हे अपने सेवकों की कामना सिद्धि हेतु कल्पवृक्ष स्वरूप गोविन्द तथा भक्तों को इच्छा पूर्ति हेतु चिन्तामणि रूप श्रीकृष्ण मैं आपकी शरण में आया

हूँ मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः॥

हे पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, हे लक्ष्मीपति श्रीकृष्ण, हे महाप्रभो, मुझे पुत्र प्रदान कीजिए, मैं आपकी शरण में हूँ।

श्रीनाथ पद्मपत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन।
मत्पुत्रफल सिद्धयर्थ भजामि त्वां जनार्दन॥

हे कमलापते, कमललोचन, हे मधुसूदन गोविन्द, हे जनार्दन पुत्ररूपी फल की प्राप्ति के लिए मैं आपकी आराधना करता हूँ।

भवदीय पद्मा भोजे चिन्तयामि निरन्तरम्।
देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव॥

हे राघव! सीता जी के प्राणवल्लभ मैं आपके चरणारविन्दों की चिंता में लीन हूँ आप मुझे पुत्र दीजिए।

रास मत्काम्य वरद पुत्रोत्पत्ति फलप्रद।
देहि मे तनयं श्रीश कमलासन वंदित॥

अभिलाषापति वर और पुत्रोत्पत्ति फल देने वाले हे श्रीराम, ब्रह्माजी के द्वारा वन्दित हे श्रीपते! आप मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे।
भाग्यवत्पुत्र संतान दशरथात्मज श्रीपते॥

हे श्रीराम के छोटे अनुज लक्ष्मण, हे सीता जी के प्राणपते! हे दशरथ सुवन! हे रघुनन्दन श्रीराम, हे श्रीपते! आप मुझे भाग्यशाली पुत्र दीजिए।

देवकी गर्भसंजात यशोदाप्रिय नन्दन।
देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल माधव॥

देवकी के गर्भ से उत्पन्न होने वाले गोपाल! हे यशोदा के सुवन श्रीकृष्ण! हे माधव! हे राम मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

कृष्ण माधव गोविन्द वामनाच्युत शंकर।
देहि मे तनयं श्रीश गोप बालक नायक॥

हे माधव! हे गोविन्द! हे वामन! हे अच्युत! हे कल्याणकारी लक्ष्मीपते!

हे गोपुत्रों के अधिनायक! हे कृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

गोपबाल महाधन्य गोविन्दाच्युत माधव।
देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते॥

हे गोप कुमार! हे सर्वश्रेष्ठ एवं धन्य-धन्य! हे गोविन्द! हे अच्युत! माधव! हे वासुदेव! हे जगदीश्वर! हे श्रीकृष्ण आप मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

दिशतु दिशतु पुत्रं देवकी नन्दनोऽयं।
दिशतु दिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुण्य लाभम्।
दिशतु दिशतु श्रीशो राघवो रामचन्द्रो।
दिशतु दिशतु पुत्र वंश विस्तार हेतोः॥

हे देवकीनन्दन भगवान् मुझे अति शीघ्र भाग्यशाली एवं पुण्य कर्म करने वाला लाभकारी पुत्र प्रदान करें। हे सीता वल्लभ! हे रघुकुल पुत्र श्रीराम! मुझे मेरे वंश वृद्धि के निमित्त पुत्र प्रदान कीजिए।

दीयतां वासुदेवेन तनयो मयिः सुतः।
कुमारो नन्दनः सीता नायकेन सदा मम॥

वासुदेव सुवन, श्रीकृष्ण सीतावल्लभ श्रीराम! मुझे आनन्द देने वाला प्रिय पुत्र प्रदान करें।

राम राघव गोविन्दं देवकीसुत माघव।
देहि मे तनयं श्रीश गोप बालक नायक॥

हे राम! हे राघव! हे गोविन्द! हे देवकीनन्दन! हे माघव! हे लक्ष्मी नाथ! हे गोप बालकों के नायक श्रीकृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान करिये।

वैश विस्तारकं पुत्र देहि मे मधुसूदन।
सुतं देहि सुतं देहि त्वामस्मि शरणं गते॥

हे मधुसूदन! मुझे मेरे वंश का विस्तारक पुत्र प्रदान करिये, मुझे पुत्र दीजिये मैं आपकी शरण में आया हूँ।

पुत्रसम्पत्पदातातं गोविन्द देव पूजितम्।
वन्दामहे सदा कृष्णं पुत्र लाभ प्रदायिनम्॥

पुत्र तथा सम्पत्ति को देने वाले, पुत्र लाभ प्रदान कराने वाले और देवताओं द्वारा पूजित गोविन्द श्रीकृष्ण का हम सदैव वन्दन करते हैं।

करुण्यनिधये गोपी वल्लभाय मुरारये।
नमस्ते पुत्र लाभार्थ देहि मे तनय विभो॥

हे प्रभो, आप करूणा के निधि अर्थात् दया की खान हैं, गोपियों के प्राणवल्लभ एवं मुर नामक दैत्य के शत्रु हैं। आपको पुत्र लाभ के निमित्त मेरा प्रणाम है। आप मुझे पुत्र दीजिए।

नमस्तस्यै रमेशाय रुक्मिणी वल्लभायं ते।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालक नायक॥

हे लक्ष्मीपते! हे रुक्मिणी के प्राणनाथ! हे भगवान् श्रीकृष्ण! आपको नमस्कार है। हे गोप बालकों के नायक श्रीपते! मुझे पुत्र प्रदान कीजिए।

नमस्ते वासुदेव नित्य श्री कामुकाय च।
पुत्रदाय च सर्पेन्द्रशायिन रंगशायिने॥

सदैव लक्ष्मी जी की इच्छा रखने वाले आप वासुदेव को मैं प्रणाम करता हूँ। आप पुत्र प्रदान करने वाले एवं सर्पेन्द्र शेष की शय्या पर शयन करते हैं। आप शेषशायी भगवान् को मेरा प्रणाम है।

रंगशायिन रमानाथ मंगलप्रद माधव।
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालक नायक॥

हे रंगाशायी रमापते! हे मंगल के देने वाले माधव! हे गोप बालकों के नायक! हे लक्ष्मी नाथ! आप मुझे पुत्र दीजिए।

दासाय मे सुतं देहि दीनमन्दार राघव।
सुतं देहि सुतं देहि पुत्र देहि रमापते॥

हे दीनों के कल्पवृक्ष! हे राघव! मुझ दास को पुत्र प्रदान कीजिए। हे रमापते मुझे पुत्र प्रदान कीजिए। मुझे पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए।

यशोदा तनयाभीष्ट पुत्र दानातः सदाः।
देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः॥

हे यशोदानन्दन, हे मनोभिलाषित पुत्र प्रदान करने में तत्पर श्रीकृष्ण! मैं आपकी शरण में आया हूँ। मुझे पुत्र प्रदान करिये।

मदिष्ट देव गोविन्द वासुदेव जनार्दन।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरण गतः॥

हे मेरे इष्टदेव गोविन्द! हे वासुदेव! हे जनार्दन श्री कृष्ण! मुझे पुत्र प्रदान करिये। मैं आपकी शरण में आया हूँ।

नीतिमान् धनवान पुत्रो विद्यावश्च प्रदायते।
भगवस्त्वत्कृपायाश्च वासुदेवेन्द्र पूजित॥

हे भगवान् हे इन्द्र द्वारा पूजित वासुदेव! आपकी कृपा से नीतिवान, धनवान और विद्यावान पुत्र उत्पन्न होता है।

यः पठेत् पुत्र स्तोत्रं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत।
श्री वासुदेव कथितं स्तोत्र रत्नं सुखायचः॥

श्री वासुदेव कथित इस पुत्र स्तोत्र का जो पाठ करता है वह श्रेष्ठ पुत्र युक्त होता है। यह स्तोत्र रत्न सुख प्राप्त कराने वाला भी है।

काले पठेन्तित्यं पुत्रलाभ धनश्रियम।
ऐश्वर्य राज सम्पन्न सद्योयाति न संशय॥

इसका प्रतिदिन पाठ करने वाले को तत्काल पुत्र लाभ होता है और शीघ्र ही धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य एवं राज से सम्पन्न होता है। इसमें सन्देह नहीं है।

इस प्रकार सन्तान गोपाल स्तोत्र का नित्य एक बार पाठ पति-पत्नी करें तथा पति बलवर्धक औषधि, ताकत खीर का सेवन करें। एक वर्ष में पुत्र प्राप्ति निश्चित रूप से होती है।

मन्त्र प्रयोग न. ३

पुत्र प्राप्ति का मानस सिद्ध मन्त्र

प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान॥

—रामचरित मानस (बालकाण्ड दो. २००)

मन्त्र अर्थ—प्रेम में मगन कौशल्या जी रात और दिन का बीतना नहीं जानती थी। पुत्र के स्नेहवश माता उनके बाल चरित्रों का गान किया करती!

मन्त्र की प्रयोग विधि और लाभ

किसी भी सोमवार के दिन रात्रि १० बजे से १२ बजे तक मन्त्र की

१०८ आहुति खीरान या मावा मिश्री से देकर मन्त्र सिद्ध कर लें फिर प्रतिदिन श्रद्धानुसार जितना जप सकें जपें। पुत्र लाभ होगा।

मन्त्र प्रयोग न. ४

पुत्र की प्राप्ति हेतु प्रतिदिन श्रीराम जन्म की स्तुति गायें और रामनवमी के दिन श्रीराम जन्म उत्सव मनायें। इस स्तुति को किसी भी दिन से गाना प्रारम्भ कर सकते हैं बस नियम यही लेना है कि हे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम प्रभु मेरा इस धरती पर मान-सम्मान बचा लेना, मुझे पुत्र प्रदान कर दो ताकि मैं सम्मान से जी सकूँ। ऐसी मन में भावना करके प्रतिदिन यह स्तुति गाकर ही भोजन करने का संकल्प लें, अति शीघ्र आपकी गोद प्रभु श्रीराम भर देंगे।

श्रीराम जन्म स्तुति

दोहा— सुर समूह बिनती करि पहुँचे निजनिज धाम।
जग निवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥

देवताओं के समूह विनती करके अपने-अपने लोक में जा पहुँचे। समस्त लोकों को शान्ति देने वाले, जगदाधार प्रभु प्रकट हुए।

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभा सिंधु खरारी॥

दीनों पर दया करने वाले कौशल्या जी के हितकारी कृपालु प्रभु प्रकट हुए। मुनियों के मन को हरने वाले उनके अद्भुत रूप का विचार करके माता हर्ष से भर गयी। नेत्रों को आनन्द देने वाला, मेघ के समान श्याम शरीर था; चारों भुजाओं में अपने (खास) आयुध (धारण किए हुए) थे; (दिव्य) आभूषण और वनमाला पहने थे; बड़े-बड़े नेत्र थे। इस प्रकार शोभा के समुद्र तथा खर राक्षस को मारने वाले भगवान् प्रकट हुए।

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥

करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥

दोनों हाथ जोड़कर माता कहने लगी—हे अनन्त! मैं किस प्रकार तुम्हारी स्तुति करूँ! वेद और पुराण तुमको, माया, गुण और ज्ञान से परे और परिमाण रहित बतलाते हैं। श्रुतियाँ और सन्तजन दया और सुख का समुद्र, सब गुणों का धाम कहकर जिनका गान करते हैं, वहीं भक्तों पर प्रेम करने वाले लक्ष्मीपति भगवान् मेरे कल्याण के लिए प्रकट हुए हैं।

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥

वेद कहते हैं कि तुम्हारे प्रत्येक रोम में माया के रचे हुए अनेकों ब्रह्माण्डों में समूह (भरे) हैं। वे तुम मेरे गर्भ में रहे—इस हँसी की बात को सुन कर धीर (विवेकी) पुरुषों की बुद्धि भी स्थिर नहीं रहती (विचलित हो जाती है)। जब माता को ज्ञान उत्पन्न हुआ, तब प्रभु मुस्कराये। वे बहुत प्रकार के चरित्र करना चाहते हैं। अतः उन्होंने पूर्व जन्म की सुन्दर कथा कहकर माता को समझाया, जिससे उन्हें पुत्र का (वात्सल्य) प्रेम प्राप्त हो (भगवान् के प्रति पुत्रभाव हो जाए)।

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

माता की वह बुद्धि बदल गयी, तब वह फिर बोली—हे तात! यह रूप छोड़कर अत्यन्त प्रिय बाललीला करो, (मेरे लिए) यह सुख परम अनुपम होगा। (माता का) यह वचन सुनकर देवताओं के स्वामी सुजान भगवान् ने बालक (रूप) होकर रोना शुरू कर दिया! (तुलसीदास जी कहते हैं—) जो इस चरित्र का गान करते हैं, वे श्री हरि का पद पाते हैं और (फिर) संसार रूपी कूप में नहीं गिरते।

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥

ब्राह्मण, गौ, देवता और सन्तों के लिए भगवान् ने मनुष्य का अवतार लिया। वे (अज्ञानमयी, मलिना) माया और उसके गुण (सत्, रज, तम) और (बाहरी तथा भीतरी) इन्द्रियों से परे हैं। उनका (दिव्य) शरीर अपनी इच्छा से ही बना है (किसी कर्म बन्धन से परवश होकर त्रिगुणात्मक भौतिक पदार्थो के द्वारा नहीं)।

प्रयोग विधि एवं लाभ

इस राम जन्म की स्तुति को किसी भी सोमवार के दिन रात्रि १० बजे से हवन करके ११ या २१ बार पूरा पढ़ते हुए गौ घृत, खीरान, मिष्ठान्न से आहुति देने पर यह स्तुति सिद्ध हो जाती है। सिद्ध होने पर प्रतिदिन पति-पत्नी नियम पूर्वक एक बार खाना खाने से पहले इस स्तुति का एक बार पाठ करें तथा हवन की भभूति पानी में डालकर प्रतिदिन पीते रहें जब तक कि पुत्र नहीं हो जाता है। यह भभूति पानी में डालकर गर्भाधान तक तो पति-पत्नी दोनों को पीनी है इसके पश्चात् ९ मास गर्भ अवधि में केवल पत्नी को ही पीनी है। निश्चित रूप से होने वाली सन्तान मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का अवतार ही होगी। सब धोखा दे सकते हैं मन्त्र नहीं; यह सदैव ध्यान रखें।

मन्त्र प्रयोग न. ५

भगवान् श्रीराम को पृथ्वी पर अवतरित कराने के लिए जो स्तुति देवताओं ने की वही स्तुति आप अपने लिए पुत्र जन्म हेतु करें तो निश्चित रूप से अवतारी पुत्र होगा।

श्रीराम की देवताओं द्वारा की गई स्तुति

छन्द—जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधु सुता प्रियकंता॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोइ॥

हे देवताओं के स्वामी, सेवकों को सुख देने वाले, शरणागत की रक्षा

करने वाले भगवान्! आपकी जय हो! जय हो!! हे गो-ब्राह्मणों का हित करने वाले, असुरों का विनाश करने वाले, समुद्र की कन्या (श्री लक्ष्मी जी) के प्रिय स्वामी! आपकी जय हो! हे देवता और पृथ्वी का पालन करने वाले आपकी लीला अद्‌भुत है, उसका भेद कोई नहीं जानता। ऐसे जो स्वभाव से ही कृपालु और दीनदयालु हैं, वे ही हम पर कृपा करें।

जय जय अबिनासी सब घट बासी ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं माया रहित मुकुंदा॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगत मोह मुनि बृंदा।
निसि बासर ध्यावहिं गुन गन गावहि जयति सच्चिदानंदा॥

हे अविनाशी, सबके हृदय में निवास करने वाले (अन्तर्यामी) सर्वव्यापक, परम आनन्दस्वरूप, अज्ञेय, इन्द्रियों से परे, पवित्र-चरित्र, माया से रहित मुकुन्द (मोक्षदाता)! आपकी जय हो! जय हो!! (इस लोक और परलोक के सब भोगों से) विरक्त तथा मोह से सर्वथा छूटे हुए (ज्ञानी) मुनिवृन्द भी अत्यन्त अनुरागी (प्रेमी) बनकर जिनका रात-दिन ध्यान करते हैं और जिनके गुणों के समूह का गान करते हैं, उन सच्चिदानन्द की जय हो।

जेहिं सृष्टि उपाई त्रिबिध बनाई संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी छाड़ि सयानी सरन सकल सुरजूथा॥

जिन्होंने बिना किसी दूसरे संगी अथवा सहायक के अकेले ही (या स्वयं अपने को त्रिगुणरूप—ब्रह्मा, विष्णु, शिवरूप—बनाकर अथवा बिना किसी उपादन कारण के अर्थात् स्वंयं ही सृष्टि का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण बनकर) तीन प्रकार की सृष्टि उत्पन्न की वे पापों का नाश करने वाले भगवान् हमारी सुधि ले। हम न भक्ति जानते हैं, न पूजा। जो संसार के (जन्म मृत्यु के) भय का नाश करने वाले, मुनियों के मन को आनन्द देने वाले और विपत्तियों के समूह को नष्ट करने वाले हैं। हम सब देवताओं के समूह मन, वचन और कर्म से चतुराई करने की बात छोड़कर उन (भगवान्) की शरण (आये) हैं।

सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्री भगवाना॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुख पुंजा।
मुनि सिद्ध सकलसुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा॥

सरस्वती, वेद, शेषजी और सम्पूर्ण ऋषि कोई भी जिनको नहीं जानते, जिन्हें दीन प्रिय हैं, ऐसा वेद पुकार कर कहते हैं, वे ही श्री भगवान् हम पर दया करें। हे संसाररूपी समुद्र के (मथने के) लिए मन्दाराचल रूप, सब प्रकार से सुन्दर, गुणों के धाम और सुखों की राशि नाथ! आपके चरण कमलों में मुनि, सिद्ध और सारे देवता भय से अत्यन्त व्याकुल होकर नमस्कार करते हैं।

जानि सभय सुर भूमि सुनि बचन समेत सनेह।
गगन गिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह॥

देवताओं और पृथ्वी को भयभीत जानकर और उनके स्नेहयुक्त वचन सुनकर शोक और संदेह को हरने वाली गम्भीर आकाशवाणी हुई—हे मुनि और देवताओं के स्वामियों! डरो मत! तुम्हारे लिए में दशरथ राजा के घर पर जन्म लूँगा।

इस प्रकार देवताओं की इस स्तुति को आप भी सिद्ध करके प्रतिदिन भोजन करने से पूर्व एक बार जपें। चाहे भोजन करना भूल जायें लेकिन स्तुति करना नहीं भूलें। ऐसा नियम बना लेंगे तो आपकी गोद सूनी रह ही नहीं सकती है। इस स्तुति की प्रयोग विधि एवं लाभ वही है जो राम-जन्म की स्तुति में उपर्युक्त प्रयोग न.४ में बताई गई है। विष्णु सहस्रनाम में शिवजी पार्वती को कहते हैं कि राम नाम विष्णु सहस्रनाम के तुल्य है। जब एक नाम एक हजार विष्णु के नामों के बराबर है तो इस स्तुति का कितना फल होगा। यह आप स्वयं निर्णय करें।

मन्त्र प्रयोग न. ६

पुत्र प्राप्ति हेतु मन्त्र

नन्दादि गोकुल त्राता दाता दारिद्रय भञ्जनः।
सर्वमंगल दाता च सर्वकाम प्रदायकः॥

प्रयोग विधि—कमल गट्टे की माला पर मन्त्र को १०,००० (द हजार) बार कल्पवृक्ष (कामनाओं की पूर्ति करने वाला वृक्ष) के नीचे ज करके सिद्ध कर लें, फिर यथाशक्ति जप करते रहें। पुत्र प्राप्ति होती है शास्त्र कहते हैं कि कल्पवृक्ष के नीचे जप एक लाख गुना फल देते हैं यानि दस हजार जप एक अरब जप के बराबर फल देंगे। इसके अतिरि कल्पवृक्ष पर कृष्ण ने लीलाएँ की हैं अतः यह त्वरित मनोकामना पू करने वाला वृक्ष है। अतः इस वृक्ष के नीचे दस हजार उक्त मन्त्र जप कर कल्पवृक्ष की १०८ बार परिक्रमा कर लें तथा कल्पवृक्ष से मांगे कि कामनापूर्ति करने वाले वृक्ष! मैं सब जगह से हार-थक कर आपकी शर में आया हूँ मुझे मेरे वंश वृद्धि हेतु पुत्र रत्न प्रदान करो ताकि मैं समाज के समक्ष सिर ऊँचा रख सकूँ। पुत्र नहीं होने से मेरी चहुँ ओर सामाजि निन्दा हो रही है। अतः मुझे पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए, मैं आपक शरण में हूँ। पुत्र होने पर मैं मेरी पत्नी एवं पुत्र तीनों हमारे सिर के सभ केश आपको अर्पण करके जायेंगे। ऐसी प्रार्थना कर पति-पत्नी अपने ध का पालन करें, पुत्र-प्राप्ति होगी।

मन्त्र प्रयोग न. ७

गोपाल सहस्रनाम के १,००० पाठ करने से पुत्र रत्न प्राप्त होता है।

सम्मोहन तन्त्र के पार्वतीश्वर सम्वाद नामक खण्ड में गोपाल सहस्रना के बारे में लिखा है कि गोपाल सहस्रनाम पाठ करना तो बहुत दूर है यदि गोपाल सहस्रनाम पुस्तक क्रय करके केवल उसका पूजन करते रहें तो भ पुत्र प्राप्त हो जाता है। सम्मोहन तन्त्र में स्पष्ट वर्णित है—जिस घर मे नित्य इस पुस्तक की पूजा होती है वहाँ महामारी, हैजा, शीतला आदि दुर्भिक्ष नहीं आते। सर्प, भूत, बेताल आदि पहुँचते ही नष्ट हो जाते हैं। गोपाल श्रीकृष्ण सदैव उस घर में निवास करते हैं, जहाँ इस पुनीत गोपाल सहस्रनाम पुस्तक का पूजन होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि बाल गोपाल आपके घर में निवास करते हैं तो निश्चित रूप से बाल गोपाल जैसा पुत्र उत्पन्न ही होगा। 'गोपाल सहस्रनाम' की यह पुस्तक आप ५० रुपए

मनीआर्डर से निम्न पते पर भेजकर मँगवा लें—

पता—रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड
हरिद्वार-२४९४०१

मन्त्र प्रयोग न. ८

मन्त्र—ॐ क्लीं कृष्णाय: नम: पुत्रं कुरू कुरू स्वाहा।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रात: उठते ही स्नानादि से निवृत्त होकर इस मन्त्र को जपना शुरू कर दें, उस दिन रात्रि १२ बजे तक कृष्ण जन्म होने तक निराहार रहकर इस मन्त्र को जपें। एक ही दिन में यह मन्त्र सिद्ध हो जायेगा। बस शर्त यह है कि उस दिन पूरे दिनभर मौन रहना है अर्थात् मन्त्रोच्चार के अतिरिक्त कुछ नहीं बोलना है। इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध कर पति १०८ बार पत्नी के कान में मन्त्र सुनाये और अपने धर्म का पालन करें। जब-जब भी पति-पत्नी पुत्र उत्पत्ति हेतु अपने धर्म का पालन रात्रि में करे उससे तुरन्त पूर्व पति का यह कर्त्तव्य है कि पत्नी को १०८ बार उक्त मन्त्र का श्रवण कराये बस, पुत्र प्राप्ति में कोई सन्देह ही नहीं रहेगा।

मन्त्र प्रयोग न. ९

मन्त्र—सर्वबाधा विनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वित:।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशय:॥

अर्थ—दुर्गा सप्तशती के बारहवें अध्याय के तेरहवें श्लोक में देवी ने स्वयं ने कहा है—शरत्काल में जो वार्षिक महापूजा की जाती है, उस अवसर पर जो मेरे इस माहात्म्य को भक्तिपूर्वक सुनेगा, वह मनुष्य मेरे प्रसाद से सब बाधाओं से मुक्त तथा धन, धान्य एवं पुत्र से सम्पन्न होगा,इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

प्रयोग विधि एवं लाभ

आश्विन मास की नवरात्रि में इस मन्त्र के ९ दिन में सवा लाख मन्त्र जप करने से सिद्ध हो जाता है। फिर जीवन में पुत्रबाधा रहती ही नहीं है।

मन्त्र प्रयोग न. १०

शरत्काल में आश्विन मास की नवरात्रि में माँ दुर्गा देवी की विशे महापूजा होती है।

मार्कण्डेय पुराण में वर्णित मूल दुर्गा सप्तशती पाठ अध्याय एक तेरह के द्वारा नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचण्डी हवन प्रयो आश्विन मास की नवरात्रि में करें तो अगले वर्ष नवरात्रि आने से पूर्व आपव गोद भरी हुई मिलेगी। यह प्रयोग कई व्यक्तियों ने किया है।

इसमें १,००० कमल पुष्पों से हवन करा दिया जाये तो बस पुत्र प्राप्ति अति शीघ्र हुई मान लें। इसे सहस्र कमल हवन को महामनोकामना पूर्ति कहते हैं। यह तो विद्वान पण्डितों से ही कराना चाहिए। यदि आप सामर्थ्य हैं तब अवश्य ही पुत्र कामेष्टि यज्ञ कराना चाहिए। इस यज्ञ से प्रारब्ध में पुत्र नहीं लिखा है तब भी होगा, ऐसा शास्त्रों में प्रमाण है।

मन्त्र प्रयोग न. ११

माँ लक्ष्मी के उपासक विष्णु पत्नी लक्ष्मी की आराधना करके भी पुत्र प्राप्ति कर सकते हैं। अष्ट लक्ष्मी में 'सन्तान लक्ष्मी' पुत्र प्रदान करने वाली होती है। श्री सूक्तम्, लक्ष्मी सूक्तम्, देवराज इन्द्र कृत लक्ष्मी स्तोत्र, महालक्ष्म्य अष्टक, कनकधारा स्तोत्र किसी भी स्तोत्र से आप पूर्ण आस्था से उपासना करके पुत्र प्राप्त कर सकते हैं। प्रत्येक स्तोत्र से पुत्र प्राप्ति कैसे होती है उन स्तोत्रों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है—

श्री सूक्तम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गाभश्वं पुरुषानहम्॥
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्॥

कां सोस्मितां हिरण्य प्राकारामार्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम॥
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे॥
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथबिल्वः।
तस्य फलानि तपसानुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः॥
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे॥
क्षुत्पि पा सामलां ज्येष्ठाम लक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात॥
गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्॥
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यम शीमहि।
पशूनां रूप मन्तस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः॥
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्म मालिनीम्।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस में गृहे।
नि च देवी मातरं श्रियं वासय मे कुले॥
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मी जातवेदो म आ वह॥
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आ वह॥
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्॥
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूंक्तं पञ्चदशर्चं च श्री कामः सततं जपेत्॥
पद्मानने पद्मविपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि।
विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पाद पद्मं मयि सनिधत्सव॥

पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षि पद्म सम्भवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम्॥
अश्वदायि गोदायि धनदायि महा धने।
धनं मे जुषतां देवि सर्व कामांश्च देहि मे॥
पुत्र पौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वाश्वतरी रथम्।
प्रजानां भवसि माता आयुष्मन्तं करोतु मे॥
धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः।
धनमिन्द्रो बृहस्पितिर्वरूणो धनमश्विना॥
वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः॥
न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो ना शुभा मतिः।
भवन्ति कृत पुण्यानां भक्त्यां श्रीसूक्त जापिनाम्॥
सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्य शोभे।
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवन भूति करि प्रसीद मह्यम्॥
विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
लक्ष्मीं प्रिय सखीं भूमिं नमाम्यच्युत वल्लभाम्॥
महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥
आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मताः॥
ऋणरोगादि दारिद्रय पापक्षुदपमृत्यवः।
भय शोक मनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा॥
श्री वर्चस्वमायुष्य मारोग्यमाविधच्छोभमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शत संवत्सरं दीर्घमायुः॥

प्रयोग विधि एवं लाभ

श्रीसूक्तम् के मन्त्रों से मावा-मिश्री, दूध, भात से हवन पुत्र कामना हेतु करें तो निश्चित पुत्र लाभ प्राप्त होता है। इस प्रयोग से एक लाभ है कि पुत्र

प्राप्त तो होगा ही साथ ही आपकी दरिद्रता का भी नाश हो जायेगा तो आप स्वयं विचारें कि एक ही तीर में दो शिकार तो यह कितने लाभ का सौदा है। मेरी स्वरचित पुस्तक "धनप्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान" रणधीर प्रकाशन रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार से मंगाकर पुत्र प्राप्ति हेतु माँ लक्ष्मी का व्रत शुरू कर दें। इस पुस्तक में व्रत विधान तो दिया ही है, साथ ही लक्ष्मी सूक्तम्, कनकधारा स्तोत्र एवं देवराज इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तोत्र भी दिया है। जब इन्द्र का इन्द्रासन छिन गया था तब इन्द्र ने लक्ष्मी की उपासना जिस स्तोत्र से की वही देवराज इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तोत्र है। इस स्तोत्र से इन्द्र को पुनः राज्य मिला। चूंकि आपका भी पुत्रसुख ईश्वर ने छीन रखा है अतः आप भी देवराज इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करें। यह 'धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान' नामक पुस्तक में वर्णित है। यहाँ पर लक्ष्मीसूक्तं, इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तोत्र, लक्ष्मीअष्टक, कनकधारा स्तोत्र नहीं दिए है क्योंकि पुस्तक के विस्तार का भय है। इस हेतु आप 'धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान' पुस्तक मंगाकर माँ लक्ष्मी के व्रत का चमत्कार देखें।

मन्त्र प्रयोग न. १२

भगवान श्री गणेश को प्रबल पुत्रदाता माना जाता है। अतः श्री गणेश जी के भक्तजन पुत्र प्राप्ति के लिए सन्तान गणपति स्तोत्र का पाठ करें—

सन्तान गणपति स्तोत्र

नमोऽस्तु गणनाथय सिद्धि बुद्धि युताय च।
सर्वप्रदाय देवाय पुत्र वृद्धि प्रदाय च॥
गुरूदराय गुरवे गोप्त्रे गुह्या सिताय ते।
गोप्याय गोपिता शेषभुवनाय चिदात्मने॥
विश्व मूलाय भव्याय विश्व सृष्टि कराय ते।
नमो नमस्ते सत्याय सत्य पूर्णाय शुण्डिने॥
एक दन्ताय शुद्धाय सुमुखाय नमो नमः।
प्रपन्न जनपालाय प्रणतार्तिविनाशिने।
शरणं भव देवेश संतति सुदृढ़ां कुरू।

भविष्यन्ति च ये पुत्रा मत्कुले गणनायक ॥
ते सर्वे तव पूजार्थे निरताः स्युर्वरो मतः ।
पुत्रप्रदमिदं स्तोत्रं सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥

अर्थ—सिद्धि-बुद्धि सहित उन गणनाथ को नमस्कार है, जो पुत्र वृद्धि प्रदान करने वाले तथा सब कुछ देने वाले देवता हैं। जो भारी पेट वाले (लम्बोदर), गुरु (ज्ञानदाता) गोप्ता (रक्षक), गुह्य (मूढ़स्वरूप) तथा सब ओर से गौर हैं। जिनका स्वरूप और तत्व गोपनीय है तथा समस्त भुवनों के रक्षक हैं, उन चिदात्मा आप गणपति को नमस्कार है। जो विश्व के मूल कारण, कल्याण स्वरूप, संसार की सृष्टि करने वाले सत्यरूप तथा शुण्डाकारी हैं, उन आप गणेश्वर को बारम्बार नम्स्कार है। जिनके एक दाँत और सुन्दर मुख है, जो शरणागत, भक्तजनों के रक्षक तथा प्रणत जनों की पीड़ा का नाश करने वाले हैं, उन शुद्ध स्वरूप आप गणपति को बारम्बार नमस्कार है। देवेश्वर! आप मेरे लिए शरणदाता हो। मेरी सन्तान परम्परा को सुदृढ़ करें। गणनायक! मेरे कुल में जो पुत्र हो, वे सब आपकी पूजा के लिए सदा तत्पर हों। यह वर प्राप्त करना मुझे इष्ट है।

यह पुत्रदायक स्तोत्र समस्त सिद्धियों को देने वाला है।

प्रयोग विधि—किसी भी बुधवार के दिन गणेश जी की प्रतिमा के समक्ष एक बार स्तोत्र पाठ प्रारम्भ करके प्रतिदिन कम से कम एक बार इस स्तोत्र का पाठ करें। श्री गणेश जी पुत्र प्रदान करेंगे।

मन्त्र प्रयोग न. १३

गणेश जी देवताओं में सर्वप्रथम पूजनीय हैं। इसके पीछे अनेक पौराणिक कथाएँ मिलती हैं। कहीं शिवजी ने ऐसा वर दिया है तो कहीं विष्णु ने। पुराणों में भी गणेश जी को विघ्नविनाशक एवं मंगलदाता माना है। अब आपको विघ्न है पुत्र नहीं होने का, तो इस विघ्न का भी विनाश करके श्री गणपति जी आपको पुत्र प्रदान करेंगे यदि आप उनके बीज मन्त्र का जप करते हैं—

पुत्र प्राप्ति हेतु गणपति बीज मन्त्र

"ॐ गं गणपतये नमः।"

प्रयोग विधि—मन्त्र के सवालाख जप करके गणेश चतुर्थी के दिन ग्यारह छोटे-छोटे बच्चे (जो लड़के हों, लड़कियाँ नहीं) को भोजन प्रसाद कराने तथा श्रद्धानुसार बच्चे को टॉफी, चाकलेट अच्छी वाली बाँटे आपकी गोद गणेश जी भर देंगे।

मन्त्र प्रयोग न. १४

पुत्र प्राप्ति हेतु गणपति का मन्त्र—

वक्रतुण्ड महाकाय कोटि सूर्य समप्रभाः।
निर्विघ्न कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदाः॥

जप विधि—भगवान् श्री गणेश जी से प्रार्थना करें हे भगवान्! आपने मेरे सभी छोटे-बड़े विघ्नों से रक्षा की है अब आप मेरे को पुत्र प्रदान कीजिए ताकि मेरा सबसे बड़ा विघ्न दूर हो। ऐसी प्रार्थना करके इस मन्त्र के जप यथा शक्ति किसी भी बुधवार से प्रारम्भ कर के ९० दिन में सवालाख करें। जप पूर्ण होने पर दशांश हवन क़रायें और १३ बच्चों को भोजन कराकर मिष्ठान आदि वितरण करें। पुत्र कामना सिद्ध होगी।

मन्त्र प्रयोग न. १५

प्रस्तुत प्रयोग न. १५ उन दम्पत्तियों के लिए है जिनके इष्टदेव हनुमान जी हैं अर्थात् वे पति-पत्नी जो हनुमान जी की नित्य उपासना करते हैं परन्तु फिर भी उनके पुत्र रत्न नहीं है तो उन्हें हनुमान जी से ही पुत्र रत्न की प्राप्ति निम्न मन्त्र प्रयोग से मिलेगी।

मन्त्र—कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होई तात तुम्ह पाही॥

अर्थ—जगत् में ऐसा कौन सा कार्य है जो हे तात अर्थात् हनुमान जी आपसे नहीं हो सके।

प्रयोग विधि—मंगलवार के दिन पुत्र प्राप्ति की कामना रखने वाले

पिता हनुमान जी को सिन्दूर का चोला या वागा चढ़ाकर इस मन्त्र के १०,००० जप उसी मंगलवार के दिन पूरा करें। इस प्रकार यह मन्त्र सिद्ध हो जाता है। मन्त्र को प्रतिदिन हनुमान जी के समक्ष जपते रहें। इस प्रकार इस मन्त्र से हनुमान जी को अपना कार्य कराने के लिए प्रेरित किया जाता है।

मन्त्र जप से पूर्व संकल्प—यह मन्त्र जपने से पूर्व हनुमान जी से निवेदन करे कि हे हनुमान जी! इस चराचर जगत में आपके लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं है जब आप एक दिन-रात में द्रोणाचल पर्वत को पूरा उठाकर लक्ष्मण को प्राण दे सकते हैं। विशाल खारे समुद्र को लाँघकर सीता का पता लगा सकते हैं, विशाल सूर्य को मुँह में ले सकते हैं, पूरी लंका को जला सकते हैं, फिर मेरा कार्य तो आपके लिए बहुत छोटा है; मुझे तो पुत्र देना आपके बांये हाथ का खेल है। अतः हनुमत्प्रभु मुझे पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए, मैं आपकी प्रतिदिन पूजा करता हूँ तथा आप ही की शरण में हूँ। हे हनुमान! मैं आपके सिवाय किसी भी देवी-देवता को नहीं जानता हूँ; मुझे पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए, पुत्र दीजिए ऐसा बोलकर फिर मन्त्र पाठ करें—

कवन सो काज कठिन जग माहीं।
जो नहिं होई तात तुम्ह पाहीं॥

Meaning–"Dear Child! What undertaking in this world is too difficult for you to accomplish. It is for the service of Sri Rama that you have come down upon earth."

मन्त्र प्रयोग न. १६

प्रस्तुत प्रयोग न. १६ उन दम्पत्तियों के लिए है जिनके इष्टदेव भगवान् शिव हैं। अर्थात् वे पति-पत्नी जो भगवान् शिव की नित्य उपासना करते हैं परन्तु फिर भी उनकी गोद सूनी है अर्थात् पुत्र रत्न नहीं है उन्हें शिवजी से पुत्र रत्न की प्राप्ति निम्न प्रकार से होगी—भगवान शिव का रुद्राष्टाध्यायी से सहस्रधारा अभिषेक करके पुत्र प्राप्ति की कामना अत्यन्त तीव्र फलदायी है। भगवान् शिव की स्तुति तथा अभिषेक करने के हजारों लाखों पूजन विधान हैं लेकिन रुद्राष्टाध्यायी द्वारा भगवान् शिव का सहस्रधारा अभिषेक अत्यन्त

महत्त्वपूर्ण माना जाता है। विदित हो कि रुद्राभिषेक प्रत्येक गाँव-शहर में कोई भी कर्मकाण्डी पण्डित करा देगा। रुद्राष्टाध्यायी अभिषेक से मनुष्य तात्कालिक रूप से विपत्तियों, कष्टों एवं परेशानियों से मुक्ति पाकर पुत्र प्राप्त करने में सफल होता है। 'रुद्राष्टाध्यायी' का वर्णन 'यजुर्वेद' में विस्तार पूर्वक किया गया है। इसमें सभी पूजन, सर्वमनोकामना पूर्ति पूजन आदि सम्मिलित कर कुल १७८ श्लोकों में रुद्री के आठ अध्याय बनाए गए हैं। प्रथम अध्याय में १० श्लोक, द्वितीय अध्याय में २२ श्लोक, तृतीय अध्याय में १७ श्लोक, चतुर्थ अध्याय में १७ श्लोक तथा पंचम अध्याय (जिसके द्वारा विशेष रूप से शिव अभिषेक होता है) में ६६ श्लोक हैं। नमक-चमक रुद्राभिषेक में पंचम अध्याय का ग्यारह बार पाठ होता है। षष्ठम् अध्याय में ८ श्लोक, सप्तम अध्याय में ७ श्लोक तथा अष्टम अध्याय में २९ श्लोकों को समाविष्ट किया है। इस प्रकार रुद्री के कुल आठ अध्यायों के १७६ श्लोकों द्वारा शिवपूजन अर्थात् रुद्राभिषेक को उत्तम से भी उत्तम माना गया है। रुद्री में आठ अध्याय होने से इसे रुद्राष्टाध्यायी कहते हैं।

इसके अतिरिक्त शान्ति मन्त्र में २४ श्लोक एवं स्वस्ति मन्त्र में १४ श्लोक हैं। इनका प्रयोग रुद्राभिषेक के बाद ग्रह शान्ति, अनिष्ट निवारण, घर में कोई कमी (पुत्र रत्न) की पूर्ति के लिए किया जाता है। सहस्रधारा से रुद्राभिषिक्त जल को एकत्र कर लें तथा थोड़ा-थोड़ा प्रतिदिन पति-पत्नी पीते रहें।

सहस्रधारा अभिषेक कैसे—एक ताँबे के घड़े में १,१०१ (ग्यारह सौ एक) छिद्र नीचे की ओर कराकर उसे शिवलिंग के ऊपर स्टैण्ड पर रख दें। फिर घड़े में पानी डालते जायें और पण्डित रूद्री पाठ का उच्चारण करता रहे। आपको तो केवल घड़े में पानी डालते रहना है और शिवजी पर चढ़ा हुआ जल जितना एकत्र कर सकें करते रहना है।

१,१०१ (ग्यारह सौ एक) छिद्र वाले घड़े में कम से कम १,००० (एक हजार) अर्थात् सहस्रधारा तो १०१ छिद्र बन्द होने पर भी हर समय निकलेगी। इस प्रकार पुत्र प्राप्ति हेतु भगवान शिवजी का एक बार सहस्र धारा अभिषेक कर लें। ऐसा करने से दम्पत्ति प्रारब्ध के समस्त पापों, दुःखों, आपदाओं तथा परेशानियों से मुक्त होकर पुत्र रत्न प्राप्त करने का हकदार

बन जाता है और उसे महान पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

नोट—भारत के गाँव-गाँव और चप्पे-चप्पे में एक न एक शिव मन्दिर अवश्य मिल जाएगा। इसका कारण यह है कि शिव भक्तों की संख्या अनन्त है। भगवान् शिव को प्रसन्न किए बिना कल्याण सम्भव नहीं है। भले ही पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पत्ति के इष्टदेव भगवान् विष्णु, भगवान् श्रीराम, भगवान् कृष्ण, या जगत्पिता ब्रह्मा ही क्यों न हों। इन सभी देवताओं की उपासना के लिए भी भगवान् शिव का पूजन स्मरण आवश्यक है। लोक परलोक में सर्वत्र सफलता प्राप्त करने का एकमात्र उपाय यह है कि एक लोटा जल भगवान् शिव पर चढ़ायें। यदि आप विधिवत रुद्राभिषेक करा सकें तो पुत्र प्राप्ति हेतु श्रेष्ठ प्रयोग है क्योंकि शास्त्रों में कहा गया है कि शिव को प्रसन्न करने के लिए रुद्राभिषेक से बढ़कर कोई अन्य पूजन नहीं है।

पुत्र प्राप्ति हेतु रुद्राभिषेक श्रेष्ठ प्रयोग

रुद्राष्टाध्यायी द्वारा रुद्राभिषेक करने से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है। रोगदोष से मुक्ति मिलती है। दुनिया की कोई भी ऐसी चीज नहीं है जिसे रुद्राभिषेक द्वारा प्राप्त नहीं किया जा सके। तो पुत्र प्राप्त करना तो बहुत छोटा काम है। दुर्लभ से दुर्लभ और दुर्गम से दुर्गम वस्तु आप मात्र एक श्रावण मास में नमक-चमक रुद्राभिषेक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। सभी मन्त्र धोखा दे सकते हैं, परन्तु रुद्राभिषेक नहीं। यह तत्काल मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला है। सन्तान गोपाल स्तोत्र, सन्तान गोपाल मन्त्र जप, हरिवंश पुराण कथा श्रवण अथवा अध्ययन आदि कई ऐसे प्रयोग आपको बताये गए हैं, जिनके द्वारा मनुष्य पुत्र प्राप्त कर सकता है।

ऐसी स्थिति में रुद्राभिषेक द्वारा पुत्र-रत्न प्राप्त कर सकते हैं। राजा मुकुन्द ने १,००० रुद्राभिषेक करके मार्कण्डेय ऋषि जैसा दिव्य पुत्र प्राप्त किया था।

भगवान् शिव, महाकाल या महामृत्युंजय देव के रोगनाशक भी कई प्रयोग हैं, ये आप मेरी स्वयं लिखित पुस्तक ''रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान'' में विस्तृत रूप से अध्ययन हेतु प्राप्त कर सकते हैं। यह पुस्तक आप **रणधीर प्रकाशन**, रेलवे रोड, हरिद्वार से मँगवायें। यह पुस्तक दान करने से भी

आपका रोगनाश हो सकता है।

मन्त्र प्रयोग न. १७

भगवान् कृष्ण की छोटी सी मूर्ति चाँदी या सोने की अत्यन्त सूक्ष्म बनाकर उस पर पुरुष सूक्तम् से पंचामृत द्वारा ११ बार अभिषेक करें और पंचामृत प्रसाद पति-पत्नी दोनों पी जायें। ११ बार अभिषेक अर्थात् पुरुष सूक्तम् मन्त्र का उच्चारण ११ बार करना है तब तक पंचामृत चढ़ाते रहना है। पंचामृत—घी, शहद, शक्कर, दूध, दही को मिलाने से बनता है।

पुरुष सूक्तम्

सहस्रशीर्षा पुरुष सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमि सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ दशाङ्गुलम्॥

समष्टि दृष्टि से व्याप्त परमात्मा के हजारों सिर, हजारों आँखें और सहस्रों पैर हैं। इस प्रकार अनन्त सिर, नेत्र, पैर एवं इन्द्रियों से मिलकर वह परमात्मा देह में नाभि से दश अंगुल जाकर सभी जीवों के हृदय में रहता है।

पुरुष एवेद सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्व स्येशानो यदन्नेनाति रोहति॥

इस जगत में वर्तमान में जो हो रहा है, भूत में जो हुआ तथा भविष्य में जो कुछ भी होने वाला है, वह विराट पुरुष का ही अवयव है। प्रत्येक काल में जीव देहधारी होकर उसी के अंशरूप से रहते हैं। वही परमात्मा जीव रूप से पूर्व कर्मवश जन्म-मृत्यु के चक्कर में पड़कर भी अजर-अमर और अजन्मा है।

एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतं दिवि॥

भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल से सम्बन्धित जो सम्पूर्ण संसार दिखाई पड़ता है; वह इस पुरुष का स्वरूप नहीं अपितु विभूति अर्थात् महिमा मात्र है। यह दिखाई पड़ने वाला जगत तो मात्र उसका चौथा भाग है। तीन पाद ऋग्यजुः, साम अथवा भूर्भुवः स्वः से तो वह अमृतमय परमात्मा स्वतः प्रकाशित होता है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्सा शनानशने अभि॥

भूर्भुवः स्ववः से भी ऊपर संसार से परे रहने वाला वह विराट पुरु अज्ञानमूलक जगत से अलग निर्विकार ब्रह्मरूप है। उस ब्रह्म के लेशमा माया से यह संसार बनता रहता है और लीन हो जाता है। वही पुरुष अने रूपों वाला होकर अनेक रूप से दृष्टिगोचर होता है।

ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमि मथो पुरः॥

वह अपनी माया से विराट् ब्रह्माण्ड को बनाकर उसी में पुनः जीव रूपेण हो गया और वही विराट् पुरुष देवता तिर्यक् पशु-पक्षी एक मनुष्यादि के रूप में देहाभिमानी होकर जीव नाम वाला हुआ। इसके बाद उसने पृथ्वी को उत्पन्न करके विश्व बनाया।

तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुतः सम्भृंत पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायत्या नारण्या ग्राम्याश्च ये॥

उसके बाद उस पुरुषात्मा ने यज्ञ द्वारा दही मिश्रित घी पैदा किया। भोज्य पदार्थ पैदा करके वायु देवतात्मक इन्द्रियों की सृष्टि की। उसके अनन्तर ग्राम्य पशुओं को पैदा किया। इस प्रकार सृष्टि का विकास हुआ।

तस्माद्य ज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जिज्ञरे।
छन्दा सि जज्ञिरे तस्माद्य जुस्तस्माद जायत॥

उस सर्वहुत नाम यज्ञ के पश्चात् 'ऋग्वेद' और 'सामवेद' प्रकट हुए उसी के साथ उस यज्ञ से विभिन्न प्रकार के गायत्री आदि छन्द उत्पन्न हुए उसी से 'यजुर्वेद' प्रकट हुआ।

तस्मा दश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥

उसी यज्ञ पुरुष से अश्व उत्पन्न हुए। साथ ही दाँत वाले जीव भी उत्पन्न हुए। उसी से गायें और भेड़ बकरियाँ भी पैदा हुई।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥

सबसे पहले उत्पन्न हुए उस यज्ञ पुरुष को जो यज्ञ यूप से बंधा हुआ पशु के समान था। सृष्टि से पहले उत्पन्न हुए प्रजापति, साध्य देवता एवं मन्त्र द्रष्टा ऋषियों ने प्रौक्षणादि संस्कारों से कालानुसार मानस यज्ञ सम्पन्न किया अर्थात् उसने ज्ञान सम्पादन किया।

यत्पुरुषं व्ययधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमुरू पादा उच्येते॥

उस समय प्राणस्वरूप देवता तथा साध्यगण विराट् पुरुष को स्वसंकल्प से प्रकट होते देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। वे प्रसन्नतापूर्वक परमात्मा के अंगों का वर्णन करने लगे, इस विराट पुरुष का मुख क्या था, भुजा क्या थी, पेट और पैर क्या थे।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरू तदस्य यदवैश्यः पद्भ्या शुद्रो अजायत॥

उस विराट पुरुष का मुख ब्राह्मण हुआ, हाथ क्षत्रिय हुए, जंघा और पेट वैश्य हुआ तथा पैर शूद्र हुए अर्थात् मानसिक महायज्ञ के ये चारों मुख्य साधन हैं।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायतः।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥

उस विराट् पुरुष के मन से चन्द्रमा, आँखों से सूर्य, कानों से वायु (प्राण) और मुख से अग्नि देवता प्रकट हुए।

नाभ्यां आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां अकल्पयन्॥

विराट् परमात्मा की नाभि से आकाश, सिर से द्युलोक (स्वर्ग), कानों से दिशाएँ तथा पैरों से पृथ्वी उत्पन्न हुई॥

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धवि॥

सृष्टि काल में जब सबसे पहले देवताओं का शरीर उत्पन्न हुआ, तब उस परमात्मा ने बाह्य द्रव्यों के अभाव में मानसिक यज्ञ की कामना करके पुरुषाख्य हवि द्वारा उस मानसिक यज्ञ में हवन किया। उस यज्ञ का घृत वसन्त

ऋतु, समिधाएँ ग्रीष्म ऋतु और हव्य पदार्थ शरद ऋतु माने गए।

सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अब्धनन् पुरुषं पशुम्॥

उस मानसिक यज्ञ वेदी के गायत्री आदि सातों छन्द परिधि के रूप में थे। ऐष्टिक आवहनीय की तीन, उत्तर वेदी की तीन तथा आदित्य आदि मिलकर २१ समिधा, सात परिधियाँ और सप्त सागर-इन सबके रूप थे।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवा॥

प्राण स्वरूप उन देवताओं ने यज्ञों से उस विराट् परमात्मा रूपी यज्ञ पुरुष को प्रसन्न किया, क्योंकि वे ही साक्षात् धर्म स्वरूप है। इसलिए साधक स्वर्ग प्राप्ति के लिए यज्ञ करे, क्योंकि उसी पुरातन विराट् पुरुष की प्राप्ति के लिए सिद्ध, महात्मा एवं योगीजन सर्वदा प्रयत्नशील रहते हैं।

अदभ्यः सम्मृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मणः समवर्तमाग्रे।
तस्य त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्व माजानमग्रे॥

रस को धारण किए हुए सूर्य उदय होता है। वह रस जगन्निर्माणेच्छा पूर्वक काल का सर्वप्रथम 'प्रेमरस' कहलाया। काल के प्रसन्न होने से उत्तम फल देने वाला कर्मदेव उत्पन्न होता है। वही कर्मदेव सच्चा सृष्टिकर्त्ता होने से सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुआ। मानव सृष्टि से पूर्व ही सूर्य देवता उत्पन्न हुए थे। कर्मदेव से आजानदेव श्रेष्ठ हैं, जिनकी स्तुति पूर्वकल्प में सबसे पहले की गई।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्य वर्णं तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यः पन्था विद्यतेऽय नाय॥

मैं उस आदित्य स्वरूप को अच्छी तरह जानता हूँ जो अनुपम, अद्वितीय और अन्धकार तथा अज्ञानादि से परे है। उसको जानकर मृत्यु को जीत लिया जाता है। उसके अलावा मुक्ति का कोई दूसरा मार्ग नहीं है।

प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरजाय मानो बहुधा विजायते।
तस्य योनिं परिपश्यन्ति धीरा तस्मिन् हतस्क्षुर्भुवनानि विश्वा॥

वह विराट परमात्मा सभी जीवों के अन्दर-बाहर सर्वदा सर्वत्र रहते

हुए कार्य-कारण भाव से अनेक गर्भों में उत्पन्न होता है। धीर पुरुष उस परमात्मा को जानते हैं, देखते हैं और मैं ही ब्रह्म हूँ—इस रूप में स्वयं को अनुभव करते हैं। उसी परम पुरुष में सम्पूर्ण विश्व व्याप्त है।

यो देवेभ्य आतपति यो देवानां पुरोहितः।
पूर्वो यो देवोभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये॥

जो देवताओं के लिए प्रकाशित होता है, जो देवताओं के अग्रणी होकर पुरोहित के समान कल्याणकारी है, जो सबसे पहले अग्नि रूप में द्रव्य ग्रहण करते हैं तथा जो देवताओं से पहले उत्पन्न हुए, ऐसे सुन्दर दीप्ति वाले सूर्यदेव को मैं प्रणाम करता हूँ।

रूच बाह्य जनयन्तो देवाअग्रे तदब्रुवन।
यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यां चस्य देवा असन् वशेः॥

हे सूर्यदेव, जो ब्राह्मण उपरोक्त विधि से आपको प्रकाशमय जानता है और प्रतिदिन आपकी पूजा करता है, वह संसार में सबके द्वारा पूजित होता है क्योंकि उस दिव्य पुरुष के ज्ञान से ब्रह्मादि देवता भी उस साधक की मनोकामना पूरी करते हैं।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पतन्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम्।
इष्णान्नि षाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण॥

हे आदित्य देव! आप स्वतः तेज स्वरूप हैं। श्री और लक्ष्मी आपकी दो पत्नियाँ हैं। रात्रि एवं दिन दोनों आपके पास हैं, नक्षत्र मण्डल आप ही से प्रकाशित होता है, इसलिए आपके सामने वे नहीं चमकते। आपकी ही इच्छा से सभी की मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। ऐसे आपकी ही उपासना से ब्रह्मज्ञान सम्भव है।

प्रयोग विधि—पुरुष सूक्तं मन्त्र से दूध, दही, शक्कर, शहद एवं घी मिश्रित पंचामृत से भगवान् श्रीकृष्ण का अभिषेक करें। अभिषेक में ११ बार पुरुष सूक्तं के उक्त २२ श्लोकों का उच्चारण करते जायें और पंचामृत चढ़ाते जायें। बाद में पंचामृत पुत्र प्राप्ति के इच्छुक दम्पति पी जायें और रात्रि में अपने-अपने धर्म का पालन करें तो निश्चित पुत्र लाभ होता है।

नोट—पुरुष सूक्तं के विषय में कुछ भी कहना या तर्क देना सूरज को

दीपक दर्शन कराने के सदृश्य है। इस स्तोत्र का नाम ही पुरुष सूक्तं है अथ पुरुष उत्पन्न कराने वाला स्तोत्र तो अब आगे क्या वर्णन करना।

मन्त्र प्रयोग न. १८

भगवान् विष्णु की पूजा उपासना करनी चाहिए तथा विष्णु सहस्रना का नित्य पाठ करना चाहिए। विष्णु सहस्रनाम पुत्र उत्पत्ति हेतु अचूक प्रयो है। विष्णु सहस्रनाम से अभिमन्त्रित जल दोनों पति-पत्नी पीकर पुत्रोत्प की कामना करें—श्री विष्णु की कृपा से हमारे पुत्र ही होगा, पुत्र ही होगा, निश्चय ही स्वयं विष्णु भगवान को आना पड़ता है। श्री विष्णु सहस्रना स्तोत्र की पुस्तक मँगाने के लिए आप ५० रुपए मनीआर्डर से रणधी प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार को भेजकर पुस्तक प्राप्त कर लें।

मन्त्र प्रयोग न. १९

पुत्र प्राप्ति की तीव्र इच्छा रखने वाले स्त्री-पुरुषों को स्पष्ट कर चाहता हूँ कि देवगुरु बृहस्पति ग्रह ही पुत्र उत्पत्ति के कारक हैं। जिस स्त्री पुरुष के कन्या ही कन्या होती हैं तो आप उनकी जन्म-पत्रिका देख निश्चित रूप से उनकी जन्म पत्रिका में बृहस्पति निर्बल होगा, या अच्छे भाव में नहीं बैठा होगा या अच्छे भाव में बैठा हो तो उस पर पापग्रहों की दृष्टि होगी, इस प्रकार बृहस्पति ग्रह पुत्र उत्पत्ति का कारक है और वह कमजोर है तभी कन्या होगी तो क्यों नहीं बृहस्पति ग्रह के मन्त्र जप कर इसे बलिष्ठ किया जाकर पुत्र उत्पत्ति के प्रयास किये जायें।

बृहस्पति ग्रह की शान्ति के लिए पुत्र प्राप्ति के इच्छुक पति-पत्नी को प्रतिदिन प्रातःकाल बृहस्पतिवार से प्रारम्भ करके श्रद्धानुसार निम्नलिखि मन्त्रों या कोई एक मन्त्र का इच्छानुसार जप करना चाहिए—

क. बृहस्पति वैदिक मन्त्र

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभातिक्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजातत दस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

ख. बृहस्पति गायत्री मन्त्र

ॐ आंगिरसाय विद्महे दिव्य देहाय धीमहि तन्नो जीवः प्रचोदयात्

ग. बृहस्पति एकाक्षरी बीजमन्त्र

ॐ बृं बृहस्पतये नमः।

घ. बृहस्पति तांत्रिक मन्त्र

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।

च. बृहस्पति नमस्कार मन्त्र

ॐ देवानां च ऋषीणां च गुरुं काञ्चन सन्निभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं गुरुं प्रणमाम्यहम्॥

छ. बृहस्पति कवच

पुत्र प्राप्ति हेतु बृहस्पति कवच का नित्य पाठ करना चाहिए। यदि हो सके तो इस कवच को कागज में लिखकर ताबीज में भरकर गले में धारण कर लें तो पुत्र प्राप्ति और भी आसानी से हो जाती है।

बृहस्पति ग्रह का कवच निम्नानुसार है—

अस्य श्री बृहस्पति कवच स्तोत्रं मंत्रस्य ईश्वर ऋषि;
अनुष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता, गं बीजं, श्री शक्ति;
क्लीं कीलकं, बृहस्पति प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः॥

अथ कवचम्

ॐ अभीष्ट फलदं देवं सर्वज्ञं सुर पूजितम्।
अक्षमालाधरं शांतं प्रणमामि बृहस्पतिम्॥
बृहस्पतिः शिरः पातु ललाटे पातु मे गुरुः।
कर्णौ सुरगरुः पातु नेत्रे मेऽभीष्टदायकः॥
जिह्वां पातु सुराचार्यो नासां मे वेदपारगः।
मुखं मे पातु सर्वज्ञो कंठं मे देवता गुरुः॥
भुजा वांगिरसः पातु करो पातु शुभप्रदः।
स्तनौ मे पातु वागीशः कुक्षि मे शुभलक्षणः॥
नाभिं देवगुरुः पातु मध्यं पातु सुखप्रदः।
कटिं पातु जगद्वंद्य ऊरू मे पातु वाक्पतिः॥
जानु जंघे सुराचार्यो पादौ विश्वात्मकस्तथा।
अन्यानि यानि चांगानि रक्षेन्मे सर्वतो गुरु॥

इत्येतत्कवचं दिव्यं त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।
सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

ज. बृहस्पति स्तोत्रम्

पुत्र प्राप्ति हेतु बृहस्पति स्तोत्र का पाठ विशेष फलदायी है। स्कन्द पुराण में वणित बृहस्पति स्तोत्र—

विनियोग—ॐ अस्य श्री बृहस्पति स्तोत्रमंत्रस्य, श्रीगृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः श्री बृहस्पतिर्देवता, श्री बृहस्पति पीत्यर्थे जपे विनियोगः भूर्भुवस्सुवरोमिति दिग्बन्धः॥

अथ स्तोत्रम्

ॐ गुरुर्बृहस्पति जीवः सुराचार्यो विदांवरः।
वागीशो धिषणो दीर्घश्मश्रुः पीतांबरो युवा॥
सुधा दृष्टिर्ग्रहाधीशो ग्रहपीड़ापहारकः।
दयाकरः सौम्यमूर्तिः सुरार्च्यः कुङ्कुमद्युतिः॥
लोकपूज्यो लोकगुरुर्नीतिज्ञो नीतिकारकः।
तारापतिश्चाङ्गिरसो वेद वैद्य पितामहः॥
भक्त्या बृहस्पतिं स्मृत्वा नामान्येतानि यः पठेत्।
अरोगी बलवान् श्रीमान् पुत्रवान् स भवेन्नर॥
जीवेद्वर्षशतं मर्त्यः पापं नश्यति नश्यति।
यः पूजयेद् गुरुदिने पीतगन्धाक्षताम्बरैः॥
पुष्प दीपोपहारैश्च पूजयित्वा बृहस्पतिम्।
ब्राह्मणान्भोजयित्वा च पीडा शान्तिर्भवेद्गुरोः॥

विष्णु धर्मोत्तर में वर्णित बृहस्पति स्तोत्र

श्री भगवानुवाच—

बृहस्पतिस्सुराचार्यो दयावान् शुभलक्षणः।
लोकत्रय गुरुः श्रीमान् सर्वज्ञस्सर्वकोविदः॥
सर्वेशस्सर्वदाऽभीष्ट स्सर्वजित्सर्व पूजितः।
अक्रोधनो मुनि श्रेष्ठो नीतिकर्त्ता गुरुः पिता॥
विश्वात्मा विश्वकर्त्ता च विश्व योनिरयोनिजः।

भूर्भुव स्स्वः प्रभुश्चैव भर्ता चैन महाबलः॥
चतुर्विंशति नामानि पुण्यानि नियतात्मना।
नन्दगोप गृहासीन विष्णुना कीर्तितानि वै॥
यः पठेत्प्रातरूत्थाय प्रयतः सुसमाहितः।
विपरोतोऽपि भगवान्प्रीतस्स्यात्तु बृहस्पतिः॥
यः श्रृणोति गुरुस्तोत्रं चिरं जीवेन्न संशयः।
सहस्र गोदान फलं विष्णोरर्चनतो भवेत्।
बृहस्पति कृपा पीडा न कदाचिद् भविष्यति॥

झ. पुत्र प्राप्ति हेतु गुर्वष्टोत्तर शतनामावलिः

पुत्र प्राप्ति हेतु गुरु के १०८ नामों का उच्चारण करना चाहिए। इससे गुरु प्रसन्न होकर अवश्य ही पुत्र प्रदान करते हैं। गुरु के १०८ नामों का वर्णन अग्रानुसार है।

१. ॐ अनन्ताय नमः
२. ॐ जयावहाय नमः
३. ॐ आङ्गिरसाय नमः
४. ॐ विविक्ताय नमः
५. ॐ अध्वराभक्ताय नमः
६. ॐ वाचस्पतये नमः
७. ॐ वरिष्ठाय नमः
८. ॐ वश्याय नमः
९. ॐ श्रीमते नमः
१०. ॐ वशिने नमः
११. ॐ अध्वर कृत्पराय नमः
१२. ॐ चित्त शुद्धिकराय नमः
१३. ॐ वाग्विचक्षणाय नमः
१४. ॐ जीवाय नमः
१५. ॐ जयक्षय नमः
१६.. ॐ जयन्ताय नमः
१७. ॐ जेत्रे नमः
१८. ॐ अव्ययाय नमः
१९. ॐ गुरुणां गुरवे नमः
२०. ॐ गुणवतां श्रेष्ठाय नमः
२१. ॐ गुणिने नमः
२२. ॐ गोपति प्रियाय नमः
२३. ॐ गोचराय-नमः
२४. ॐ गोरत्रे नमः
२५. ॐ गुणाकशय नमः
२६. ॐ गुरवे नमः
२७. ॐ चैत्राय नमः
२८. ॐ बृहद्रथाय नमः
२९. ॐ चित्रशिखण्डिजाय नमः
३०. ॐ बृहद्भानवे नमः
३१. ॐ बृहस्पते नमः
३२. ॐ अभीष्टदाय नमः

३३. ॐ सुराचार्याय नमः
३४. ॐ सुराराध्याय नमः
३५. ॐ सुरकार्य कृतोद्यमाय नमः
३६. ॐ गीर्वाणपोषकाय नमः
३७. ॐ धन्याय नमः
३८. ॐ गीष्पतये नमः
३९. ॐ गिरीशाय नमः
४०. ॐ अनघाय नमः
४१. ॐ धीवराय नमः
४२. ॐ धिषणाय नमः
४३. ॐ दिव्य भूषणाय नमः
४४. ॐ देव पूजिताय नमः
४५. ॐ धनुर्धराय नमः
४६. ॐ दैत्यहन्त्रे नमः
४७. ॐ दयासाराय नमः
४८. ॐ दयाकराय नमः
४९. ॐ दारिद्रय नाशनाय नमः
५०. ॐ धन्याय नमः
५१. ॐ देवाय नमः
५२. ॐ धनुर्मीनाधिपाय नमः
५३. ॐ दक्षिणायनसंभवाय नमः
५४. ॐ धनुर्बाणधरायय नमः
५५. ॐ हरये नमः
५६. ॐ धीमते नमः
५७. ॐ अङ्गिरोवर्षसंजाताय नमः
५८. ॐ सिन्धु देशाधिपाय नमः
५९. ॐ स्वर्णकायाय नमः
६०. ॐ चतुर्भुजाय नमः
६१. ॐ हेमाङ्गदाय नमः
६२. ॐ हेमवपुषे नमः
६३. ॐ हेमभूषण भूषिताय नमः
६४. ॐ पुष्पनाथाय नमः
६५. ॐ पुष्परागमणि मण्डन प्रियाय नमः
६६. ॐ पुष्प रागमणि मण्डिताय नमः
६७. ॐ अङ्गिरः कुलभूषणाय नमः
६८. ॐ काशपुष्प समानाभाय नमः
६९. ॐ असमान बलाय नमः
७०. ॐ ऋक्षराशिभार्ग प्रचारवते नमः
७१. ॐ सदानन्दाय नमः
७२. ॐ सत्यसंधाय नमः
७३. ॐ सत्यसंकल्पमानसाय नमः
७४. ॐ ब्राह्मणेशाय नमः
७५. ॐ सामनाधिकनिर्भुक्ताय नमः
७६. ॐ सर्वदातुष्टाय नमः
७७. ॐ लोकत्रय गुरवे नमः
७८. ॐ सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः
७९. ॐ दयावते नमः
८०. ॐ इन्द्राद्यमरसंघाय नमः
८१. ॐ सत्त्व गुणसंपद्विभावसवे नमः
८२. ॐ भूसुराभीष्टदाय नमः
८३. ॐ भूरियशसे नमः
८४. ॐ पुण्यविवर्धनाय नमः
८५. ॐ धर्मरूपाय नमः
८६. ॐ धनाध्यक्षाय नमः
८७. ॐ धर्मपालनाय नमः
८८. ॐ सर्ववेदार्थतत्त्वज्ञाय नमः

८९. ॐ सर्वापद्विनिवारकाय नमः
९०. ॐ सर्वपापप्रशमनाय नमः
९१. ॐ स्वमतानुगताभराय नमः
९२. ॐ ऋग्वेदपारगाय नमः
९३. ॐ सर्वागमज्ञाय नमः
९४. ॐ सर्वज्ञाय नमः
९५. ॐ सर्व वेदान्तविदे नमः
९६. ॐ ब्रह्म पुत्राय नमः
९७. ॐ ब्रह्मविद्या विशारदाय नमः
९८. ॐ सर्वलोकवंशवदाय नमः
९९. ॐ सर्वतो विभवे नमः
१००. ॐ सर्व शुभलक्षणाय नमः
१०१. ॐ सत्यभाषगाय नमः
१०२. ॐ सर्वेशाय नमः
१०३. ॐ सर्वाभीष्टदायकाय नमः
१०४. ॐ देवानां नमः
१०५. ॐ ऋषीणां नमः
१०६. ॐ बुद्धिभूतं नमः
१०७. ॐ त्रिलोकेशं नमः
१०८. ॐ पुत्रदाताय नमः

मन्त्र प्रयोग न. २०

पुत्र प्राप्ति मन्त्र

"ॐ ह्वां ह्वीं हूं पुत्रं कुरू कुरू स्वाहा।"

फल—एकाग्रमन से आम के वृक्ष पर बैठकर यदि एक लाख जप करे तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है। आम के वृक्ष पर नहीं बैठ सके तो आम की लकड़ी का बाजोट बनाकर उस पर बैठकर मन्त्र जप करें।

मन्त्र प्रयोग न. २१

पुत्र प्राप्ति के लिए मन्त्र

मंगल मूरति मारुति नंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन॥
कवन सो काज कठिन जग माहीं। जो नहिं होय तात तुम्ह पाही॥
कहइ रीछपति सुनु हनुमाना। का चुप साधि रहेउ बलवाना॥
पवन तनय बल पवन समाना। बुद्धि बिवेक बिग्यान निधाना॥
कोमल चित कृपालु रघुराई। कपि केहि हेतु धरि निठुराई॥
जो प्रसन्न मोपर मुनिराई। पुत्र देहु बल में अधिकाई॥
जबहि पवनसुत यह सुधिपाई। चले हृदय सुमिर रघुराई॥
राम कीन्ह चाहहि सोई होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई॥

पुरबहु मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य-सत्य प्रण सत्य हमारा॥
जेहि विधि प्रभु प्रसन्न मन होई। करुणासागर कीजै सोई॥
चरण कमल बन्दउँ तिनकेरे। पुरबहु सकल मनोरथ मेरे॥
देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुणानिधि बोले॥
दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानन्द समाना॥
जाकर नाम सुनत शुभ होई। मोरे गृह आवो प्रभु सोई॥
प्रभु की कृपा भयहु सब काजू। जन्म हमार सुफल भा आजू॥

मन्त्र की प्रयोग विधि—शारदीय नवरात्रि के दिनों में राम उपासना करते हुए इस मन्त्र के १०८ पाठ करें। नित्य ही इस क्रिया को करते रहें। और विजया दशमी वाले दिन गंगा स्नान करें और इस मन्त्र के ११ पाठ करके कोढ़ियों को गन्ने के रस से बनी हुई खीर खिलायें। इस प्रकार करने से यह प्रयोग पूर्ण होकर आपकी कामना को पूरी करने हेतु पुत्रसुख प्रदान करता है।

गर्भस्तम्भन, गर्भरोग, सुखप्रसव आदि विविध प्रयोगों हेतु मन्त्र

मासिक धर्म तथा पीड़ा स्तम्भन मन्त्र

"आदेश श्री रामचन्द्र, सिद्ध गुरु को तोड़ूँ गाँठ, औगाँठा लो तोड़ दूँ लाय, तोड़ देऊँ सरित परित देकर पाय, यह देखकर हनुमन्त दौड़कर आय, (अमुकी) की देह शान्त हो जाय पीरा दे भगाये। श्री गुरु नरसिंह की दुहाई आदेश आदेश आदेश॥"

मन्त्र प्रयोग विधि एवं लाभ—पुत्र प्राप्ति हेतु पहले स्त्री को इस रोग का नाश करना अनिवार्य है। एक पान लेकर इस मन्त्र से ११ बार शक्तिकृत करके रोगिणी को खिलाने से स्त्री के मासिक धर्म तथा इसके कारण होने वाली पीड़ा की निवृत्ति हो जाती है। अमुकी शब्द के स्थान पर स्त्री के नाम का उच्चारण करना होगा।

गर्भपात नहीं हो इसके लिए गोरख तन्त्र में वर्णित मन्त्र

ॐ नमः आदेश गुरु को।

ॐ नमः आदेश अंग में बाँधि राख।
नृसिंह यती भोसते बाँधि राख।
श्री गोरखनाथ काँखते बाँधि राख।
हपूलिका राजा सुण्डों से बाँधि राख।
दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राखा।
थमे गर्भ ओ बाँधे घाव।
थामै माता पार्वती यह गंडो बाँधू ईश्वर यती।
जब लग डाँडो कट पर रहे।
तब लग गर्भ काया में रहे।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मन्त्र से ११ बार लाल धागे को अभिमन्त्रित करके गर्भिणी की कमर में बाँधने से गर्भ सुरक्षित रहता है। धागे को धूप-दीप करके ही बाँधे।

गर्भ की सुरक्षा हेतु गोरख तन्त्र में वर्णित मन्त्र

ॐ नमो गंगा डाकरे गोरख बलाय।
धीपर गोरख यती पूजा जाये।
जयद्रथ पुत्र ईश्वर की माया।

उक्त मन्त्र से काले धागे या कच्चे सूत को ३१ बार अभिमन्त्रित करे तथा गर्भिणी की कमर में बाँधे। यदि गर्भ बार-बार गिर जाता हो तो इस प्रयोग से गर्भ गिरेगा ही नहीं। यदि गर्भ गिरने की आशंका हो तब भी लाभ होता है। धागे को सात बार धूप फिराकर दीपक दिखाकर ही बाँधे।

गर्भ स्तम्भन गोरख तन्त्र में वर्णित मन्त्र

गौरा काते ब्रह्मा बुने ईश्वर गाँठी देय।
बिन पाके फूटे भुइयाँ गिरे तो राजा रामचन्द्र तुम्हारे।
मेरी आन गुरु की आन।
ईश्वर गौरा गोरख नाथ महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मन्त्र को पढ़कर काले धागे के सात गाँठें लगाए एक बार मन्त्र पढ़कर एक गाँठ लगाते रहें। इस प्रकार सात बार मन्त्र पढ़ने पर सात

गाँठे लगेंगी। इस प्रकार सात गाँठे लगा हुआ काला धागा गर्भिणी स्त्री के गले में बाँध दे तो गर्भ स्तम्भन होगा। धागे को धूप-दीप दिखाकर ही बाँधे।

गर्भ रक्षा मन्त्र

ओं नमो आदेश गुरु का हनुमन्त वीर।
गम्भीर धूजे धरती बँधावे धीर।
बाँध बाँध हनुमन्ता वीर मास एक बाँधू।
मास दोइ बाँधू, मास तीन बाँधू।
मास चार बाँधू, मास पाँच बाँधू, मास छः बाँधू।
मास सात बाँधू, मास आठ बाँधू, मास नौ बाँधू।
'अमुकी' गर्भ गिरे नहीं।
ठाँह को ठाँह रहे, ठाँह का ठाँह न रहे।
मेरा बाँधा बंध छटे तो ईश्वर महादेव गोरखनाथ।
जती हनुमन्त वीर लाजें मेरी भक्ति गुरु की शक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

काले धागे में मन्त्र पढ़कर गर्भवती की कमर में बाँधे जहाँ 'अमुकी' शब्द आया है वहाँ गर्भवती स्त्री का नाम लेना है। अभिमन्त्रित करने के बाद धागे पर नौ बार अगरबत्ती से धूप खेवे तथा नौ बार दीपक दिखा कर बाँधे।

मासिक धर्म में कष्ट निवारण हेतु

मूल नक्षत्र में रात्रि १२ बजे निम्न मन्त्र को भोजपत्र पर या कागज पर लिखकर ताबीज में भरकर स्त्री की कमर में बाँधे। मन्त्र इस प्रकार है—

अथ-कृत्वां-नी कृत्वा नी हीं-किम-हीं-किम।
हीं-भीं-किम-हीं-किम गुरु गोरखनाथ की दुहाई॥

उक्त मन्त्र को ताबीज में भरने के बाद ताबीज को दूध एवं जल से धोकर, धूप-दीप देकर फिर बाँधे।

गर्भ स्थिर रहने का मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु।

ॐ सतवर पुरुष पाया की रात्रि।
थम्बे गर्भ न छोड़े पाप अदवा मास गर्भ वास।
पुरा साहि निकास गौरि मास।
मात माता गर्भ को पूरा माथा।
हनुमान तीर गर्भ को गंडी बाँधे राखि।
दस मार वीर पाख।
फुरो मन्त्र आदेश गुरु गोरखनाथ को।

काले धागे को ३१ बार उक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गूगल की धूप के ऊपर धागे को २ मिनट रखकर गर्भिणी की कमर में बाँधे तो गर्भ गिरेगा नहीं।

गर्भधारण मन्त्र

हिमवत्युत्तरे पार्श्वे शर्वरीनाम यक्षिणी।
यस्य नूपुरशब्देन विशाल्या गर्भिणी भवेत्॥

प्रयोग विधि—यदि विवाह को बहुत वर्ष बीत गए हैं तथा पति-पत्नि पूर्णतया स्वस्थ भी हैं फिर भी सन्तान नहीं होती है तब यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए। रविवार के दिन गुंजा की टहनी लाकर उस टहनी पर रविवार, सोमवार एवं मंगलवार तीन दिन १०८ बार उक्त मन्त्र पाठ करें। यह मन्त्र केवल तीन दिन गुंजा की टहनी पर जपना है और मात्र १०८ बार ही। अतः अत्यधिक आसान है। फिर मंगलवार के दिन इस अभिमन्त्रित टहनी को दो ताँबे के ताबीज में भरकर गंगाजल से स्नान कराकर हनुमान जी के चरणों में दोनों ताबीज को स्पर्श करा दे। एक ताबीज पति अपने गले में बाँधे तथा दूसरा ताबीज पत्नी अपनी कमर में बाँध ले। इसके प्रभाव से शीघ्र सन्तान की प्राप्ति होगी। ताबीज पर धूप-दीप करके ही बाँधे।

गर्भ नहीं रहता हो या गर्भ धारण प्रयोग मन्त्र

ओं रहु रहु हो श्वेत वर्ण पुरुष रहु रहु हो।
हरि धवल पुरुष रहु रहु हो शंख चक्र गदाधार रहु रहु॥

प्रयोग विधि—जिस स्त्री को प्रत्येक बार प्रयास करने पर भी गर्भधारण

नहीं होता है या वो जाया हो जाता हो तो यह प्रयोग अवश्य करना चाहिए। उक्त मन्त्र को सात बार पढ़कर काले धागे में सात गाँठ लगा दे। तत्पश्चात् धागे को गर्भधारण की कामना करने वाली स्त्री की कमर में बाँध दे तो वह स्त्री निश्चय ही सन्तान उत्पन्न करने में सक्षम होती है।

गोपाल अक्षय कवच का पुत्रोत्पत्ति हेतु प्रयोग

सब प्रयास करने के बाद भी गर्भधारण नहीं होता है तो पति-पत्नी दोनों गोपाल अक्षय कवच का एक बाद प्रतिदिन पाठ करें तथा इस अक्षय कवच को कागज पर छोटे-छोटे अक्षरों से लिखकर ताबीज में भरकर स्त्री अपनी बाँयी भुजा में तथा पुरुष दाँयी भुजा में बाँध ले तो निश्चय ही सन्तानोत्पत्ति शीघ्र सुलभ होती है। ताबीज बाँधने से पूर्व धूप-दीपक दे कर ही बाँधे।

श्री गोपाल अक्षय कवच

श्री नारद उवाच—

इन्द्राद्यमर वर्गेषु ब्रह्मन् यत्परमाद भुतम्।
अक्षयं कवचं नाम कथयस्व मम प्रभो॥

श्री नारद ने कहा—इन्द्र आदि अमर वर्ग से भी अद्भुत अक्षय नामक कवच को हे ब्रह्मा जी! हे प्रभु! मुझे बताइये।

यद्धृत्वाऽऽकर्ण्य वीरस्तु त्रैलोक्य विजयो भवेत्।

जो धारण मात्र से वीरता प्रदान करता है वह त्रिलोक पर भी अधिकार दिला देता है।

ब्रह्मोवाच—

शृणु पुत्र मुनि श्रेष्ठ कवचं परमाद्भुतम्।
इन्द्रादि देव वृन्दैश्च नारायणमुखाच्छुतम्॥

ब्रह्मा ने कहा—मुनियों में श्रेष्ठ हे पुत्र! परम् अद्भुत कवच सुनो। इसे इन्द्र आदि देवताओं ने नारायण के मुख से सुना था।

त्रैलोक्यविजय स्यास्य कवचस्य प्रजापतिः।
ऋषिश्छन्दो देवता च सदा नारायणः प्रभु॥

इस त्रैलोक्य विजय दिलाने वाले कवच के प्रजापति ऋषि हैं, अनुष्टप छन्द हैं एवं श्री नारायण प्रभु इसके देवता हैं।

विनियोग—

ॐ अस्य श्री त्रैलोक्य विजयाक्षय कवचस्य, प्रजापति ऋषिः।
श्री नारायणः परमात्मा देवता। धर्मार्थ काम मोक्षार्थे जपे विनियोगः॥

पादौ रक्षतु गोविन्दो जङ्घे पातु जगत्प्रभु।
उरू द्वौ केशवः पातु कटि दामोदर स्ततः॥

गोविन्द पाँवों की रक्षा करें जगत प्रभु जाँघ की रक्षा करें। दोनों उरूवों की रक्षा केशव करें। कमर की रक्षा दामोदार करें।

वदनं श्री हरिः पातु नाड़ी देशं च मेऽच्युतः।
वामपार्श्व तथा विष्णुर्दक्षिणं च सुदर्शनः॥

चेहरे की श्री हरि रक्षा करें। नाड़ी स्थान की अच्युता रक्षा करें। बाँयी तरफ की विष्णु तथा दक्षिण तरफ की सुदर्शन रक्षा करें।

बाहु मूले वासुदेवो हृदयं च जनार्दनः।
कण्ठं पातु वराहश्च कृष्णश्च मुखमण्डलम्॥

कन्धों की रक्षा वासुदेव करें। हृदय की रक्षा जनार्दन करें। कण्ठ की रक्षा वाराह करें। मुखमण्डल की रक्षा कृष्ण करें।

कर्णौ मे माधवः पातु हृषीकेशश्च नासिके।
नेत्रे नारायणः पातु ललाटं गरुड़ध्वज॥

कानों की रक्षा माधव करे। नासिका की रक्षा हृषीकेश करें। नेत्रों की रक्षा नारायण करें। ललाट की रक्षा गरुड़ध्वज करें।

कपोलं केशवः पातु चक्रपाणिः शिरस्तथा।
प्रभाते माधवः पातु मध्याह्ने मधुसूदनः॥

कपोलों की रक्षा केशव करें। शिर की रक्षा चक्रपाणि करें। प्रभात में माधव रक्षा करें। मध्याह्न में मधुसूदन रक्षा करे।

दिनान्ते दैत्यनाशश्च रात्रौ रक्षतु चन्द्रमा।
पूर्वस्यां पुण्डरीकाक्षो वायव्यां च जनार्दनः॥

दिन के अन्त में दैत्यों का नाश करने वाले रक्षा करें। रात्रि में चन्द्रमा

रक्षा करें। पूर्व में पुण्डरीकाक्ष रक्षा करें। वायव्य में जनार्दन रक्षा करें।

दत्तात्रेय तन्त्र में वर्णित गर्भस्तम्भन मन्त्र

ॐ नमो भगवते महारौद्राय गर्भस्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा।

एक लक्ष जपात सिद्धिर्भवति।

अष्टोत्तरशत् जपात् प्रयोगः सिद्धिर्भवति॥

मन्त्र प्रयोग—एक लाख संख्या में जप करके इस मन्त्र को सिद्ध कर लेना चाहिए। इसके बाद प्रयोग करने के पूर्व इस मन्त्र के एक सौ आठ बार कार्य करने पर सिद्ध होता है। प्रयोग काल में १०८ बार मन्त्र जप में मन्त्र में निम्नानुसार 'अमुक' शब्द के स्थान में जिस स्त्री का गर्भ स्तम्भन करना हो उसका नाम लेना चाहिए।

ॐ नमो भगवते महारौद्राय (अमुकं) गर्भस्तम्भनं कुरू कुरू स्वाहा।

इस मन्त्र को यदि आप एक लाख जप करके फिर १०८ बार जिस स्त्री के गर्भ की रक्षा करनी हो उसका नाम लेकर जप करें तो गिरता हुआ गर्भ भी बच जाता है। दत्तात्रेय तन्त्र स्तम्भनादि प्रयोग कथन चतुर्थ पटल में वर्णित है कि ब्लीडिंग आने के बाद सिद्ध मन्त्र को १०८ बार पढ़कर मध्यमा अंगुली को पानी भरकर कटोरी में घुमाते जायें और वह पानी गर्भ गिर रही स्त्री को पिला दे तो गिरता-गिरता गर्भ भी बच जायेगा।

दत्तात्रेय तन्त्र के उन्नीसवें पटल में वर्णित पुत्रजीवक मन्त्र

ॐ परब्रह्म परमात्मने नमः अमुकी गर्भ।

दीर्घजीविनं सुतं कुरू कुरू स्वाहा॥

प्रयोग विधि एवं लाभ—इस मन्त्र के लिए दत्तात्रेय तन्त्र के उन्नीसवें पटल में लिखा है—

अयुत जपात् मन्त्र सिद्धि भवति।

अष्टोत्तरशत जपात् प्रयोग सिद्धिर्भवति॥

अर्थात् दस हजार बार जप करने से यह मन्त्र सिद्ध होता है। इसके सिद्ध हो जाने पर प्रयोग करते समय १०८ बार मन्त्र जप करें, मन्त्र में अमुकी शब्द के स्थान पर उस स्त्री का नाम उच्चारण करना चाहिए। जिसके लिए

प्रयोग किया जा रहा है। यह पुत्रजीवक मन्त्र उन गर्भिणी स्त्रियों को अभिमन्त्रित करके जल पिलाना चाहिए जिसके एक पुत्र होकर मर गया हो। पुत्र होने के तीन-चार दिन में ही मर जाये तो दूसरी बार गर्भाधान में अवश्य प्रयोग करना चाहिए।

आदिमन्त्र शास्त्र में वर्णित शीघ्रप्रसव मन्त्र

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहिनि लम्बोदर मुंच स्वाहा॥

प्रयोग विधि—इस मन्त्र के लिए मन्त्र शास्त्र में वर्णित है—

अनेन मन्त्रेण जलं सुतप्तं पातुं प्रदेयं शुन्विना नरेण तोयाभिपानात् खलु गर्भवत्या पसूयते शीघ्र तरं सुखेन अर्थात् उपर्युक्त मन्त्र को २१ बार गरम करके पुनः ठण्डा जल अर्थात् निवाया अर्थात् हल्का गर्म जल पर पढ़े तथा यह हल्का गर्म जल प्रसव पीड़ा प्रारम्भ होने पर स्त्री को पिला दे तो बिना सिजेरियन सन्तान उत्पन्न होगी।

गर्भ रक्षा मन्त्र

हुं ह्रीं चामुण्डे देवदत्ता गर्भरक्षाँ कुरू कुरू स्वाहा।

प्रयोग विधि—उक्त मन्त्र को मात्र एक बार पढ़कर काला धागा अभिमन्त्रित कर धागे पर धूप-दीप दें और गर्भिणी स्त्री की कमर में बाँध दे। इससे गर्भपात होने की आशंका समाप्त हो जायेगी। जब प्रसव हो चुके तब धागा हटा देना चाहिए।

प्रसव कष्टनिवारण चेटक मन्त्र

ओं मन्मथ मन्मथ बाहि बाहि।
लम्बोदर मुन्च मुन्च स्वाहा।
ओं मुक्ता पाशं विपाशक्ष।
मुक्ता सूरयेण रश्मयः।
मुक्ता सर्व फलादर्भ एहि।
मारिच स्वाहा एतन्मन्त्रेणा।
जय नमि मनय पितम् तत्क्षणात्।
सुख प्रसवो भवति॥

प्रयोग विधि—केवल एक हाथ से खींचा हुआ कुएँ का जल लाकर १०१ मन्त्र पढ़कर पिलाने से प्रसव वेदना दूर होती है और शीघ्र प्रसव होता है। इस मन्त्र प्रयोग से बच्चा सुखपूर्वक होता है। सीजेरियन की आवश्यकता नहीं पड़ती है। बस केवल ध्यान रखना है एक हाथ से खींचा गया जल (जमीन पर नहीं रखे हुए) लाकर प्रयोग करें अन्यथा प्रभाव नहीं होगा।

गर्भस्तम्भन गोरख मन्त्र

ओं नमो गंगा उकारे।
गोरख बहा धोर धी।
पार गोरख बेटा जाय।
जमदूत पूत ईश्वर की।
माया दुहाई शिवजी की।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र से सूत को अभिमन्त्रित कर सात बार बट कर कुंवारी कन्या के हाथों से लगा दे और फिर गर्भिणी की बाँह में बाँधे तो जिस स्त्री का गर्भ गिर जाता है, उसका गर्भ नहीं गिरेगा और खून भी गिरना बन्द हो जायेगा।

सुखप्रसव मन्त्र

ॐ मुक्ताः पाशाविमुक्ताशा मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्ताः सर्व भयाद्गर्भ एहि माचिर माचिर स्वाहा॥

प्रयोग विधि—सुखप्रसव कराने का यह सबसे आसान मन्त्र है इसे सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं है। नौ मास पूर्ण होने के बाद प्रसव पीड़ा प्रारम्भ होने के बाद एक छोटी कटोरी में गंगाजल भर ले और पति अपनी मध्यमा अंगुली उस कटोरी में चलाते रहे और उक्त मन्त्र को मात्र ८ बार उच्चारण करके वह गंगाजल पत्नी को पिला दे तो सामान्य प्रसव (Normal Delivery) होती है।

गर्भधारण मन्त्र

ॐ ह्रीं उलजाल्य ठः ठः ॐ ह्रीं

प्रयोग विधि—जिस स्त्री को गर्भधारण नहीं होता हो तो उस स्त्री को

ऋतुकाल के बाद नहा धोकर मृगछाला पर पवित्र मन से बैठकर मन में सन्तान प्राप्ति का संकल्प करना चाहिए। फिर पति-पत्नी के कान में इस मन्त्र को १०८ बार पढ़कर रात्रि में अपने धर्म का पालन करता है तो स्त्री को गर्भधारण होता है।

गर्भधारण मन्त्र

ॐ नमः सिद्धि रूपाय अमुकीं।
सपुष्यां कुरू कुरू स्वाहा॥

प्रयोग विधि—इस मन्त्र को प्रयोग करने से पूर्व दस हजार बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रयोग के समय शंखाहुली (शंख-पुष्पी) स्वरस (मूलका) सवा तोले की मात्रा में लेकर उपरोक्त मन्त्र से १०८ बार अभिमन्त्रित करके बन्ध्या स्त्री को पिलानी चाहिए। इस प्रकार अभिमन्त्रित किया हुआ शंख-पुष्पी के ताजे स्वरस को नियम से प्रतिदिन पिलाते हुए एक सप्ताह तक पिलाना चाहिए और आठवें दिन स्त्री पति का सहवास करे तो गर्भधारण करने की पूरी-पूरी सम्भावना रहती है और सन्तान स्वस्थ रहती है। जब स्वरस को अभिमन्त्रित कर जिस स्त्री को पिलाना हो तो मन्त्र में आये 'अमुक' शब्द के स्थान पर उस स्त्री का नाम लेना चाहिए। तथा इस स्वरस के सेवन क्रम में स्त्री को सदा ही सात्त्विक व सादा भोजन करना चाहिए तथा वस्त्र से, तन से, मन से पवित्र रहकर सन्तान प्राप्ति हेतु अपने इष्टदेव के ध्यान में लीन रहना चाहिए।

रजोदोष निवारणार्थ मन्त्र

स्त्री को जब तक शुद्ध मासिकस्राव नहीं होगा तब तक गर्भधारण की कोई सम्भावना नहीं होती। अतः गर्भधारण हेतु शुद्ध मासिकधर्म का होना अत्यन्त आवश्यक है। वैसे शुद्ध मासिकस्राव के लिए चिकित्सक द्वारा चिकित्सा करानी चाहिए। परन्तु यदि औषधि अपना समुचित प्रभाव नहीं दिखाती हो तो मन्त्रोपचार भी करना चाहिए।

ॐ रि जय चामुण्डे धूम राम रमा तरूवर चढि जाय।
यह देखत अमुक के सब रोग पराय।
ॐ शिलंग हुँ फट् स्वाहा अमुको रजोदोष नाशय।

उक्त मन्त्र १००८ बार जप करने से सिद्ध हो जाता हे। जब यह प्रयोग किसी स्त्री पर करना हो तो केला को तीन बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित कर उस स्त्री को खिला देना चाहिए। इस प्रकार १२ दिन अभिमन्त्रित केला खाने से स्त्री का रजोधर्म सम्बन्धी दोष दूर होता है। जिससे गर्भधारण में सहायता मिलती है। उपरोक्त मन्त्र में उल्लिखित 'अमुक' शब्द के स्थान पर उस स्त्री का नाम उच्चारण किया जाना चाहिए।

मासिकस्राव में असह्य पीड़ा निवारणार्थ मन्त्र

ॐ नमो आदेश दुर्गा माई
बड़ी-बड़ी अदरख पतली रेश
बड़े विष के जल फांस दे
शेष गुरु का वचन न जाय खाली
पिया पंच मुण्ड के बाम
ढेली विषहरी राई की दुहाई फिरे।

प्रयोग विधि—किसी किसी स्त्री में यह भी देखने को मिलता है कि उसका मासिक धर्म तो ठीक समय पर हो रहा है परन्तु रजोधर्म के समय स्त्री को असह्य वेदना का कष्ट उठाना पड़ता है ऐसी महिलाओं को रजोधर्म होने से एक सप्ताह पूर्व से उक्त मन्त्र से अदरक को तीन बार अभिमन्त्रित करके खिलाने से रजोधर्म सम्बन्धी सभी दोष व पीड़ा नष्ट होती है। इसे रजोधर्म में नहीं खिलाना चाहिए। इस प्रकार चार-पाँच रजोधर्म के पूर्व इसे सेवन कराना चाहिए।

गर्भ रक्षा हेतु मन्त्र

ॐ रुद्राभी द्रव हो हा हा ह ओ का

प्रयोग विधि—गर्भ धारण जितना आवश्यक है उतना ही उसकी रक्षा करना भी। गर्भ रक्षा हेतु चिकित्सकीय परामर्श तो लेना ही चाहिए। इसके उपरान्त भी गर्भ नहीं ठहर पाता हो तो इस मन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। इस मन्त्र के लिए रविवार के दिन स्त्री को बिठाकर गूगल की धूनी देते हुए उक्त मन्त्र को ११ बार पढ़े तो गर्भ पर कोई बुरा प्रभाव नहीं होता है।

गर्भ नष्ट नहीं होने का महारौद्र प्रयोग

मन्त्र—ॐ नमो भगवते महारौद्राय अमुकस्य।
गर्भस्तम्भय कुरू कुरू स्वाहा॥

प्रयोग विधि—अमुक शब्द के स्थान पर गर्भिणी स्त्री का नाम लेना चाहिए। इस मन्त्र को दशहरा या दीपावली या किसी शुभ तिथि शुभ नक्षत्र में एक लाख बार जपने से सिद्ध हो जाता है। जिस स्त्री पर प्रयोग करना हो तो रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में उखाड़ कर लाये गए काले धतूरे की जड़ अथवा बीज को १०८ बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री की कमर में बाँधने से गर्भ स्तमभन होता है। गर्भ नष्ट नहीं होता है।

पुत्र प्राप्ति के लिए मन्त्र

ऐहि विधि गर्भ सहित सब नारी।
भई हृदय हरषित सुख भारी॥
जा दिन ते हरि गर्भहि आए।
सकल लोक सुख सम्पत्ति छाए॥

प्रयोग विधि—इस मन्त्र के ११,००० जप चलते-फिरते, उठते-बैठते कैसे भी करने से पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।

गर्भस्तम्भन के लिए मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को।
जय-जय-जय-जय जयकार।
गोरख बैठा धोरूवार।
जब लग गोरख जाप जपै।
जब लग राज विभीषण करै।
गौरा कात्या कातना।
ईश्वर बांध्या गंडा।
राखु-राखु श्री हनुमन्त बजंरग।
जो छिटका परता।
अंडा दूध-पूत।

ईश्वर की माया।
पड़ता गर्भ श्री गोरखनाथ जी रखाया।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—काले रंग का धागा लेकर २१ बार इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके गर्भवती स्त्री की कमर में धारण करवा दे, तो गिरता हुआ गर्भ रुक जायेगा।

गर्भ रक्षा के लिए मन्त्र

ॐ थाथो मोथो।
मेरा कहा कीजिए।
अमुक का गर्भ।
जाते राखि लीजिए।
गुरु की शक्ति।
मेरी भक्ति।
फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग विधि—कीदृशी नामक राक्षसी के लिए पूजा रखकर काले रंग का धागा लेकर इस मन्त्र से शक्तिकृत करके गर्भवती की कमर में पहनने से गिर रहा गर्भ रुक जाता है।

स्त्री कष्ट निवारण मन्त्र

ॐ नमो भगवते मर केतवे।
पुष्प धन्वने प्रतिचालित।
सकल सुरा सुर चित्ताय।
युवती भगवासिने ह्रीं गर्भ।
चालय चालय स्वाहा।

प्रयोग विधि—गर्भ के नवें मास अन्तिम दिनों में इस मन्त्र से श्वेत सरसों को अभिमन्त्रित करके स्त्री के सिरहाने रख दे तो शीघ्र ही उस स्त्री के

कष्ट दूर होते हैं।

सन्तान प्राप्ति के लिए मन्त्र

स देवि नित्यं परितप्यमान।
त्यामेव सीतेत्यभिभाषमाणः।
दृढ़ व्रतो राजसुतो महात्मा।
तवैव लाभाय कृत प्रयत्नः॥

प्रयोग विधि—उत्तम सन्तान की प्राप्ति के लिए इस मन्त्र का नित्य प्रति ४० दिन तक श्रद्धानुसार जितनी संख्या में आप कर सकें जाप करें तो उत्तम सन्तान की प्राप्ति होती है।

गर्भ रक्षा के लिए मन्त्र

द्रोण पर्वतं यथा वद्धं शीतार्थे।
राघवेण उतं तथा वंधयिष्यामि॥
अमुकस्य गर्भ मापत उमा विशीर्य स्वाहा।
ॐ तत्तद्यथाधर धारिणी गर्भ रक्षिणी॥
आकाश मात्र के हुं फट् स्वाहा।

प्रयोग विधि—लाल डोरे को इस मन्त्र से २१ बार जप कर २१ गाँठ दें। फिर गर्भिणी की कमर में बाँध देने से गर्भ क्षय नहीं होता किन्तु नौ मास पूरे होने पर उस डोरे को खोल देना चाहिए।

रक्तस्राव रोकने का मन्त्र

ॐ तद्यथा गर्भधर धारिणी।
गर्भ रक्षिणि आकाश।
मायी कै हुं फट् स्वाहा॥

प्रयोग विधि—इस मन्त्र से लाल डोरे को २१ बार अभिमन्त्रित करके स्त्री की कमर में बाँधने से रक्तस्राव रुक जाता है।

प्रसव के लिए मन्त्र

ॐ कोरा दैत्ये नमः।

ओं नमो आदेश गुरु का।
कौरा वार का बैठी हात।
सब दिराह मज्ञाक साथ।
फिर बसे नाति विराति।
मेरी भक्ति।
गुरु की शक्ति।
कौरां देवी की आज्ञा।

प्रयोग विधि—प्रसव के समय इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल स्त्री को पिलाने से बिना पीड़ा प्रसव होता है।

सन्तान प्राप्ति का मन्त्र

जिन दम्पत्तियों के सन्तान उत्पन्न करने की क्षमता होने पर भी सन्तान नहीं है। वह भी पति या पत्नी अथवा दोनों नित्य प्रति स्नान करके ४५ दिन तक एक माला प्रतिदिन निम्न मन्त्र का जाप करें। इसके बाद इस मन्त्र का प्रभाव स्पष्ट होने लगता है और ९० दिन तक कार्य पूरा होता है।

स देवि नित्यं परितप्यमानः,
त्यामेव सीतेत्यभिभाषमाणः।
दृढ़ व्रतो राजसुतो महात्मा,
तवैव लाभाय कृत प्रयत्नः॥

गर्भाशय विकार हेतु शाबर मन्त्र

ॐ नमो कामरू कामाख्या देवी।
जल बाँधू।
जलवाई बाँधू।
बाँध दूँ जल के तीर।
पाँचों दूत कलुवा बाँधू।
बाँधूं हनुमन्त वीर।
सहदेव की अनुवा।
अर्जुन का बाण।

रावण रण को धाम ले।
नहीं तो हनुमन्त की आन।
शब्द साँचा।
पिण्ड काँचा।
फुरे मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि—इस मन्त्र का जाप करते हुए स्त्री का झाड़ा करें। लाल धागा लेकर सिर से पाँव तक नापे और इस मन्त्र को उच्चारित करते हुए उसके ऊपर २१ गाँठ लगाएँ और स्त्री की कमर में बाँध दे। कमर में बाँधने से पूर्व धागे को धूप-दीप करें, इस प्रकार इस प्रयोग से गर्भाशय सम्बन्धी सभी विकार दूर हो जाते हैं तथा शीघ्र सन्तान उत्पन्न होती है।

अनियमित मासिकधर्म ठीक करने हेतु साबरी मन्त्र

ॐ नमो आदेश श्री रामचन्द्र सिंह गुरु का।
तोड़ूँ गाँठ औंगा ठाली।
तोड़ दूँ लाय।
तोड़ दूँ सरित।
परित देकर पाय।
यह देख हनुमन्त दौड़कर आये।
अमुक की देह शांति पाए।
रोग कूँ वीर भगाए।
रोग न नसै तो नरसिंह की दुहाई।
फुरे हुकुम खुदाई।

प्रयोग विधि—एक सादा पान बनवाकर इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सात बार अभिमन्त्रित करें और रोगिणी को खिला दें तो उसका अनियमित मासिकधर्म ठीक और नियमित समय पर होता है इससे गर्भधारण में सफलता मिलती है।

पुत्र प्राप्ति हेतु मन्त्र

निम्नलिखित मंत्रो से अभिमन्त्रित जल नित्य संध्या को स्त्री को पिलाने

से गर्भ दोषों की निवृत्ति होती है तथा स्त्री गर्भ धारण करने योग्य हो जाती है—

येन वेहद् बभूविध नाशयामसि तत् त्वत्।
इदं तदन्यंत्र त्वदह दूरे नि दक्ष्मसि॥ १॥
आ ते योनि गर्भ एतु पुमान् बाण इवेषुधिम्।
आ दीरोऽत्र जायतो पुत्रस्ते दशमाक्यः॥ २॥
पुमांसं पुत्र जनय तं पुमाननु जायतम्।
भवासि पुत्राणां माता जानानां जनयाश्च यान्॥ ३॥
यानि भद्राणि बीजन्यृषमा जनयन्ति च।
तैस्त्वं पुत्र विन्दस्व सा प्रसूर्धेनुका भव॥ ४॥
कृणोमि ते प्राजापत्यमा योनि गर्भ एतुते।
विदस्व त्वं पुत्रं नारि यस्तुभ्यं शशसच्चसु तश्मे त्वं भव॥ ५॥
थासां द्यौष्पिता पृथिवी माता समुद्रो मूलं वीरधां वभूव॥

प्रसव पीड़ा से मुक्ति मन्त्र

बिना हयगम मार्गेण नास्ति सिद्धिः कलौ प्रिये।

प्रयोग विधि—सहदेई की जड़ शनिवार के दिन लाकर उस पर उक्त मन्त्र का २१ बार जप करें तत्पश्चात् प्रसूता की कमर में बाँध दे प्रसव पीड़ा कम होगी।

कष्टरहित प्रसव के लिए शुद्ध सात्त्विक वैदिक मन्त्र प्रयोग

कुबेर त्वं धनाधीश गृहे वे कमला स्थिता।
त्वं देवीं प्रेषयाशु त्व मद्गृहे ते नमो नमः॥

प्रयोग विधि—एक साफ कटोरी मंगा लें। उसमें गंगाजल भर लें और निम्न मन्त्र का २१ बार जाप करें। ध्यान रहे कि जाप के मध्य मध्यमा अंगुली बराबर जल में घूमती रहे। इसके बाद प्रसूति के लिए जाने वाली स्त्री इसे पी ले। प्रसव सामान्य होगा (Normal Delivery)

पुत्र ही उत्पन्न हो ऐसा मन्त्र

ॐ एकदन्त महाबुद्धि सर्वसौभाग्य दायकः।
सर्वसिद्धि करो देवी गौरी पुत्र विनायकः॥

प्रयोग विधि—जिन माताओं के केवल कन्याएँ ही उत्पन्न होती हों पुत्र नहीं होता हो उन्हें उक्त मन्त्र का २१ दिन तक जप करना चाहिए। इसके पश्चात् ऋतुकाल में पलास का एक पत्ता बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर ऋतुकाल के पहले दिन तो फिर दूसरे दिन पुन: एक पत्ता बछड़े वाली गाय के दूध में पीस कर लें। इसमें पत्ता डण्ठल सहित पूरा पीसकर लेना है इस प्रकार तीन दिन तक यह पत्ता लेना है ऐसा करने से जो भी सन्तान उत्पन्न होगी वह पुत्र ही होगा।

पुत्र प्राप्ति हेतु मन्त्र

कौशल्या सश्रुवेयेन पुत्रणा मित तेजसा:।
यथा वरेण देवनामि युक्त वज्र पाणिना॥

प्रयोग विधि—यह मन्त्र श्रीराम को समर्पित है। भगवान् श्रीराम के भक्त इस मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जितना जप कर सके करें तो पुत्र प्राप्ति होगी।

पुत्र प्राप्ति हेतु दस सुगम मन्त्र

१. **ॐ गोदाय नमो नम:।**
२. **ॐ सन्तानाय नम:।**
३. **ॐ सन्तानाय नमो नम:।**
४. **ॐ विचाशय नमो नम:।**
५. **ॐ सुखाय नमो नम:।**
६. **ॐ हरये नम:।**
७. **ॐ स्वाश्य नम:।**
८. **ॐ शिशुया नम:।**
९. **ॐ कांति नम: नम:।**
१०. **ॐ शुभम् नम: नम:।**

इन मन्त्रों में से किसी भी मन्त्र का चयन कर लें और जप जितना कर सके करें; पुत्र प्राप्ति की कामना पूर्ण होगी।

पुत्र प्राप्ति हेतु तान्त्रिक मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं आसि आउसा बुलु हुलु हुलु।
मुलु मुलु इच्छिय में कुरू कुरू स्वाहा।।

प्रयोग विधि—६ दिन में प्रतिदिन ४ हजार मन्त्र जपते हुए कुल २४,००० मन्त्र जपने हैं। जब भी मन्त्र जपने बैठें धूप-दीप अगरबत्ती कर दें और यह मन्त्र २४ हजार फूलों पर एक मन्त्र एक फूल पर जपते जायें। बाद में फूल या पुष्पों को गंगा नदी में प्रवाहित कर दें या आपके गाँव या शहर के ही किसी कूप अर्थात् कुएँ में डाल दें। ऐसी नदी या तालाब में नहीं डालें जिसमें पानी कम हो या नहीं हो और बाद में पुष्प पैरों में जाए ऐसा नहीं करें। प्रयोग पूर्ण होने पर निःसन्देह प्रयोगकर्त्ता को पुत्र की प्राप्ति होती है; वंश चलता है।

पीड़ारहित प्रसव के लिए तान्त्रिक मन्त्र

गच्छ गौतम शीघ्र त्वं ग्रामेषु नगरेषु च।
अशनं वसनं चैव ताम्बूलं तन्त्र कल्पय।।

प्रयोग विधि—श्वेत दूर्वा के ३ टुकड़े हाथ में रखकर उपर्युक्त मन्त्र का सात बार उच्चारण करें और इन टुकड़ों को महिला के सिर के बालों के साथ उलझा दें। इससे प्रसव सुविधाजनक व सुरक्षित होगा।

सुखपूर्वक प्रसव हेतु भोजपत्र पर मन्त्र

ऐं ह्रं ह्रां ह्रू ह्रैं ह्रौं हः।

प्रयोग विधि—केसर से भोजपत्र पर इस मन्त्र को श्रद्धापूर्वक लिखे और एक बार गर्भिणी स्त्री को दिखाकर उसके बिस्तर के नीचे रख दे सुखपूर्वक शिशु का जन्म हो जायेगा।

शीघ्र प्रसव हेतु अभिमन्त्रित दूध मन्त्र

ऐं ह्रीं भगवती भरमालिनी चल चल भमाय।
पुष्पं विकासय-विकासय स्वाहा।

प्रयोग विधि—यदि कोई गर्भिणी स्त्री कष्ट से दुःखी हो और प्रसव

नहीं हो रहा हो तब उक्त मन्त्र पढ़कर दूध को अभिमन्त्रित कर स्त्री को पिला दे तो तुरन्त प्रसव हो जाता है। यह मन्त्र मात्र २१ बार जपने से सिद्ध हो जाता है और सिद्ध होने पर मात्र ३ बार पढ़कर २०० ग्राम दूध में आधा ग्राम केसर पीस कर उबाल कर तीन बार यह मन्त्र पढ़कर गर्भिणी को नौ मास पूरा होने पर Delivery Due Date के दिन एक बार पिला दे तो तीन-चार घण्टे बाद सुखपूर्वक प्रसव हो जायेगा।

शीघ्र प्रसव हेतु अभिमन्त्रित जल मन्त्र

अस्ति गोदावरी तीरे जम्भा का नाम राक्षसी।
तस्या स्मरेण मात्रेण विशल्या गर्भिणी भवेत्॥

प्रयोग विधि—काँसे की थाली पर दस बार चक्रव्यूह तथा अर्जुन का नाम लिखकर इस मन्त्र को लिखे तथा धूप-दीप दे और थाली में जल डालकर उक्त मन्त्र को मात्र तीन बार पढ़े तत्पश्चात् गर्भिणी को पिला दें। प्रसव शीघ्र होगा।

मन्त्र— लंका खोलो रावण बांधो दुश्मन मुख आग लगाओ।
सब देही के बांध खिलाऊँ।
जैसे मातु कौशिल्या पुत्र रामचन्द्र जन्माया।
देवी कामरू कामाख्या गुरु काली माई की दुहाई।

प्रयोग विधि—अपने निकटवर्ती किसी कुएँ से एक हाथ का खींचा हुआ जल लायें। ३ से १३२ बार अभिमन्त्रित करके गर्भिणी स्त्री को पिलाएँ और इसी जल से वह अपनी आँखों को भी धोले तो इसके प्रभाव से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

卐 卐

सब धोखा दे सकते हैं; मन्त्र नहीं

मन्त्र महान हैं, वे अकेले में भी मदद करते हैं तथा इस जन्म में भी और मरने के बाद भी मनुष्य की सहायता करते हैं। ग्रह और उनकी स्थिति ही महत्त्वपूर्ण है। जन्म के समय विभिन्न ग्रहों की स्थिति ही जीवन की दिशा निर्धारित करती है। सूर्य नेत्र में बैठकर देखने की शक्ति प्रदान करता है। चन्द्रमा शरीर के अन्दर जल का संचालन करता है। बोलने, सुनने और रक्त संचालन के कार्य मंगल से नियन्त्रित होते हैं। बुध हृदय का संचालन करता है तो शुक्र जीभ और जननेन्द्रियों का स्वामी है। जो ग्रह खराब होता है और जिस अंग का स्वामी होता है उसी अंग को रोग देकर बेकार कर देता है। खराब ग्रहों से मुक्ति मन्त्रों से होती है। डॉक्टर, ग्रह के कारण होने वाले रोगों नपुंसकता, मासिक धर्म सम्बन्धी अनियमितता एवं गर्भरोगों को हो सकता है ठीक न कर सके परन्तु मन्त्र यह कार्य कर सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में पुत्र प्राप्ति एवं अन्य प्रयोगों हेतु जितने भी मन्त्र प्रयोग एवं व्रत-अनुष्ठान लिखे गए हैं सभी सत्य हैं, फलदायक हैं, श्रेष्ठ हैं और इनमें कई तो विश्वस्त लोगों के द्वारा बार-बार अनुभूत भी हैं। तथापि यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ये सबको समान रूप से फल देंगे ही, या तत्काल ही फल देंगे। तत्काल फल न हो तो बार-बार प्रयोग करना चाहिए। एक ही दवा एक रोगी को तत्काल लाभ पहुँचाती है, दूसरे को देर से पहुँचाती है और किसी को उससे कुछ भी लाभ नहीं होता है। इसी प्रकार देवाराधन भी प्रारब्ध की सहज, कठिन या अत्यन्त प्रबल प्रतिबन्धकता के अनुसार कोई तुरन्त नवीन प्रारब्ध बनकर फल दे देता है कोई देर से और कोई बहुत देर से फल देता है एवं कोई नहीं भी देता। पूर्वनिर्मित प्रारब्ध की

निर्बलता या प्रबलता ही इसमें प्रधान कारण है।

एक प्रसिद्ध महात्मा हुए जिन्होंने अर्थ की प्राप्ति के लिए गायत्री के पूरे चौबीस पुरश्चरण किए। बार-बार पुरश्चरण करते, परन्तु फल कुछ भी दिखायी नहीं देता था, तथापि उनकी श्रद्धा नहीं घटी, न धीरज ही छूटा और न वे उकताये ही और पुरश्चरण करते ही रहे। जब चौबीस पुरश्चरण पूरे हो गए और कोई फल प्रत्यक्ष नहीं दिखाई दिया तब उनको गायत्री देवी पर तनिक भी अश्रद्धा तो नहीं हुई, क्योंकि वे परम आस्तिक और शास्त्र विश्वासी थे। परन्तु उनके गायत्री पुरश्चरणों के द्वारा पवित्र हुए विशुद्ध हृदय में वैराग्य उत्पन्न हो गया और वे सर्वस्व त्याग करके सन्यासी हो गए। संन्यास सर्वत्यागमय होता है और यह यथार्थ सर्वत्याग एक 'महान पुण्यकार्य' होता है। अतः संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् गायत्री देवी ने प्रकट होकर उनसे वर मांगने के लिए अनुरोध किया। संन्यासी महात्मा ने कहा—'माता! मैंने चौबीस पुरश्चरण श्रद्धा विधि सहित किये, आपने दर्शन नहीं दिये। अब मेरे संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् आपके प्रकट होने का क्या कारण है? गायत्री देवी ने कहा—'वत्स! तुम्हारे पच्चीस ब्रह्महत्या के पाप थे, चौबीस पुरश्चरणों से उनमें से चौबीस महापापों का प्रायश्चित हो गया। एक पुरश्चरण और कर लेते तो प्रतिबन्धक हट जाता और मैं प्रकट हो जाती परन्तु तुमने वह नहीं किया। अब तुम्हारा यह सर्वत्यागरूप संन्यास महान पुण्य कार्य होने से इसके फलस्वरूप पच्चीसवीं ब्रह्महत्या के महापातक का भी प्रायश्चित हो गया। अब तुम नवीन फल प्राप्त करने के अधिकारी हो गये हो। इसी से मैं अब प्रकट हो गयी। संन्यासी महात्मा ने कहा—'माता! अब तो मैं सर्वत्यागी सन्यासी हूँ। न मेरे मन में कोई कामना है, न मुझे कोई आवश्यकता ही है। बस आपकी कृपा बनी रहे।

इस कथा से यह सिद्ध होता है कि प्रतिबन्धक की प्रबलता से देवाराधन का मनोवाञ्छित फल तत्काल न मिलने पर भी लाभ तो निश्चित रूप से होता है।

मन्त्रों में आज भी उतनी ही शक्ति है जितनी प्राचीनकाल में थी। अन्तर केवल इतना ही हुआ कि वर्तमान में मनुष्य कुतर्क करके, अश्रद्धा

करके इनकी शक्तियों को पहचान नहीं पाते। मैंने पढ़े लिखे व्यक्तियों पर एक सर्वेक्षण किया तो २ प्रतिशत लोगों का ज्योतिष, मन्त्र, तन्त्र में विश्वास पाया जबकि उसमें ९० प्रतिशत आस्तिक थे। यानि पूर्ण आस्तिक व्यक्तियों को भी यह विश्वास नहीं होता तो फिर नास्तिक तो क्या करेंगे। बस अब तो आम धारणा यही है कि पहले चमत्कार दिखाओ तो फिर नमस्कार करेंगे। पहले नमस्कार करने वाले २ प्रतिशत ही हैं। असाध्य रोग भी यदि प्रभु कृपा हो तो ठीक हो जाते हैं और पुरुष बलिष्ठ होकर पुत्र ही पैदा करता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने मानस में लिखा है—

मूक होइ वाचाल पंगु चढ़ई गिरिवर गहन।
जासु कृपा सो दयाल द्रवउ सकल कलिमल दहन॥

卐 卐

मन्त्र जप स्वयं करना श्रेष्ठकर

पुस्तक के पाठकों से में यह निवेदन करना चाहूँगा कि पुत्र प्राप्ति हेतु मन्त्र जप स्वयं करें। ब्राह्मण द्वारा आप सन्तान प्राप्ति हेतु विभिन्न मन्त्रों से जपादि कराते हैं। यह पवित्र कार्य आप करें तो कोई आपत्ति नहीं है इससे लाभ ही है। परन्तु आपको जानकारी के लिए मैं यह अवगत कराना चाहता हूँ कि यदि आप स्वयं इस पुस्तक में बताये गए पुत्र प्राप्ति के मन्त्रों का आपकी इच्छानुसार योग्य गुरु के मार्गदर्शन से चयन कर जपेंगें तो शीघ्र ही पुत्र प्राप्ति की कामना पूर्ण होती है। आपकी अति विशिष्ट जानकारी के लिए वेदशास्त्र विहित तथ्य बताना यहाँ पर मैं उचित समझता हूँ कि देवराज इन्द्र का इन्द्रासन छिन जाने पर इन्द्र ने स्वयं स्तुति एवं जपादि किए थे। जब इन्द्र स्वयं अपने लिए कर सकते हैं तो आप देवराज इन्द्र से तो बड़े नहीं है जो कि समय नहीं मिले और यह तथ्य और बता दूँ कि यदि वास्तव में आपकी पुत्र प्राप्ति की लालसा है तो समय तो निकाला जा सकता है।

पुत्र प्राप्ति में भी दो प्रकार के दम्पत्ति होते हैं—एक तो जो होगा वो हो जायेगा और दूसरे वे दम्पत्ति जो लक्ष्य के पीछे पड़ जाते हैं और औषधि, मणि, मन्त्र तीनों का सहारा लेकर लाखों रुपये खर्च करके भी पुत्र प्राप्त करके ही चैन लेते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि—महत्त्वाकांक्षा उस खारे पानी के समान है जिसे व्यक्ति जितना अधिक पीता है उतनी ही प्यास लगती है।

"Ambition is just like a saltywater to the thirsty one more gets one more desire."

ब्राह्मण द्वारा जप कराने का लाभ तो मिलता ही है इस तथ्य को अस्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि ब्राह्मण आपके नाम से संकल्प

लेकर आपके एवं आपके परिवार की सुख समृद्धि हेतु जप करते हैं परन्तु सम्पूर्ण एवं त्वरित गति से जप का पूरा-पूरा लाभ ब्राह्मण द्वारा जप कराने से नहीं मिल पाता है, यह कटु सत्य है। एक सीधे से उदाहरण द्वारा मैं आपसे निवेदन करूँ कि यदि आप बीमार हैं या किसी रोग से ग्रसित हैं तो आप स्वयं दवा खायेंगे तभी तो आप ठीक होंगे। ब्राह्मण के द्वारा आपके नाम से दवा खाने से दवा धीमी गति से आयुर्वेद के समान लाभ पहुँचायेगी और आपके द्वारा आपके उदर में गयी दवा दूसरे दिन ही आपको लाभ दे देगी। हाँ, यदि आपकी बीमारी अधिक पुरानी है तो आपको लम्बे समय तक दवा लेनी पड़े अर्थात् बहुत अधिक जप करने पर फलित हो। अतः पुत्र प्राप्ति के इच्छुक सभी भक्तगण से मेरा करबद्ध निवेदन है कि कम से कम निम्न मन्त्र—

ॐ क्लीं ॐ देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥

को अवश्य जपते रहें। उक्त मन्त्र का जप शीघ्र फलित भी होगा। यह जप एन्टीबायोटिक दवा है अर्थात् Side effect भी नहीं है, हानि नहीं होगी, लाभ ही होगा और बाल कृष्ण को आपके घर आना ही पड़ेगा। कहा भी है— ''ईश्वर के यहाँ देर है अंधेर नहीं'' अतः कन्या के माता-पिता निराश होकर बैठें नहीं, इस पुस्तक को पढ़कर पुत्रोत्पत्ति का एक प्रयास और करें भगवान् निश्चित सफलता देगा। कहा भी है—"God help those who help themselves."

卐 卐

पुत्र प्राप्ति हेतु व्रत एवं अनुष्ठान

व्रत—उद्देश्य विशेष की प्राप्ति के लिए निराहार रहना, एक समय भोजन करने का संकल्प व्रत कहलाता है।

अनुष्ठान—किसी विशेष मन्त्र से फल प्राप्त करने के लिए जो आयोजन किया जाता है वह अनुष्ठान कहलाता है।

पुत्र प्राप्ति हेतु व्रत

वे दम्पत्ति जो पुत्र प्राप्ति की तो प्रबल एवं दृढ़ कामना रखते हैं परन्तु उनसे मन्त्र जप नहीं होते हैं या धन के अभाव में ब्राह्मण से भी नहीं करवा सकते इसी प्रकार अनुष्ठानादि भी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने से नहीं करा सकते तो उन्हें व्रत-उपवास का सहारा लेना चाहिए।

मात्र एक वर्ष तक २४ एकादशी का उपवास करने से पुत्र प्राप्ति

किसी भी मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी से उपवास प्रारम्भ करके मात्र २४ एकादशी उपवास रखें। उपवास में फल, दूध कुछ भी सेवन नहीं करे, केवल जल पीयें और निर्जला एकादशी को जल भी नहीं पीयें। इस प्रकार पति-पत्नी दोनों यदि कुछ भी जप, तप, अनुष्ठान नहीं करें और इस प्रकार २४ एकादशी प्रत्येक शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष की एक एकादशी को उपवास करके पुत्र प्राप्ति हेतु उपवास का फल प्रभु को अर्पण कर दें तो पूर्व जन्मों के महापापों का नाश होकर पुत्र उत्पन्न हो जायेगा। इस प्रयोग में तो आपको किसी प्रकार के धन व्यय की आवश्यकता नहीं है, न ही मन्त्र जप करने पड़ रहे हैं। आपकी जानकारी के लिए अवगत करा दूँ इन २४ एकादशी में पुत्रदा एकादशी भी आयेगी और निर्जला एकादशी भी, पुत्रदा एकादशी तो

पुत्र प्रदान करेगी ही परन्तु निर्जला एकादशी के उपवास के बारे में कहा है— ''सौ सजला एक निर्जला'' अर्थात् १०० एकादशी का उपवास करो और एक निर्जला एकादशी बिना जल के करो, बराबर पुण्य है। इतना पुण्य संचय होगा तो आखिर तो पूर्वजन्म के पाप नष्ट ही होंगे और पुत्र मिलेगा।

उपवास नियम—यदि आप इतना त्याग करते हैं तो मैं यह और बता दूँ कि चौबीसों एकादशी में हो सके तो मौन ही रखें यानि मौन व्रत उपवास के दिन ले लें। किसी से मिथ्या भाषण नहीं करें और उपवास के दिन झूठ नहीं बोलें। एक वर्ष में ही एकादशी माता आपकी 'गोद भर देगी। यह प्रयोग बहुत से दम्पत्तियों ने मेरे कहने पर किया और पुत्र प्राप्ति होने पर मुझे 'गुरु' ही मान लिया। एकादशी के इस व्रत की प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है।

पुत्र प्राप्ति हेतु श्री गणपति के व्रत का विधान

गणेश चतुर्थी या बहुला चौथ—भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी।

करवा चौथ—कार्तिक कृष्ण चतुर्थी।

तिल चौथ या संकट चौथ—माघ कृष्ण चतुर्थी।

उपरोक्त तीनों चतुर्थी के व्रत-विधान एक समान हैं। व्रत-उपवास करने वाले स्त्री-पुरुष प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त होकर अपने निकट स्थित गणपति के मन्दिर में जाकर गणेश जी के सम्मुख निम्नानुसार प्रसाद रखे—

गणेश चतुर्थी के दिन—चूरमे के लड्डू (आटे, घृत एवं शक्कर से निर्मित)।

करवा चौथ—दस दीपक (करवे) पकवान से भरे।

तिल चौथ—गुड़ व तिल्ली से निर्मित लड्डू।

फिर गणेश जी को दोनों पति-पत्नी अर्घ्य दें, गणपति जी को प्रणाम करके पुत्र प्राप्ति की कामना करे, चतुर्थी तिथि को अर्घ्य दें। तथा चन्द्रमा को सात बार अर्घ्य दिया जाता है। चन्द्रमा को अर्घ्य देने के बाद गणेश जी को प्रणाम कर पुत्र की कामना पुनः करें। फिर ब्राह्मणों को भोजन कराएँ एवं दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें, यही चतुर्थी व्रत की विधि है। उपरोक्तानुसार व्रत करने से पुत्र की मनोकामना पूर्ण होती है।

पुत्र-प्राप्ति हेतु भगवान् सत्यनारायण (श्री विष्णु) का पूर्णिमा व्रत

पुत्र प्राप्ति हेतु भगवान् श्री सत्यनारायण (श्री विष्णु) का व्रत जगत विख्यात है। इस व्रत से सन्तान प्राप्त होती है यह तो व्रत कथा में ही स्पष्ट है। इस प्रकार विधि-विधान से पूर्णिमा का व्रत प्रारम्भ कर दें तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है।

प्रदोष व्रत

प्रत्येक मास में दो प्रदोष आते हैं—एक शुक्ल पक्ष की एकादशी के बाद और दूसरा कृष्ण पक्ष की एकादशी के बाद। महाबली रावण जैसे भक्त ने प्रदोष में व्रत-उपासना करके सब कुछ सिद्धियाँ प्राप्त कर लीं तो पुत्र प्राप्ति तो कोई बड़ा कार्य नहीं है।

नोट—वैष्णवों को तो विशेष रूप से निर्देशित करना चाहूँगा कि यदि पुत्र नहीं है तो दोनों एकादशी, दोनों प्रदोष एवं पूर्णिमा यह पाँच व्रत-उपवास एक माह में करना प्रारम्भ कर दें, इसमें दोनों एकादशी का तो निराहार और दोनों प्रदोष एवं पूर्णिमा के दिन एक समय भोजन करें। मास में ये पाँच ही व्रत पवित्र हैं। वैसे तो पूरे वर्ष बारह ही महीने व्रतों का उल्लेख है परन्तु ये पाँच दिन जो कोई भी वैष्णव व्रत नहीं करता है तो सच्चे मायने में वह वैष्णव ही नहीं है। एकादशी के दिन तो अन्न भक्षण महापाप माना गया है। अत: आप कुछ भी नहीं करें, ये पाँच व्रत प्रारम्भ करने का संकल्प ले लें तो आपका कार्य संकल्प से ४० दिन में पूरा हो जायेगा। और पुत्र ही होगा, संकल्प टूटना नहीं चाहिए। मेरे को तो हिमालय योगी ने शिष्य ही तब बनाया जब ये पाँच व्रत करने का संकल्प लिया। इससे आप अनुमान लगा लें कि इन व्रतों का कितना महत्त्व होगा। ये पाँच व्रत-उपवास महीने में कोई सद्भावना से कर ले और फिर पुत्र नहीं हो ऐसा सुनना आज तक तो मेरे कानों में कोई नहीं लाया। प्रयोग करके देखें परन्तु परीक्षा के लिए नहीं। सद्भावना एवं पुत्र प्राप्ति की मंगलकामना के लिए।

बृहस्पतिवार व्रत

पुत्र उत्पन्न करने का कारक गुरु ग्रह है अत: प्रत्येक बृहस्पतिवार को नियमपूर्वक व्रत करके केले के वृक्ष की पूजा करें तो बृहस्पति ग्रह प्रसन्न

होकर पुत्र प्रदान करते हैं।

पुत्र प्राप्ति हेतु विभिन्न अनुष्ठान

जैसा कि स्पष्ट किया जा चुका है—''वाञ्छित मन्त्र से यथेष्ठ लाभ प्राप्त करने हेतु जो आयोजन किया जाता है वह अनुष्ठान कहलाता है''

पुत्र प्राप्ति हेतु निम्न अनुष्ठान मुख्य हैं—

सन्तान गोपाल अनुष्ठान

इस अनुष्ठान में मन्त्र—

ॐ क्लीं ॐ देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥

का तीन बार पृथक-पृथक सवा लाख जप एवं दशांश हवन, दशांश तर्पण, दशांश मार्जन, दशांश ब्राह्म भोजन का विधान के साथ सन्तान गोपाल स्तोत्र पाठ हवन एवं हरिवंश पुराण श्रवण सम्मिलित है।

१. पुत्र कामेष्टि यज्ञ जिसमें एक हजार कमल पुष्पों से हवन विधान है।
२. पुत्र प्राप्ति हेतु नवचण्डी, शतचण्डी, सहस्रचण्डी, लक्षचण्डी यज्ञानुष्ठान। रुद्रयागहवन, महारुद्री हवन, महामृत्युंजय हवनादि अनुष्ठान।
३. श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर जन्म उत्सव एवं श्री गोपाल सहस्रनाम हवन अनुष्ठान।
४. रूद्राष्टाध्यायी सहस्रधारा अभिषेक अनुष्ठान।
५. पुरुषसूक्तं मन्त्र से श्रीकृष्ण अभिषेक अनुष्ठान।
६. बृहस्पति महापूजादि अनुष्ठान।
७. श्रीगणपति महायज्ञ अनुष्ठान।

इस प्रकार इन आठ अनुष्ठानों में से कोई भी अनुष्ठान करवा सकते हैं। विदित रहे अनुष्ठान में यज्ञादि कर्म होने से व्यय तो होता ही है। अतः आपकी स्थिति सुदृढ़ नहीं है तो कोई जरूरी नहीं है कि अनुष्ठानादि करायेंगे तो ही पुत्र होगा ऐसी स्थिति में व्रत-उपवास का नियम ही श्रेष्ठ फलदायी है।

पुत्र प्राप्ति हेतु नौ प्रकार की मणि

मणि शब्द का स्पष्टीकरण—किसी कार्य विशेष में सहायता प्रदान करने वाला साधन, उपकरण या माध्यम मणि कहलाती है। मणि के बिना कोई भी कार्य हो ही नहीं सकता चाहे सब कुछ आपके पास है। उदाहरण के लिए एक वास्तुशास्त्री के लिए कम्पास अर्थात् दिशासूचक यन्त्र मणि है, डॉक्टर के लिए स्टेथिस्कोप, इंजीनियर के लिए उसके प्रगणक, पुलिस के लिए रिवाल्वर, बन्दूक, डण्डा, हथगोले, हथियार मणि है क्योंकि इसके बिना पुलिस और सामान्य व्यक्ति बराबर है, वकील के लिए कानून की पुस्तक मणि है। इसी प्रकार मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री प्राप्त करने के लिए नौ प्रकार की मणि निम्नानुसार है—

१. प्रथम मणि : मन्त्र-व्रत अनुष्ठान
२. द्वितीय मणि : इष्ट कृपा प्राप्त करना
३. तृतीय मणि : ताबीज
४. चतुर्थ मणि : रत्न-मणि
५. पंचम् मणि : साधु-संतों का आशीर्वाद, माता-पिता का आशीर्वाद
६. षष्टम् मणि : टोना-टोटका
७. सप्तम् मणि : यन्त्र
८. अष्टम् मणि : गुरु कृपा, गुरु आशीर्वाद
९. नवम् मणि : स्त्री-पुरुष संयोग एवं औषधि

पुत्र प्राप्ति हेतु प्रथम मणि : मन्त्र-व्रत अनुष्ठान

प्रथम मणि का विस्तृत स्पष्टीकरण इस पुस्तक के प्रथम भाग में

किया गया है।

पुत्र प्राप्ति हेतु द्वितीय मणि : इष्ट कृपा प्राप्त करना

पुत्र प्राप्ति हेतु इष्ट कृपा प्राप्त होना बहुत अनिवार्य है। मन्त्र जप, व्रत-अनुष्ठान नहीं हो सके तब भी इष्ट कृपा निम्नानुसार प्राप्त की जा सकती है—

- ✤ पुत्र प्राप्ति हेतु गोर्वधन पर्वत (उत्तर प्रदेश में मथुरा से १५ कि.मी. दूरी पर) की २४ कि.मी. की परिक्रमा लगाना। यह परिक्रमा प्रत्येक मास की दोनों एकादशी एवं श्रावण मास में पूरे मास विशेष रूप से लगती है। वैसे तो किसी भी दिन जाकर आप परिक्रमा लगा सकते हैं परन्तु एकादशी एवं श्रावण मास में हजारों श्रद्धालु यहाँ परिक्रमा लगाते हुए मिल जायेंगे।

  यहाँ गरीब से लगाकर अमीर तक को दण्डवत परिक्रमा करते हुए देखा जा सकता है। यदि आपने गोवर्धन मुख की पूजा करके यह मन्नत भी मान ली कि मेरे पुत्र होने पर दण्डवत परिक्रमा लाऊँगा तब भी पुत्र हो जायेगा। यह वही पर्वत है जिसे श्रीकृष्ण भगवान् ने अपनी कनिष्ठा अंगुली पर धारण किया था। यहाँ की एक परिक्रमा लगा ले तो प्रतिमाह जाने का मन करता है। मथुरा, वृन्दावन में बांकेबिहारी मन्दिर, रेवतीरमण की मिट्‌टी, यमुना नदी, नन्दगाँव, बरसाना, गोकुल इनके दर्शन कर भी आप पुत्र कामना पूरी कर सकते हैं। गोवर्धन पर्वत परिक्रमा का पुत्र प्राप्ति की दृष्टि से अत्याधिक महत्त्व है। अत: इस परिक्रमा के करने से अवश्य ही इष्ट कृपा प्राप्त होती है।
- ✤ राजस्थान राज्य में नाथद्वारा में श्रीनाथ जी श्रीकृष्ण रूप में साक्षात् विराजमान हैं इनके दर्शनकर मन्नत माँगने मात्र से पुत्र प्राप्ति सम्भव है। श्रीनाथ जी के दर्शन मात्र से इष्ट कृपा होकर पुत्र-प्राप्त होता है।
- ✤ यमनोत्री (उत्तरांचल) में यमुना नदी की पूजा, गर्मकुण्ड में चावल पकाकर भोग लगाना, यह वह स्थान है जहाँ पूजा करने वाले की गोद कभी सूनी नहीं रही है।

- गंगोत्री (उत्तरांचल) में भागीरथी मन्दिर जहाँ से गंगा निकलती है, दर्शनमात्र से पुत्रोत्पत्ति होती है।
- वैष्णो देवी (जम्मू) में माँ के दर्शन करने वाले की गोद कभी सूनी नहीं रही। एक बार आप दर्शन करने का संकल्प घर बैठे ही कर लें कि हे माँ मेरे पुत्र होते ही आपके दर्शन करने आऊँगा तब भी पुत्र उत्पन्न हो जायेगा। अनेकों दम्पत्तियों ने वैष्णो देवी (जम्मू) माँ का साक्षात् चमत्कार देखा है। यहाँ पर माँ प्रत्यक्ष विराजमान है।
- तिरुपति बाला जी (आन्ध्रप्रदेश) दर्शन करें एवं मन्नत मांगे की हे बालाजी! सब जगह से हार-थक-कर आपकी शरण में आये हैं हमें पुत्र प्रदान कर देंगे तो दोनों पति-पत्नी सारे केश आपको अर्पण कर देंगे। यहाँ पर मैंने प्रत्यक्ष देखा है कि ऐसी मन्नत प्रतिदिन सैकड़ों दर्शनार्थी मांगते हैं और पूरी होती है। स्त्रियाँ जिनके तो केश अर्थात् बाल ही शोभा है फिर भी यहाँ मन्नत पूरी होते ही समस्त केश उतारकर जाती हैं, कितनी आस्था है आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं।

  ऐसा भी विधान कहा गया है कि जो स्त्री यहाँ केश पूरे उतारकर जाती है और सिर में यदि चार माह तक बादाम के तेल की मालिश कर ले तो जिन्दगी में इतने अच्छे केश, लम्बे केश नहीं देखें होंगे, आ जाते हैं और आजीवन बादाम के तेल की मालिश से सिरदर्द नहीं होता है तो एक पंथ दो काज। पुत्र भी आ गया और ४ माह बाद बालों की सुन्दरता भी; बस ४ माह ही तो गंजापन रहता है। कई स्त्रियों को केश लोचन करते प्रतिदिन यहाँ देखा जा सकता है, इसी से स्पष्ट है कि तिरुपति बालाजी की शरण में आने के बाद आपकी मनोकामना पूर्ति नहीं हो, यह असम्भव है। किसी भी दिन मन्दिर परिसर में प्रवेश के बाद लम्बी कतार के कारण ५ से ६ घंटे खड़े रहने के बाद तिरुपति बालाजी के दर्शन होते हैं, अब आप स्वयं जाकर वास्तविकता देख लें और इष्ट कृपा प्राप्त कर पुत्र के स्वामी बनें।
- पुत्र प्राप्ति की लालसा अत्यधिक प्रबल है तो ब्रज की ८४ कोस की

परिक्रमा लगायें। ब्रज भूमि में भगवान् श्रीकृष्ण ने पूरा जीवन व्यतीत किया उनके चरण कमलों की रज आज भी विद्यमान है। रेवतीरमण इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जिसकी मिट्टी में कई साधु लोटते हुए मिल जायेंगे और गोवर्धन पर्वत की दण्डवत परिक्रमा लगाते हुए सैकड़ों करोड़पति, अरबपति मिल जायेंगे। ईश्वर के यहाँ गरीबी, अमीरी में भेद है ही नहीं। अतः ब्रज भूमि में भ्रमण करते हुए भगवान् कृष्ण की कृपा प्राप्त कर पुत्र प्राप्त करें।

❖ यदि आर्थिक स्थिति अत्यधिक कमजोर है ऊपर बताये गए किसी भी स्थान पर जाने के लिए पैसे ही नहीं है तब भी घर बैठे इष्ट कृपा प्राप्त कर सकते हैं। सवाई माधोपुर, राजस्थान में श्री श्री १००८ श्रीगणेश मन्दिर पो. गढ़रणत भंवर जिला-सवाई माधोपुर राज्य-राजस्थान, भारत में स्थित है यहाँ पर प्रतिदिन दुनियाँ में सर्वाधिक डाक आती है यह रिकार्ड है। देश-विदेश से यहाँ पर प्रतिदिन निमन्त्रण एवं अपनी समस्याओं के लिए गणेश जी को स्त्री-पुरुष पत्र द्वारा लिखते हैं। आप भी एक पोस्टकार्ड प्रत्येक बुद्धवार के दिन उक्त पते पर गणेशजी को लिखें, उसमें स्पष्ट वर्णित कर दें कि हे! गणपति में तो दीन-हीन मनुष्यों में अग्रगण्य हूँ आपके दर्शन को भी नहीं आ सकता/सकती हूँ। अतः आप मेरी गोद भर दो, मुझे पुत्र प्रदान कीजिए, पुत्र प्रदान कीजिए, पुत्र प्रदान कीजिए। इस प्रकार श्रीगणेश जी से आप घर बैठे वर प्राप्त कर सकते हैं। श्री गणेश का यह स्थान भी बड़ा चमत्कारिक है। आप स्वयं अनुमान करें कि प्रतिदिन जहाँ सर्वाधिक डाक प्राप्त होती है और इस कारण डाकिये को १५ कि.मी. साइकिल चलाकर मन्दिर तक डाक देने जाना पड़ता है तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ चमत्कार है ही। न केवल पुत्र प्राप्ति हेतु वरना सभी समस्याओं हेतु श्रीगणेश जी को यहाँ पत्र लिखकर मनोकामना पूरी करें। मांगलिक आयोजन विवाह-उत्सव, जन्म-उत्सव आदि में यदि आप प्रथम निमन्त्रण यहाँ प्रेषित करेंगे तो बिना बाधा के कार्य पूरा हो जायेगा। प्रतिदिन १००० से

१,२०० के मध्य शहरों एवं गाँवों से यहाँ पर निमन्त्रण प्राप्त होते हैं। इस तथ्य को दूरदर्शन पर भी कई बार बताया गया है। अतः घर बैठे गणेशजी से इष्ट कृपा प्राप्त करे।

पुत्र प्राप्ति हेतु तृतीय मणि : ताबीज

बाजार में बने बनाये ताबीज—ताँबे, चांदी, सोने के मिलते हैं, यथा शक्ति ताबीज क्रय करके उस ताबीज में निम्नानुसार मन्त्र आदि लिखकर भरकर धूप-दीप देकर गले में धारण करें तब भी बिना मन्त्र जप किए पुत्र प्राप्त होता है।

मन्त्र— ॐ क्लीं ॐ देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पते।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥

भोजपत्र या कागज पर लिखकर ताबीज में भरकर स्त्री-पुरुष दोनों गले में बाँधें उसके बाद अपने धर्म का पालन करते रहें, पुत्र ही होगा।

सन्तान गोपाल मन्त्र जो कि पुस्तक के मन्त्र प्रयोग में ५१ श्लोकों का दिया है अतिसूक्ष्म अक्षरों में कागज पर लिखकर ताबीज में भरकर पति गले में धारण करे तथा पत्नी कमर पर बाँधे तो इस प्रयोग से भी पुत्र प्राप्ति में कोई सन्देह नहीं है।

अक्षय गोपाल कवच जो कि इस पुस्तक के मन्त्र प्रयोग में १० श्लोकों का दिया है, अतिसूक्ष्म अक्षरों में कागज पर लिखकर स्त्री बांयी भुजा तथा पुरुष दांयी भुजा में बाँधे तो पुत्र प्राप्ति होती है।

बृहस्पति कवच जो कि इस पुस्तक में मन्त्र प्रयोग में ७ श्लोकों का दिया है अतिसूक्ष्म अक्षरों में लिखकर ताबीज में भरकर गले में पति-पत्नी दोनों बाँधे तो पुत्र प्राप्ति होती है।

सन्तान गणपति स्तोत्र जो कि इस पुस्तक के मन्त्र प्रयोग में ६ श्लोकों का दिया है इसको कागज पर लिखकर ताबीज में भरकर स्त्री-पुरुष गले में बाँधे तो पुत्र प्राप्ति होती है।

नोट—उपरोक्तानुसार ताबीज में कोई भी एक मन्त्र, स्तोत्र, कवच भरकर ताबीज को धूप-दीप करे तथा दूध-जल से स्नान करायें फिर गले में

या भुजा में या कमर में जैसा भी लिखा है धारण करे तो यह ताबीजरूपी मणि भी पुत्र प्राप्ति में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

पुत्र प्राप्ति हेतु चतुर्थ मणि : रत्न मणि

पुत्र प्राप्ति हेतु रत्न, जवाहरात मणि भी अत्यन्त उपयोगी है। गुरु ग्रह पुत्र का कारक है। गुरु की प्रसन्नता के लिए पत्नी को सोने का मंगलसूत्र सदैव २४ घंटे धारण रखना चाहिए तथा पति को भी सोने की चेन गले में धारण करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त देवगुरु बृहस्पति की कृपा पाने के लिए पति-पत्नी दोनों को सफेद पुखराज सोने की अंगूठी में कम से कम सवा सात रत्ती का धारण करना चाहिए। पत्नी को बाँये हाथ के अंगूठे के पास वाली अंगुली में तथा पति को दाँये हाथ के अंगूठे के पास वाली अंगुली में बृहस्पतिवार के दिन निम्न मन्त्र को ५ बार अंगूठी पर पढ़कर अंगूठी को धूप-दीप देकर दूध-जल से स्नान कराके धारण करनी चाहिए। अंगूठी गुरुवार को प्रातः सूर्योदय से एक घण्टा पूर्व अच्छा शुभ मुहूर्त्त होता है उसी समय धारण करे ताकि गुरु की कृपा आप पर होकर अवश्य ही पुत्र प्राप्त हो। सफेद पुखराज क्रय करने की सामर्थ्य नहीं है तो उसका उपरत्न सुनहला पहन सकते हैं। सुनहला भी नहीं खरीदना चाहते हैं तो उसका विकल्प पीपल के वृक्ष की जड़ जो गुरु-पुष्य नक्षत्र के दिन खोद ले और उसे पीले कपड़े में ताबीज रूप में सिलकर पति दाँयी भुजा में तथा पत्नी बाँयी भुजा में बाँधे। पीपल के वृक्ष की जड़ में आपको कोई व्यय नहीं होगा और सफेद पुखराज जितना ही लाभ होगा। पीपल के वृक्ष में गुरु का साक्षात् निवास होता है।

यदि पुखराज, सुनहला, पीपल की जड़ कुछ भी धारण नहीं करना चाहते हैं तब भी सोना तो गले में २४ घण्टे पुत्रोत्पत्ति तक धारण करे ही रखें इसे उतार कर नहीं रखें। स्वर्ण के इस पीले एवं शुद्ध धातु से भी बृहस्पति अवश्य ही कृपा करते हैं, विदित रहे गुरुवार को सुबह सोना धारण करके उसे जब तक नहीं उतारें तब तक पुत्र नहीं हो जाता है। एक भी बार एक भी मिनट के लिए उतारने पर भी प्रयोग विफल हो जाता है।

पुत्र प्राप्ति हेतु पंचम मणि : साधु-संतों का आशीर्वाद, माता-पिता का आशीर्वाद

अपने व्यक्तिगत जीवन को जनसामान्य के समक्ष उद्धृत करना महत्त्वपूर्ण नहीं समझते हुए इतना ही कहना चाहता हूँ कि साधु-संतों का एवं माता-पिता का आशीर्वाद किसी भी कार्य में यथेष्ट लाभ प्रदान करता है। मैंने बाल्यावस्था में घर से ३ वर्ष भागकर हिमालय में योगियों की गोमुख गुफाओं में यथाशक्ति सेवा की है उसी का पुण्य प्रताप है कि आप सभी की कृपाओं का पात्र बन बैठा हूँ और देश-विदेश से कई स्त्री-पुरुष अपने दुःख-दर्द बताते हैं और मेरे पूज्य गुरु की कृपा से उनके सभी दुःख-दर्द दूर भी हो जाते हैं। पुनः मूल बिन्दु पर आता हूँ कि साधु-संतो की सेवा करें, माता-पिता की सेवा करें उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें तो निश्चय ही पुत्र प्राप्ति होती है।

प्रश्न—*साधु-संतो की सेवा करने कहाँ जायें? हम तो गृहस्थी हैं?*

उत्तर—आपको साधु-संतो की सेवा करने कहीं नहीं जाना है। जो भी साधु-संत आपके पास आये, आपके घर आये, या आपको भ्रमण के दौरान कहीं मिले तो उसका परिहास नहीं करें वरना साधु-सन्तों को यदि मौद्रिक दक्षिणा देना उचित नहीं समझते हैं तो भोजन कराकर उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

प्रश्न—*किसे साधु-संत मानें? क्या भगवा या पीले वस्त्र पहनने वाले सभी पुरुषों को साधु मान लें, चाहे वह साधु हो ही नहीं, फर्जी वेश बना रखा हो?*

उत्तर—साधु की पहचान के लिए मेरे पूज्य गुरुदेव शेलेन्द्र जी (४०० वर्षीय उम्र) ने कहा कि साधु से बोलो रामचरितमानस की एक चौपाई बोल दे। यदि सच्चा साधु होगा तो बोल देगा। रामचरितमानस ग्रन्थ किसी भी धर्म सम्प्रदाय के साधु-संतों से अछूता नहीं है। अतः रामचरितमानस की एक भी चौपाई गाने वाले को संत मान लें और उसको भोजन करायें, मरजी पड़े जितनी दक्षिणा दें।

मैं एक बार रेलगाड़ी से जा रहा था। दरवाजे पर एक साधु बैठा था वह जगह साफ करते हुए बोल रहा था—"नाथ सकल सम्पदा तुम्हारी। मैं सेवक समेत सुत नारी॥" यह चौपाई जैसे ही मेरे कान में पड़ी में तुरन्त उठ खड़ा हुआ और ट्रेन के दरवाजे की तरफ जाकर साधु को देखा तो उसको उठाकर अपनी सीट पर बिठाया। बाद में बातचीत की तो पता चला कि वह तो बहुत योगी पुरुष था। मैंने भरपेट भोजन कराया और दक्षिणा दी। इस प्रकार साधु छिपा नहीं रहता है और फर्जी आदमी पकड़ में आ ही जाता है। अतः सच्चा साधु वही है जो रामचरितमानस की एक चौपाई जानता हो। कलियुग में बहुत सीधी एवं सही पहचान साधु की है आप भी अपनायें और बन पड़े जितनी साधु-संतो की, माता-पिता की सेवा करें। उनके आशीर्वाद में वो शक्ति है जो परमात्मा के पास भी नहीं है।

पुत्र प्राप्ति हेतु छठी मणि : टोना-टोटका

टोना—टोना एक प्रकार का अनुष्ठान है। यह अनुष्ठान विभिन्न कार्यों के लिए भिन्न-भिन्न होता है। यह अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मन्त्रों से किया जाता है, क्योंकि पृथक-पृथक कार्यों के लिए पृथक-पृथक मन्त्र होते हैं तथा इसकी प्रयोग विधि विशेष प्रकार की होती है। जैसे पुत्र प्राप्ति, गर्भ दोष आदि अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मन्त्र एवं अनुष्ठान पुस्तक के अग्रभाग में दिये है, ये सब टोना ही है।

टोटका—टोटका के लिए किसी शास्त्रीय विधान, मन्त्र जाप, हवन, पूजन-अर्चन आदि कराने का प्रावधान नहीं है। टोटका बहुत ही सरल प्रक्रिया है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने दुःखों को मिटाने के लिए आसानी से कर सकता है। इसका उपयोग सदा ही मांगलिक भावना से मांगलिक कार्यों हेतु किया जाता है। चाहे वह स्वयं के लिए हो या परिजनों के लिए।

कलियुग में टोटका अत्यन्त प्रभावी एवं विचारणीय वस्तु है, क्योंकि आज के व्यक्ति के पास न तो इतना समय है और न इतना धैर्य है कि वह मन्त्रों से प्राप्त होने वाले फल का इन्तजार करें।

पुत्र प्राप्ति हेतु विभिन्न टोटके

नोट—टोटके गुप्त रूप से और अनटोके ही करें अन्यथा प्रभावी फल प्राप्त होने में संशय रहेगा।

❖ ताँबे के कवच में गुंजा की जड़ रखकर यदि कोई गर्भिणी स्त्री के गर्भ स्थापन होते ही प्रारम्भिक दिनों में ही (प्रथम मास में) धारण करे तो उसे पुत्र प्राप्त होता है।

❖ शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ और बलिष्ठ पति वाली स्त्री लक्ष्मणा की १ गोली प्रतिदिन गाय के दूध से २१ दिनों तक बराबर दोनों समय सेवन करे तो वह गर्भ धारण करती है।

❖ पति-पत्नी दोनों भगवान् सूर्य से प्रार्थना करें कि हमें पुत्र प्रदान करें और ऐसा करके नित्य प्रति सूर्य को जल (अर्घ्य) तब तक देते रहें जब तक कि पुत्र नहीं हो जाता है। इस प्रयोग से निश्चय ही पुत्र की प्राप्ति होती है।

❖ गर्भाधान से पूर्व पति पत्नी दोनों सवा पाँच किलो कोई भी फल खरीद कर गाय की पूजा करके गाय माता को खिला दे तथा गाय माता को कहे कि 'फल दिया फल देना' तो निश्चित रूप से पुत्र ही होगा।

❖ गर्भवती स्त्री यदि बैठकर कोई फल खा रही हो और वह छूटकर उसकी गोद में गिर जाए तो यह उस महिला के लिए अत्यन्त शुभ लक्षण है जिसके बच्चे नहीं है। यदि गोद में से ही यह फल उठाकर बिना टोके कोई ऐसी स्त्री खा ले जिसके बच्चे नहीं होते तो उसके लिए यह टोटका पुत्र प्राप्ति हेतु फलदायक है।

❖ गर्भधारण टोटका—विवाह के अनेक वर्षों बाद भी सन्तान नहीं होती है तो यह टोटका अवश्य करें—

मंगलवार के दिन कुम्हार के घर पति-पत्नी दोनों जायें और उससे प्रार्थना करके मिट्टी के बर्तन काटने वाला डोरा लेकर आयें। उसे किसी साफ गिलास में गंगाजल भरकर उसमें डाल दें। कुछ समय पश्चात् डोरे को निकाल लें और वह गंगाजल पति-पत्नी दोनों पी लें यह क्रिया केवल मंगलवार को ही करनी है। यदि सम्भव हो तो

यह क्रिया उसी मंगलवार को करे जब पत्नी के मासिक धर्म का ८वाँ १०वाँ या १२वां दिन हो। उदाहरणार्थ १ तारीख को ऋतुस्राव प्रारम्भ हुआ तो ८ तारीख १० तारीख या १२ तारीख को आने वाले मंगलवार के दिन यह क्रिया या टोटका करना है। तथा टोटका करने के बाद उसी मंगलवार की रात्रि पति-पत्नी गर्भाधान हेतु अपना धर्म पालन करें, निश्चित रूप से एक ही बार में गर्भाधान हो जायेगा। गर्भ की स्थिति बनते ही उस डोरे को हनुमानजी के चरणों में रख दें।

❖ सोमवार के दिन किसी भी जड़ी-बूटी बेचने वाले से या पंसारी की दुकान से शिवलिंगी का एक बीज एवं लक्ष्मणा बूटी का एक बीज ले आयें। इन पर २१ बार 'ॐ नमः शिवाय' का पाठ करके इन दोनों बीजों को पति सेवन कर ले तथा इसके पश्चात् रात्रि में अपने धर्म का पालन करें। यह सोमवार भी वही हो जो मासिकधर्म से ८ वां १० वां १२ वां या १४ वां दिन पड़े उससे भी गर्भाधान हो जायेगा।

❖ अगर पति-पत्नी रात्रि में अपने धर्म का पालन करने से पूर्व अपने मन को एकाग्रचित्त कर केवल यह सोचें की हमारे सन्तान होगी। प्रभु कृपा से हम पुत्रधन ही प्राप्त करेंगे। इसके बाद पुरुष अपने दाँये पैर के अंगूठे से स्त्री की योनि का स्पर्श करे उसके उपरान्त ही रमण करे तो पुत्र प्राप्त होता है। विदित रहे रमण शुक्ल पक्ष में ही एवं मासिक धर्म से ८, १०, १२, १४, १६ केवल इन ५ दिनों की रात्रि में ही करना है। ऐसा करने से निश्चित पुत्र होगा।

उदाहरणार्थ मासिक धर्म की तारीख १ है तो ८ तारीख १० तारीख १२ तारीख १४ तारीख एवं १६ तारीख की रात्रि को ही रमण करना है तथा इन तारीखों में शुक्ल पक्ष होना अनिवार्य है। केवल इस टोटके को पूरा कर लिया तो किसी भी मन्त्र, मणि, औषधि की आवश्यकता नहीं है। ध्यान रहे स्त्री-पुरुष इस टोटके को परिहास या हँसी में न लें (Take it seriously)

❖ प्रतिदिन पति व पत्नी दोनों में से एक को शिवजी के मन्दिर में जाकर जब तक पूजा करनी चाहिए तब तक पुत्र नहीं हो जाता। दोनों मन्दिर

में जा सकें तो अति उत्तम है। सोमवार के दिन जो भी शिवजी के मन्दिर में जाये तो शिवजी पर चढ़े हुए जितने भी चावल हैं उन्हें एकत्र करके लेकर आ जाये। इसके बाद उन्हें छाया में सुखाकर पीस ले और नियमपूर्वक प्रतिदिन थोड़ा सा पीसा पूर्ण अगले सोमवार तक दूध के साथ सेवन करें, गर्भाधान होगा एवं भगवान् शिव के प्रसाद से पुत्र ही होगा।

❖ मासिक धर्म से ८वें या १०वें दिन यानि ५ तारीख को ऋतुस्राव प्रारम्भ हुआ तो १२ तारीख को या १४ तारीख को दो बेदाग नींबू ले ले उसे हाथ से निचोड़कर भरपूर रस निकाल ले इसके बाद उसमें थोड़ा सा नमक स्वाद के अनुसार मिला ले। अब इसे भगवान् बालकृष्ण की मूर्ति के समक्ष रख दे। रात्रि को रमण से १५ मिनट पूर्व स्त्री इसे पी जाये। ध्यान रहे नींबू का यह द्रव्य पीते समय ही बनाना है, दिन में बनाकर नहीं रखना है। पीने के १५ मिनट पश्चात् पति के साथ पुत्र कामना से रमण करे तो निश्चय ही पुत्र होता है। इस टोटके की यह विशेषता है कि इसे एक बार ही करना है अन्यथा दोबार करने पर हानि होती है। इसका विस्तृत स्पष्टीकरण निम्नानुसार है—

यह नींबू का द्रव्य नमकयुक्त पीने से स्त्री को कमजोर होना है। और पुत्र ही उत्पन्न होता है इसलिए मासिक धर्म के बाद जब प्रथम बार रमण करें तभी यह प्रयोग करें, दूसरी बार रमण में नहीं क्योंकि पहली बार रमण का यदि बीज ठहर गया तो वह नींबू का रस उसे और पुत्र के बजाय पुत्री बना देगा। अतः यदि उक्त उदाहरण में ५ तारीख को मासिक स्राव हुआ और १३ तारीख तक एक भी बार रमण नहीं किया तो १४ तारीख को यह नींबू का रस नमक मिलाकर पीकर स्त्री रमण करें और यदि ११ तारीख तक एक भी बार रमण नहीं किया तो १२ तारीख की रात्रि को यह द्रव्य स्त्री पीकर रमण करें उसके बाद १४ तारीख को रमण के पूर्व नहीं पीना है। यदि फिर भी अगले माह मासिक धर्म आ जाये तो अगले माह एक बार प्रथम बार रमण पर यह प्रयोग कर सकती है। यह प्रयोग या टोटका पूर्णतया वैज्ञानिक है

क्योंकि नींबू का रस पीने से स्त्री कमजोर होकर पुरुष का Y ही मिलेगा। बस ध्यान यही रखना है कि शुक्ल पक्ष हो और मासिक धर्म का सम दिन ८ वां या १० वां हो और प्रथम बार ही यह प्रयोग करना है।

✤ गर्भ के ५३वें दिन से ७०वें दिन आने वाले शनिवार को गर्भिणी को १० ग्राम कायफल और गुड़ खिला दे, पुत्र प्राप्ति का अचूक प्रयोग है उदाहरणार्थ १ जनवरी को मासिक स्राव हुआ उसके बाद गर्भ रहा तो एक जनवरी से ५३वां दिन २२ फरवरी से १० मार्च तक आने वाले शनिवार में यह प्रयोग करें।

✤ गर्भ के ५३वें दिन से ७०वें दिन आने वाले मंगलवार को बहुत थोड़ा सा जायफल दूध के साथ पिला दे। तब भी लड़का होता है।

✤ बहुत प्रयास करने पर भी सन्तान नहीं होती है तो माता-पिता को कई ताने सुनने पड़ते हैं क्योंकि जनता के मुख को कोई पकड़ नहीं सकता है। शीघ्र सन्तान के लिए यह टोटका अत्यन्त सरल है। पत्नी शुक्रवार के दिन दो चने की रोटी बनाए, उस पर अच्छा सा घी लगा दे तथा उस पर कोई भी सूखी या भरवां सब्जी यथा आलू आदि इस प्रकार रख दे कि वह सब्जी दोनों फुलकों के मध्य रह जाये। इसके बाद पति-पत्नी रेलवे स्टेशन या बस स्टैण्ड के बाहर बैठने वाले किसी भी भिखारी या भूखे को अपने सामने ही खिला दे तथा उसे फल एवं यथायोग्य दक्षिणा दे और वापस चले आयें। और यदि पत्नी के ८वां १०वां १२वां १४वां या १६वां दिन हो तो रात्रि में अपने धर्म का पालन करें। दोनों रोटी थोड़ी अच्छी बनाएँ या मोटी बनाएँ ताकि भिखारी या रोटी खाने वाला भूखा नहीं रहे। प्रयोग सिद्ध है। फलीभूत है।

✤ सोमवार के दिन गर्भवती स्त्री कपूर का एक टुकड़ा ले उसमें से आधा अपने सामने रखकर जला दे और बाकी आधा शिव मन्दिर में चढ़ा दें। ऐसा करने से भी स्वस्थ एवं सुन्दर सन्तान उत्पन्न होती है।

✤ बार-बार गर्भपात होने पर—मंगलवार के दिन लाल कपड़ा लेकर उसमें थोड़ा सा नमक बाँध ले। इसके बाद हनुमान मन्दिर जाए और

इस पोटली को हनुमान जी के चरणों से स्पर्श कराएँ वापस आकर गर्भिणी के पेट से बाँध दे गर्भपात नहीं होगा।

❖ मुलहठी, आंवला और सतावर तीनों को बराबर मात्रा में लेकर कूट पीस कर छान ले। इसके बाद रविवार से इस औषधि को पत्नी सेवन करे। यह औषधि ५ ग्राम प्रतिदिन गर्भाधान से दो माह तक सेवन करने से गर्भपात हरगिज नहीं हो सकता है।

❖ ॐ और सूर्य को अर्क पुष्प जल अर्घ्य—ॐ परमात्मा का स्वाभाविक नाम है। यह वृक्षों और पत्तों की सांय-सांय नदी और समुद्र की लहरों की ध्वनि होती है अतः ब्रह्म का प्रतीक माना है। ओंकार को प्रणव कहते हैं क्योंकि इसकी स्तुति होती है। ॐ में समस्त विश्व निहित है। इसलिए इसे बीज कहते हैं। सूर्य को प्रणव मानकर इसकी साधना से पुत्र प्राप्ति का लाभ बताया गया है। कोषीतकि ऋषि ने अपने पुत्र को बताया कि मैंने इसी आदित्य का ध्यान किया। इससे तू मेरा एक पुत्र हुआ। तू भी अगर सूर्य का इस प्रकार ध्यान करेगा तो तेरे भी अनेक पुत्र होंगे। जो सूर्य का ध्यान करते हुए साधना करता है उसे पुत्र की प्राप्ति होती है।

सूर्य के बिना अनाज (अन्न) पककर तैयार नहीं हो सकता और उसके बिना कोई भी प्राण नहीं पा सकता है। अतएव प्राण और सूर्य दोनों रूपों में उपासना करनी चाहिए।

अतः पुत्र प्राप्ति हेतु पति-पत्नी प्रतिदिन सूर्योदय के साथ सूर्य को अर्घ्य में जल दें तथा उसमें एक श्वेत अर्क (सफेद आक) का पुष्प डालकर जब तक पुत्र प्राप्त नहीं होता है। अर्घ्य देते समय 'ॐ' का उच्चारण करें। यही पवित्र अक्षर है, इस अक्षर को जानकर मनुष्य जिसकी इच्छा करे, वह उसे प्राप्त हो जाता है।

❖ सन्तान की कामना रखने वाली स्त्री आश्विन नक्षत्र के दिन बिल्वपत्र की एक पत्ती (तीन दलों से युक्त) तोड़कर लाकर शिवजी पर चढ़ाकर पुनः घर लेकर आ जाये तथा उस बिल्वपत्र को एक रंग वाली गाय के दूध में पीस कर पीये तो उसे सन्तान प्राप्त होती है। तन्त्र शास्त्र में तो

इस प्रयोग को बंध्यत्व निवारक कहा गया है। फिर भी सम्बन्धित स्त्री का पति भी बलिष्ट होना अनिवार्य है। वैसे यह तन्त्र स्त्री के गर्भाशय, प्रजनन अंग तथा रज: आदि दोषों का परिहार करके उसे सन्तानोत्पत्ति योग्य कर देता है। इस प्रयोग में कोई रुपये-पैसे भी खर्च नहीं होते हैं। बिल्व वृक्ष हर गाँव-शहर में मिल जायेंगे इसके पत्ते शिवजी के ऊपर चढ़ाने के काम आते हैं जिन्हें बिल्वपत्र कहते हैं। इस प्रयोग में कुछ नहीं करना है बस आश्विन नक्षत्र में एक पूरा बिल्वपत्र का पत्ता (तीन दलों से युक्त) तोड़कर शिवजी पर चढ़ाकर, एक ही रंग वाली गाय के दूध में पीस कर निराहार अर्थात् खाली पेट लेना है। स्त्री इसके दो घण्टे बाद कुछ भी खा-पी सकती है।

❖ श्वेत अर्क (मन्दार) की जड़ को ताबीज या डोरे के सहारे कमर में धारण किए रहने वाली स्त्री अवश्य ही सन्तानवती होती है।

❖ यदि विवाह के बहुत अधिक वर्ष बीतने पर भी किसी स्त्री को सन्तान नहीं हो रही हो तो उसके लिए ऋषि-मुनिजन कहते हैं कि जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो गई हो और अर्थी पर बाँधकर उसे श्मशान घाट ले जा रहे हों और अर्थी जब किसी चौराहे पर पहुँचे तो उस समय जिस स्त्री को बच्चा नहीं हो रहा है वह स्त्री स्नानादि कर नये पीले वस्त्र पहन कर, पहले से ही उस चौराहे पर खड़ी रहे। जब अर्थी चौराहे पर पहुँचे तो तुरन्त पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर इस अर्थी के नीचे से निकल जाए यह ध्यान करते हुए कि तुझे मेरे पुत्र रूप में जन्म लेना है। ऋषि वचन है कि इस प्रयोग से सन्तान अवश्य हो जाती है।

❖ पुत्र प्राप्त करने की कामना रखने वाली स्त्री को चाहिए कि वो ऋतु स्नान से एक दिन पहले शिवलिंग बेल की जड़ में ताँबे का एक सिक्का और एक साबुत सुपारी रखकर निमन्त्रण देकर आए और दूसरे दिन सूर्योदय से पूर्व ही वहाँ जाकर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—"हे विश्ववैद्य! इस पुत्रहीन की चिकित्सा आप स्वयं ही करें। पुत्रहीन मुझ दीन-हीन स्त्रियों में अग्रगण्य तुच्छ स्त्री को बच्चे के मुख मण्डल की आभा (ज्योति) से आप ही दीप्त करें।"

ऐसा कहकर शिवलिंग बेल की जड़ में अपने आंचल सहित दोनों हाथों को फैलाकर घुटनों के बल बैठ जाए और सिर को बेल की जड़ से स्पर्श कराती हुई प्रणाम करे। तत्पश्चात् शिवलिंगी बेल के पाँच पके हुए लाल फल तोड़कर, अपने आंचल में लपेटकर घर आ जाए। इसके बाद काली गाय के दूध में शिवलिंगी के सभी फल पीसकर घोल कर पी जाए। इस टोटके से पुत्र ही पैदा होगा।

- सहदेवी का सम्पूर्ण पौधा (जड़, तना, पत्ती सहित) पौधा छोटा ही लाकर पानी में धोकर मिट्टी साफ करके छाया में सुखाकर, कूटकर चूर्ण बनाये। इस चूर्ण को गाय के घी के साथ मासिक धर्म के पाँच दिन पूर्व से पाँच दिन बाद तक नियमित रूप से सेवन करने वाली स्त्री को सन्तान लाभ होता है।
- लाल ओंगा की जड़ को जलाकर भस्म बना लें यह भस्म नित्य प्रति एक मास तक गाय के दूध के साथ सेवन करने वाले दम्पति को सन्तान प्राप्त होती है।
- पुत्र प्राप्ति की कामना रखने वाले पुरुष को संभोग से पूर्व अपनी कमर से फिटकरी बांध लेनी चाहिए। विदित रहे यह फिटकरी पति को ही अपनी कमर में बांधनी है पत्नी को नहीं।
- भाद्रपद व माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को कटिहारी की जड़ उखाड़कर कमर में बांधकर संभोग करने वाले व्यक्ति को पुत्र की ही प्राप्ति होती है। यह भी पुरुष को ही अपनी कमर में बांधनी है।
- सफेद आम की जड़ को भी कमर में बांधकर सहवास करने वाले व्यक्ति के पुत्र ही जन्मता है।
- तुलसी बीज का चूर्ण (मंजरी) पान में रखकर पुरुष खाये तत्पश्चात् सहवास करें। पुत्र ही होता है। यह प्रयोग जितनी बार सहवास करें उतनी बार करें इसमें कोई हानि नहीं है।
- अपराजिता की जड़ और शिखा को वस्त्र में लपेट कर अपनी भुजा में बांधकर सहवास करने वाले पुरुष के भी पुत्र ही होता है।
- रोहिणी नक्षत्र में सफेद घुंघची का पौधा लाकर पुत्र कामना वाली स्त्री

घर में ही गमले में रोपण कर दे, जब पौधा बड़ा हो जाए तब वह स्त्री मासिक धर्म से शुद्ध होकर आठवें दिन यानि मासिकधर्म प्रारम्भ के दिन से आठवें दिन पौधे की ३ माशा जड़ को ताजा जल में घिसकर पी जाएँ और उसी रात्रि पति के साथ सहवास करें तो एक बार में ही गर्भवती हो जाएगी।

❖ रविवार को पुष्य नक्षत्र में अर्थात् रवि-पुष्य में आक (मदार) की जड़ लाकर बंध्या स्त्री की कमर में बांध देने से उसे सन्तान सुख मिलता है।

❖ काली अपराजिता की जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीस लें और रजोधर्म के पश्चात् निरन्तर तीन दिन तक पिएँ तो गर्भ अवश्य ठहरता है।

❖ नागकेसर का चूर्ण लें, इसे उस गाय, जो पहली बार ब्याही हो और बछड़े वाली हो, के दूध के साथ निरन्तर सात दिन तक स्त्री के पीने से गर्भ ठहरकर पुत्र उत्पन्न होता है।

❖ यदि कन्या के बाद पुत्र की कामना हो तो ये प्रयोग करें—नवरात्रि में ९ कन्याओं को भोजन कराने के बजाय ९ छोटे-छोटे लड़कों को भोजन कराएँ और टॉफियाँ बाँटे। इससे छोटे-छोटे बच्चे खुश होंगे और आपके भी छोटा ही पुत्र जन्मेंगा। छोटे बच्चों को भोजन कराने के बाद स्त्री उनको खूब प्यार करे।

❖ कल्पवृक्ष के पेड़ की नीचे पति-पत्नी दोनों अपनी मनोकामना प्रकट करते हुए वृक्ष को स्पर्श व प्रणाम कर यह संकल्प करें कि गर्भाधान होने तथा पुंसवन के पश्चात् जब पुत्र-रत्न की प्राप्ति होगी तब 'मुंडन-संस्कार' यही कल्पवृक्ष की छाया में बैठकर कराएँगे। इस टोटके को करने से बंध्या स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है।

❖ पलाश (ढाक) के पाँच कोमल पत्ते, जो अत्यन्त कोमल हों, ऋतुकाल में गाय के दूध के साथ पीसकर तीन दिन तक ऋतुकाल अवधि में लगातार प्रात:काल स्त्री सेवन करें तथा शुक्ल पक्ष में मासिक धर्म से ८वें १०वें १२वें १४वें १६वें दिन पति के साथ सहवास करें तो

निश्चित पुत्र होता है। इस प्रयोग से स्त्री की नाल परिर्वतन हो जाती है और पुत्र ही होता है।

❖ कमलगट्टे को जल में पीसकर पुरुष अपनी नाभि में लेप करके अपनी पत्नी के साथ उसके मासिक धर्म के ८वें, १०वें, १२वें, १४वें, १६वें दिन सहवास करें तो पुत्र प्राप्ति ही होगी। कन्या हरगिज नहीं जन्मेगी। बस इतना ध्यान रखें की ८, १०, १२, १४, १६वां दिन शुक्ल पक्ष में ही पड़ता हो। ऐसा नहीं पड़ता हो तो पत्नी के मासिक धर्म की तिथि आगे बढ़ाने की टेबलेट लेकर भी ऐसा कर सकते हैं। परन्तु सहवास ८, १०, १२, १४, १६वां दिन ही हो तथा शुक्ल पक्ष ही हो ये दो चीजें पूरी कर दीं तो पुत्र ही है, देखने की आवश्यकता ही नहीं!

❖ यदि कोई स्त्री लक्ष्मणा बूटी को २१ रोज तक लगतार दोनों समय सेवन करे तो वह स्त्री शीघ्र ही गर्भ धारण करती है।

❖ लक्ष्मणा बूटी का चूर्ण प्रतिदिन एक ग्राम शहद के साथ पुरुष द्वारा सेवन करने से उसकी शक्ति बढ़ जाती है।

❖ स्त्री-पुरुष के कोई भी रोग हो तो एक पांचमुखी रुद्राक्ष को तांबे के कलश में पानी भरकर उसमें रात्रि में डाल दें और सुबह वह पानी स्त्री-पुरुष पी जाएँ। सुबह खाली पेट ऐसा रुद्राक्ष डूबा हुऐ ताँबे के पात्र का सवा किलो पानी प्रतिदिन पीने वाले को कोई रोग नहीं होता है।

❖ पुत्रोत्पति हेतु पुरुष को वंशलोचन तथा गिलोय का सत बराबर मात्रा में लेकर तथा कूटकर प्रतिदिन २ ग्राम शहद के साथ ३ माह तक लेना चाहिए। ३ माह तक स्त्री संसर्ग नहीं करें।

उसके बाद चतुर्थ मास मासिक धर्म से ८, १०, १२, १४, १६वें दिन शुक्ल पक्ष में ही पत्नी से सहवास करें तो पुत्र प्राप्ति में संशय नहीं है।

❖ कदम्ब का एक कोमल पत्ता बकरी के दूध में पीसकर ऋतुस्नान के बाद सन्तानहीन स्त्री को सात दिन तक प्रतिदिन एक पत्ता इस प्रकार देने से पुत्र प्राप्त होने की संभावना होती है।

- ❖ रजोधर्म के समय जिस स्त्री को उदर में दर्द हो जाया करता हो यदि वह स्त्री मंगलवार या रविवार के दिन रात्रि में कमर में मूंज की रस्सी हल्की बांधकर सोये और प्रातः होते ही उसे चौराहे पर फेंक दे तो रजोदोष के कारण दर्द व अन्य व्याधियाँ ठीक होती हैं।
- ❖ गर्भिणी स्त्री के बायें हाथ में चुम्बक पत्थर रख देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- ❖ गर्भिणी स्त्री की कमर में नीम की जड़ बांध देने से प्रसव पीड़ा समाप्त होती है।
- ❖ गर्भ स्थिति का टोटका—यदि किसी स्त्री को मासिक तो होता है परन्तु गर्भ नहीं ठहरता हो तो वह स्त्री मासिकधर्म के समय में तुलसी के बीज चबाए या काढ़ा पीये तो निश्चय ही वह गर्भ-धारण करेगी।
- ❖ गर्भिणी स्त्री की कमर में केले की जड़ बांधने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

पुत्र प्राप्ति हेतु सप्तम मणि : यन्त्र

यंत्र क्या है, यंत्र का क्या महत्व है, यंत्रों की पूजा किस प्रकार की जाती है, जप एवं पूजन में यंत्र कितने सार्थक होते हैं। यहाँ पर वेदविहित यांत्रिक जानकारी प्रस्तुत है।

यंत्र क्या है? देवी-देवताओं के ज्ञान-विज्ञान का व्यापक परिचय और व्यावहारिक स्वरूप जो शीघ्र ही आकर्षित करता है; यंत्र कहलाता है। यंत्र दूसरे रूप में विज्ञान एवं गणित की उत्पत्ति का स्रोत है। जो सृष्टि रचनाकार ब्रह्माजी द्वारा प्रतिपादित किये गए हैं।

यन्त्राणां सर्व शास्त्राणां प्रथम ब्रह्माणास्मृतम्।
अनन्तरञ्च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिर्गता॥

अर्थात् सर्वप्रथम ब्रह्माजी ने यंत्र प्रतिपादित किये और तदन्तर उनके मुखों से वेदशास्त्र बहिर्गत हुए। इस तथ्य को सभी विद्वान स्वीकार करते हैं कि पौराणिक कथानकों में उपमा, अंलकार और दृष्टान्त आदि का अत्यधिक प्रयोग किया गया है। जिससे समान्य बुद्धि के श्रोता भी उन्हें

रुचिपूर्वक सुन सके और धर्म के सूक्ष्म तत्वों का सार उन कथानकों में से ग्रहण कर सके। इसलिए उपर्युक्त श्लोक में वर्णित यंत्र और वेद कौन से थे जो 'चतुर्मुख ब्रह्मा' द्वारा प्रकट किये गए, इस वाद-विवाद को उठाना मैं तनिक भी आवश्यक नहीं समझता। इस प्रकार की उलझन में पड़ना तो मैं उन्ही खंडन-मंडन प्रिय सज्जनों के लिए छोड़ देता हूँ जिन्हें आम खाने से नहीं वरन् पेड़ गिनने से ही प्रयोजन होता है। मेरे विचार में इसका आशय इतना ही है कि वेद और यंत्रो का आदि स्रोत एक ही है। वहीं से प्रकट हुई एक धारा ने पूजन का रूप ग्रहण किया और दूसरी ने यंत्र का। अतः बिना पूजन के यंत्र का कोई महत्व नहीं है और बिना यन्त्र के पूजन का हृदयङ्गम होना सम्भव नहीं है।

अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यन्त्र एक विद्युतीय शक्ति है जो अंधकार में प्रकाश के समान है। अतः संतान गोपाल यंत्र, पुत्र प्राप्ति यंत्र, गुरुयंत्र आदि यंत्रों के बिना पुत्र प्राप्ति का लक्ष्य पूरा होने में विलम्ब हो सकता है। अतः पूजन के प्रति अभिरुचि, आकर्षण, गुरुत्वीय शक्ति उत्पत्ति का स्रोत यन्त्र है।

यन्त्र कागज पर केसर की स्याही से, कागज पर छपाई वाले, ताम्रपत्र पर, चाँदी पर, स्वर्ण पर, ताम्रपत्र पर स्वर्णग्रास युक्त एवं अष्ट धातु (सोना, चाँदी लोहा, ताँबा, पीतल, जस्ता, पारा, कांस्य) निर्मित हो सकते हैं।

कागज पर एक वर्ष तक, ताम्रपत्र पर ५ वर्ष तक, चाँदी पर १० वर्ष तक एवं सोने तथा अष्टधातु पर निर्मित यन्त्र आजीवन फलित करते हैं। यन्त्र को भले ही बाजार से क्रय करें परन्तु योग्य गुरु के हाथ का स्पर्श कराकर ही घर में रखना चाहिए। क्योंकि बाजार के यन्त्र सिद्ध नहीं होते हैं। यहाँ यन्त्र क्रय करने वाले सत्पुरुषों, सज्जनों को विशेष जानकारी देना चाहूँगा कि बाजार में जो भी ताम्रपत्र पर यंत्र बेचते हैं वह यह कहकर बेचते हैं कि यंत्र सिद्ध हैं एवं प्रभावशाली हैं और सिद्ध यंत्र के नाम से सौ, या दो सौ रुपये अतिरिक्त वसूल कर लेते हैं किन्तु वास्तव में वे यन्त्र सिद्ध नहीं होते हैं। यंत्रों को पूजन एवं मन्त्र द्वारा ही सिद्ध करना होता है। अतः बाजार से क्रय किये गये यन्त्रों को योग्य गुरु का स्पर्श कराकर ही प्राप्त करें।

देव पूजन एवं यथेष्ट फल प्राप्ति हेतु यंत्रों का महत्व

हमारी सम्पत्ति जो कुछ है वह यंत्र है। यंत्रों का अत्यधिक महत्व है। आध्यात्म विद्या की दृष्टि से यन्त्र सभी से उच्च है परन्तु यह समस्त पूजन में एकांगी है। भारतीय मनीषियों ने धार्मिक ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है—आध्यत्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक। ये तीनों पूर्ण होने पर कोई भी धार्मिक अनुष्ठान, धर्मकार्य पूर्ण माना जाता है।

१. आध्यात्मिक का अर्थ है—आध्यात्म अर्थात धर्म की और आत्मा को ले जाने वाला अर्थात् मंत्र जप।

२. आधिदैविक का अर्थ है—देवी-देवताओं का स्वरूप अर्थात् छवि।

३. आधिभौतिक का अर्थ—यंत्र से है। अत: पुत्र प्राप्ति के उद्‌देश्य पूर्ति में सन्तान गोपाल यंत्र, पुत्र प्राप्ति के यंत्र, गुरु यन्त्र आदि यन्त्र पूजन तथा मंत्रजप आदि धार्मिक कार्य को पूर्ण करते हैं। अत: बिना यन्त्र के उद्‌देश्य २/३ अर्थात् ६६.६७ प्रतिशत ही फलित होता है।

यंत्र पूजन एवं सिद्ध करने की विधि

पुत्र प्राप्ति हेतु सन्तान गोपाल यन्त्र, पुत्र प्राप्ति यंत्र आदि जो आपके पास ताम्रपत्र, अष्टधातु, स्वर्ण, चाँदी से निर्मित जो भी उपलब्ध है, उसका षोडशोपचार या पञ्चोपचार से पूजन करें—

षोडशोपचार पूजन—पाद्य, अर्घ्य, आचमनीय, स्नान, वस्त्र, आभूषण गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, तर्पण, नमस्कार इस प्रकार सोलह प्रकार से पूजन करने पर यन्त्र सिद्ध होता है। प्रत्येक का स्पष्टीकरण निम्नानुसार है—

पाद्य—यन्त्र के जल द्वारा पैर धोना।

अर्घ्य—यन्त्र को अर्घ्य (जल के छींटे) देना।

आचमनीय—यन्त्र को तीन बार आचमन कराना 'केशवाय नमः, माधवाय नमः, गोविन्दाय नमः' बोलते हुए तीन बार आचमन।

स्नान—यन्त्र को दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से स्नान कराके पुनः

शुद्ध स्नान कराना।

वस्त्र—यन्त्र को वस्त्र अर्पण करना (मोली बांधना)।

आभूषण—यन्त्र के ऊपर वस्त्राभूषण, अन्य आभूषण अर्पण करना।

गन्ध—यन्त्र पर इत्र लगाना, अष्टगन्ध लगाना।

पुष्प—यन्त्र पर पुष्प चढ़ाना।

धूप—यन्त्र पर अगरबत्ती से धूप खेना।

दीप—यन्त्र पर दीपक दर्शन कराना।

नैवैद्य—यन्त्र पर नैवेद्य अर्थात् गुड़ चढ़ाना या मिठाई चढ़ाना।

आचमन—यन्त्र पर पुनः तीन बार जल से छींटे देना।

ताम्बुल—यंत्र पर पान जिसमें लौंग, इलायची रखी हो रखना।

स्तुति—यन्त्र पर मन्त्र से स्तुति करना, यह स्तुति जितनी अधिक करें उतनी ही यंत्र की सिद्धता बढ़ेगी। स्तुति मन्त्र कोई भी चयन कर सकते जो कि पुस्तक के मन्त्र प्रयोग में है यथा "ॐ क्लीं ॐ देवकी सुत गोविन्दं वासुदेव जगंत्पते देहि मे तनय कृष्ण त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ।"

तर्पण—यन्त्र पर तर्पण करना (जल के पात्र में यन्त्र रखकर उस पर दोनों हाथ से जल बार-बार उसी यन्त्र पर डालना।)

नमस्कार—यन्त्र को प्रणाम करना।

इस प्रकार उक्त विवरणानुसार षोडशोपचार (सोलह प्रकार) से पूजन करने पर यन्त्र करने पर यन्त्र सिद्ध होता है।

षोडशोपचार से पूजन का समय नहीं हो तो पञ्चोपचार से पूजन करके भी कार्य को पूर्णता प्रदान कर सकते हैं।

पञ्चोपचार—गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य।

अष्टगन्ध में सफेद चन्दन, केसर, कस्तूरी, कपूर, अगर, तगर और कुंकुम ये आठ प्रकार की सामग्री सम्मिलित है।

अब यंत्रो का सचित्र विवरण अग्रानुसार है, आप अपनी श्रद्धानुसार कागज पर, ताम्रपत्र, चाँदी, स्वर्ण, अष्टधातु पर निर्मित करकर उक्त विधि अनुसार सिद्ध कर सकते हैं।

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

शंकर मातु शंकर पितु

पाप के जाऐं दीप (बायीं ओर)

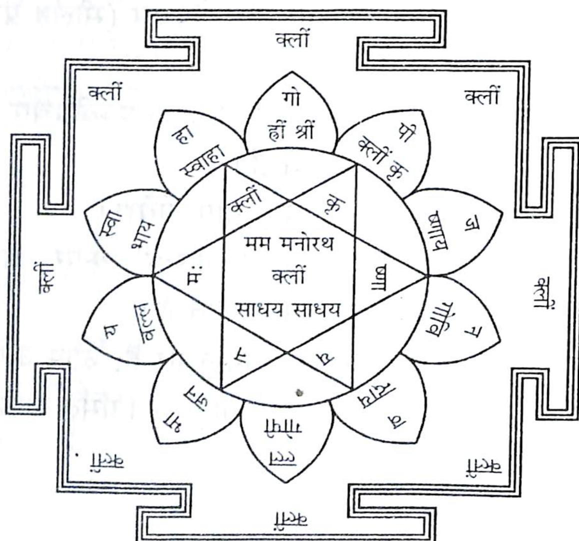
ॐ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं	ध	न
कुरू	४०	४२	४	५	दा
कुरू	१	३	४८	८३	य
द्धि	४६	४७	५	४	म
सि	२	७	४०	४४	म
यं	ज	द्धि	वृ	द्धि	ऋ

लक्ष्मीपतये वं विष्णवे नमः (दायीं ओर)

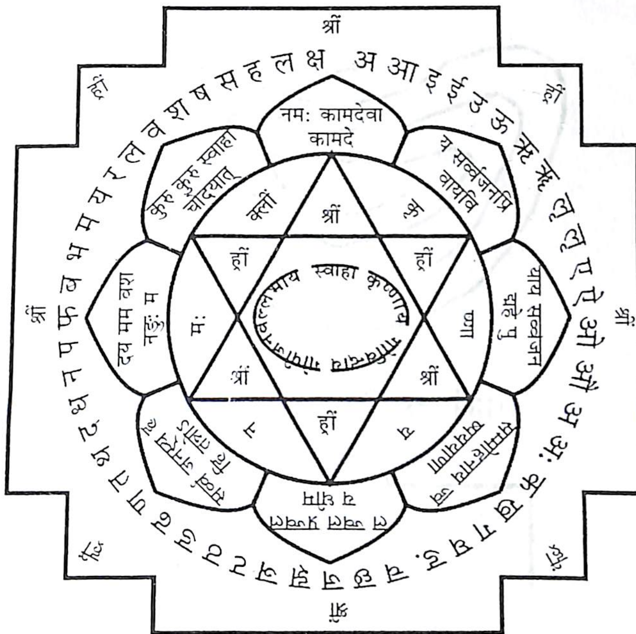
शंकर राखे चारों दीप

श्री सिद्ध गोपाल यन्त्र

नौमीडय तेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय गुञ्जावतंसपरिपिच्छलसन्मुखाय।
वन्यस्रजे कवलवेत्रविषाणवेणुलक्ष्मश्रिये मृदुपदे पशुपागजाय॥
'ह्रीं श्रीं क्ली कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा॥



श्री कृष्ण धारण यन्त्र (मंत्र सहित)



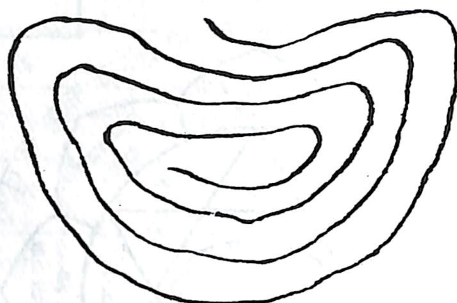
सुखपूर्वक प्रसव यन्त्र

यह यंत्र लिखकर गर्भिणी को दिखाने से बिना कष्ट के प्रसव होता है। यदि इसे ताबीज में डाल गर्भिणी के गले में भी बांध दें तो भी लाभ होगा। और उसके तकिए के नीचे रखें तो भी लाभ होगा।

इस यंत्र को कांसे की थाली में लिखकर उसे पानी से धोकर पिलाने से गर्भ ठहर जाता है और प्रसव से पूर्व पिलाने से प्रसव सुखपूर्वक होता है।



नारी कष्ट निवारण यंत्र



गर्भ रहने का यन्त्र

ॐ

ओं	ओं	ओं	ओं
ओं	ओं	ओं	ओं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	१
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	७

मूल नक्षत्र में रविवार को अष्टगंध से भोजपत्र के ऊपर ये यन्त्र बनाओ फिर स्त्री के बाँयी भुजा पर बाँधो तो उस स्त्री के गर्भ रहेगा।

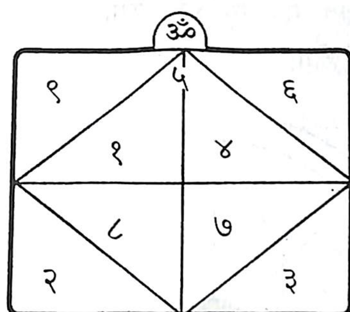
गर्भवती स्त्री की पीड़ा दूर करने का यन्त्र

ॐ

१८	३५	२	७
७	३	३७	३१
३४	२९	९	१
४	६	३९	३

इस यन्त्र को काँसे की थाली पर लिख करके गर्भवती स्त्री को पिलायें तो उसको कष्ट नहीं होगा।

यश तथा सन्तान प्राप्ति का यन्त्र



इस यन्त्र को रविवार के दिन प्रातःकाल ५ बजे लिखना आरम्भ करें। प्रतिदिन १०१ यन्त्र भोजपत्र के ऊपर केशर अथवा गोरोचन से लिखें। जब २५० यन्त्र लिखे जा चुकें, तब उन्हें किसी नदी या समुद्र के जल में प्रवाहित कर दें तो उसके प्रभाव से यश तथा सन्तान की प्राप्ति होती है।

सन्तान-सुख का यन्त्र

ॐ

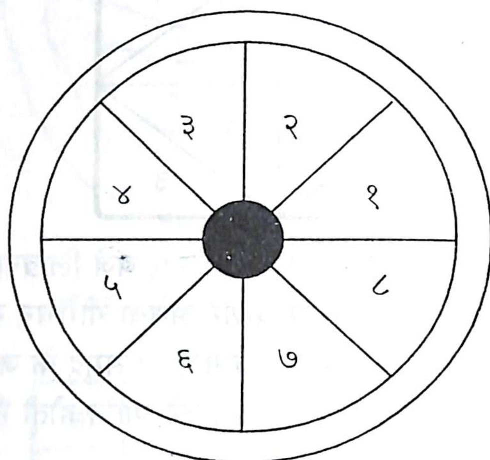
६	११	३
४	७	९
१०	२	८

इस यंत्र को रविवार के दिन लिखना आरम्भ करें। प्रतिदिन २०१ यन्त्र लिखें। जब २५०० यन्त्र पूरे हो जाएँ, तब उनका पूजन करके नदी में प्रवाहित कर दें। इस यन्त्र के प्रभाव से सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा बिगड़ी हुई सन्तान सुधर जाती है।

गर्भ-सुरक्षा का यन्त्र

यदि किसी स्त्री के गर्भ न ठहरता हो और किसी-न-किसी कारण से गिर जाता हो, तो निम्नलिखित इस्लामी यन्त्र को सफेद कागज पर केसर या

जाफरान से लिखकर और मोमजामा करके, ताबीज को स्त्री की कमर में बांधें। इससे प्रसवकाल तक गर्भ सुरक्षित रहेगा तथा स्त्री को माँ बनने का सौभाग्य अवश्य ही प्राप्त होगा।



वंश वृद्धि व सन्तान-प्राप्ति हेतु ताबीज

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

ॐ ह्रीं गर्भ धारिणी गर्भ स्ततभ्भनं कुरु कुरु स्वाहा।

उपर्युक्त यन्त्र को रविवार मूल नक्षत्र में अनार की कलम और अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखकर उक्त मन्त्र का १०८ बार जप करें और स्वर्ण के ताबीज में बंद करके, बाएँ हाथ में (स्त्री के) बांध देने से ही गर्भ की स्थापना हो जाती है। चार महीने तक गर्भ की रक्षा करना स्त्री का दायित्व होगा।

बंध्यादोष निवारण यन्त्र

जिन स्त्रियों के लड़का न होता हो या होकर मर जाता हो अर्थात् जीवित न रहता हो वे इस ताबीज को अपने बाएँ बाजू में बांधें। ताबीज के प्रभाव से लड़का अवश्य पैदा होता है और जीवित भी रहता है।

४०	४२	४	५
१	३	४८	४३
४६	४७	५	४
२	७	४७	४४

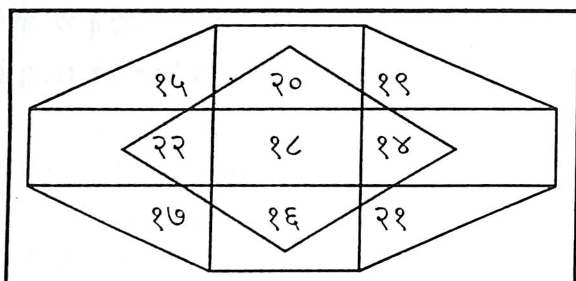
सन्तानदाता यन्त्र

४६	१०५	१८	६७
३८	४७	६६	८५
१००	५१	७२	१३
५२	३३	८०	७१

यह सन्तानदाता यन्त्र बाँझ स्त्री के लिये लाभदायक है। सर्वप्रथम ग्रहण के समय लगातार इस यन्त्र को लिखती रहे। इसके बाद कभी भी भगवान् कृष्ण की पूजा करके उनके निमित्त सात दिनों तक व्रत रखें। इस व्रत में प्रातः व सायं दूध में एक-एक यन्त्र घोलकर पी लिया करें। सात दिनों के बाद स्नान करके पति से सहचर्य करे।

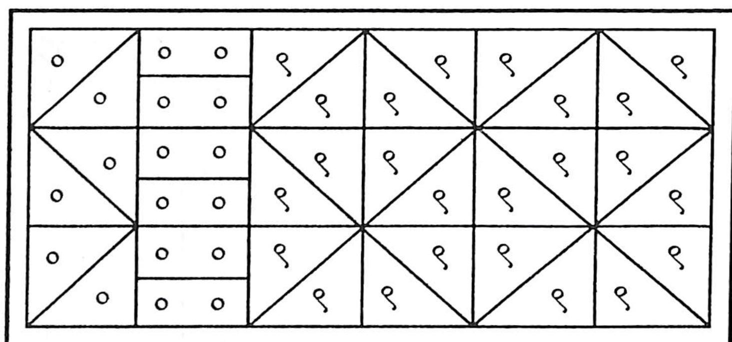
पुत्र प्राप्ति मृतवत्सा निवारण यन्त्र

यह यंत्र उन स्त्रियों के लिए है, जिनके गर्भपात हो जाता है।



इस प्रकार यन्त्र ताम्बे का या चान्दी बनवाकर किसी शुभ दिन में गले में धारण करले तो लाभ होता है।

सन्तानदाता यन्त्र



यह सन्तानदाता यन्त्र है। यह यन्त्र पति-पत्नी खुद ही एक सौ आठ बार अलग-अलग लिखें और गुलाब जल की शीशी में डाल दें। यह शीशी भोग वाली शय्या के नीचे रखें और अगले दिवस शीशी को बहते जल में खोलकर प्रवाहित कर दें। ऐसा प्रतिदिवस करें और प्रातः खाली पेट के समय ताजे नारियल के टुकड़े पर यह यन्त्र लिखकर दोनों अलग-अलग खायें।

इन्द्रियाँ शक्ति यन्त्र

भ	द्रा	उ	त	प्र	श	स्त
यो	भ	द्रं	म	नः	कृ	णु
ष्व	वृ	त्र	तू	र्ये	ये	ना
स	म	त्सू	सा	स	हः	ॐ

यह इन्द्रियाँ शक्ति यन्त्र है जिसके प्रयोग करने से समस्त इन्द्रियाँ शक्ति सम्पन्न हो जाती हैं। इसे प्रतिदिवस एक सौ आठ बार लिखते हैं।

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

०८	०१	३४	३९
३०	३३	०४	०५
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

गर्भ रक्षा यन्त्र

२०	२७	२	७
६	३	२४	२३
२६	२१	८	१
४	५	२२	२५

इन दोनों यन्त्रों की प्रयोग विधि यह है कि स्त्री स्वयं प्रतिदिन १०८ बार यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर जल प्रवाह करे।

नपुंसकता नाशक यन्त्र

४	५	७४	७७
७८	७३	८	१
६	३	७६	७५
७२	७९	२	७

यन्त्र को कागज पर पुष्य नक्षत्र में लिखकर ताबीज में भरकर पुरुष अपनी कमर में बांधे तो नपुंसकता दूर होती है। यह जरूरी नहीं है कि कमी केवल स्त्री में ही हो, पुरुष में भी हो सकती है परन्तु पुरुष कभी अपनी कमी स्वीकार नहीं करते हैं। फिर गोपनीय रूप से यह यन्त्र प्रयोग तो करना ही चाहिए।

पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुषों के लिए यंत्र ताबीज

व	न	न	मा
मा	द	द	स
स	द	य	अ
क	न	ह	अ

यन्त्र को पुष्य नक्षत्र में लिखकर लाल कपड़े में लपेटकर पुरुष अपनी कमर में बांधकर अपने धर्म का पालन करे तो पुत्र पुत्र ही होता है।

रुका हुआ मासिक खोलने का यन्त्र

ला	हइ	ला	श	व	ला
स			इ		स
ह	र	ल		२स	

यदि किसी स्त्री के किसी कारणवश माहवारी बन्द हो गई हो और सन्तान ही नहीं हो तो सन्तान उत्पन्न करने के लिए पहले मासिक स्राव होना आवश्यक है। ऐसे में इस यन्त्र को शुक्रवार के दिन लिखकर लाल कपड़े में बांधकर लाल धागे से स्त्री की दाँई जांघ में बांधने के लिए कह दें। यह यन्त्र स्त्री का पति ही शुक्रवार की रात्रि में अपनी पत्नी की दाँयी जांघ में बांधे तो इससे उसकी बन्द माहवारी (मासिकस्राव) पुनः प्रारम्भ हो जाऐगी।

रक्तस्राव को नियन्त्रित करने का यन्त्र

ज	ज	ज	ज
११	११	११	११
१	१	१	१
८	८	८	८

स्त्री के मासिक स्राव में अधिक मात्रा में रक्त जाने पर इस यन्त्र का वर्णन यन्त्र शास्त्र में अत्यन्त बढ़ा चढ़ाकर दिया गया है। इस यन्त्र को कागज पर किसी भी गुरुवार के दिन लिखकर लाल कपड़े में लपेटकर सिलकर लाल धागे से स्त्री की दाँई जांघ पर बांध दें तो इसके प्रभाव से मासिक स्राव में रक्त की मात्रा में कमी होगी और मासिक धर्म नियमित हो जायेगा।

नोट—मासिकस्राव में अधिक मात्रा में रक्त बहने वाली स्त्री के कन्या ही कन्या जन्मती है अतः पुत्र प्राप्ति हेतु भी यह यन्त्र उपयोगी है। क्योंकि मासिकस्राव में अनावश्यक अधिक रक्त बहना स्त्रियों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

गर्भ स्थापना यन्त्र

२	१	८	७
३	४	५	६

यदि किसी स्त्री का पहले या दूसरे महीने में ही किसी कारणवश गर्भ

गिर जाता हो तो इस यन्त्र को केसर की स्याही से कागज या भोजपत्र पर लिखकर गर्भस्थापन के तुरन्त बाद स्त्री की कमर में कपड़े में सिलकर बंधवा दें। यह ध्यान रहे ताबीज यन्त्र नाभि के नीचे ही रहे ताकि गर्भ रक्षा हो सके तथा मासिक धर्म बन्द होने एवं गर्भ रहने पर ही इसका प्रयोग करना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति हेतु चमत्कारी यन्त्र

०८	०१	३४	३९
३०	३३	०४	०६
०२	०७	२८	३५
३२	३१	०६	०३

गुरुवार पुष्य नक्षत्र के दिन यह यन्त्र लिखकर ताबीज में भरकर बाँह, गले या कमर में बांधने से बांझ स्त्री के भी बच्चा पैदा होता है।

प्रसव कष्ट निवारण यन्त्र

३१	२६	३३
३२	३०	२८
२७	३४	२९

उक्त यन्त्र को शुक्रवार के दिन कागज पर काली स्याही से लिखकर काले कपड़े में लाल डोरे से बांधे और इस प्रकार तैयार ताबीज को स्त्री की दाँयी जांघ में बाँध दें। कैसी भी मुश्किल घड़ी क्यों नहीं हो बच्चा बिना कष्ट के पैदा होगा।

प्रसव कष्ट निवारक यन्त्र

३	१	२	६	३	३
३	२	३	०	२	८
२	७	३	४	२	९

यदि प्रसव के लिए किसी स्त्री को भारी पीड़ा भोगनी पड़ रही हो और प्रसव नहीं हो पा रहा हो तो यह यन्त्र लिखकर स्त्री की दांयी जांघ पर बांध दें। तत्काल पीड़ारहित प्रसव सरलतापूर्वक हो जायेगा।

पेट में बच्चा मर जाने पर अद्भुत यन्त्र

ह् ह् ह् ग अ् द् द्
क् र् द् त्
१ २ ५ क ह क व व

अगर किसी स्त्री के पेट में ही बच्चा मर गया हो और उसकी जान के लाले पड़ रहे हों तो उपरोक्त यन्त्र लिखकर गंगाजल से धोकर उस स्त्री को पिला दें तो मरा हुआ बच्चा शीघ्र ही अपने स्थान से खिसककर बाहर आ जायेगा।

पुत्रोत्पत्तिकारक बृहस्पति यन्त्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

ताम्रपत्र पर, चाँदी, सोने, अष्टधातु-पर-श्रद्धानुसार यंत्र खुदवाकर घर में पूजा स्थान पर रखें। बृहस्पति प्रसन्न होकर पुत्र प्रदान करते हैं।

पुत्र प्राप्ति हेतु राशि यन्त्र

नीचे १२ ही राशियों के यन्त्र दिये जा रहे हैं। आपकी जो राशि हो उसी यन्त्र को धारण करें। इसी प्रकार स्त्री की जो राशि हो स्त्री भी उस राशि का यन्त्र लिखकर धारण करे अथवा दोनों की राशि के यन्त्र लिखकर धारण करें अथवा दोनों की राशि के यन्त्र लिखकर शयन कक्ष में बिस्तर के नीचे रख दें इससे राशि स्वामी प्रबल होकर पुत्रोत्पत्ति के योग बनेंगे।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

मेष

८	१	६
३	५	७
४	९	२

सिंह

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

धनु

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

वृष

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

कन्या

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

मकर

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

मिथुन

११	६	१२
१२	१०	८
७	१४	९

तुला

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

कुम्भ

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

कर्क

८	३	१०
९	७	५
४	११	६
वृश्चिक		

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२
मीन		

बंध्या निवारण पुत्रोत्पत्तिकर यन्त्र

बाँझपन दो प्रकार का होता है—

१. काक—काक बांझपन वाली स्त्री गर्भ ही धारण नहीं करती है।

२. मृतवत्सा—मृतवत्सा के संतान तो होती है परन्तु जीवित नहीं रहती है।

यह यन्त्र काक बाँझपन वाली स्त्री के लिए लाभप्रद है।

१०	१	१२
८	१५	३
२	४	५

पुत्रोत्पत्तिकर यन्त्र

गर्भ स्थिर रहने का यन्त्र

ओम्	ओम्	ओम्	ओम्
ओम्	ओम्	ओम्	ओम्
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

उपरोक्त यन्त्र लिखकर स्त्री के बाँये हाथ में बांधने से गर्भ स्थिर रहता है। गर्भ को कोई नुकसान नहीं होता है।

गर्भ धारण यन्त्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३
स्त्री का नाम			

इस यन्त्र को रविवार के दिन लिखकर स्त्री की दाँई भुजा में बांधने पर उसको अवश्य ही गर्भाधान होता है।

पुत्रकारक, समस्त दोषनाशक, रोगनाशक नवग्रह यन्त्र

३	२	८	५	४	९	१	६	७
५	४	९	१	६	७	३	२	८
१	६	७	३	२	८	५	४	९
८	३	२	९	५	४	७	१	६
९	५	४	७	१	६	८	३	२
७	१	६	८	३	२	९	५	४
२	८	३	४	९	५	६	७	१
४	९	५	६	७	१	२	८	३
६	७	१	२	८	३	४	९	५
ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरांतकारी, भानु शशि भूमि सुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्र शनि राहू केतवे कुर्वन्तु सर्वेमय सुप्रभातम्								

नवग्रह पीड़ानिवारक सर्वमनोकामनापूर्ति नवग्रह यन्त्र

इस यन्त्र को ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण करा पूजा स्थान में रखे। इसे नवग्रह कवच भी कहा जाता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव से ही तो पुत्र उत्पत्ति नहीं होती है। संतान पैदा नहीं होती है। पंचमेश निर्बल हो पंचम पर पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि,राहु, केतु की दृष्टि हो तब भी नवग्रह यन्त्र आपके पास है तो खराब ग्रह भी आपके पक्ष में होकर वंश वृद्धि में सहायक होंगे।

गर्भ रक्षा यन्त्र

द्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
द्रीं	दे	व	द्रीं
श्रीं	द	त्त	श्रीं
द्रीं	द्रीं	द्रीं	द्रीं

उक्त यन्त्र को कागज पर लिखकर स्त्री के गले में बांधने से गर्भ रक्षा होती है।

गर्भधारण यन्त्र

मं. ४	हां १	ॐ ८
म हा. ५	हीं २	श्रीं ९
रू. ६	हीं ३	हीं ८

इस यन्त्र को रविवार के दिन कागज पर कुकुंम से लिखकर ताबीज बनाकर जिस स्त्री के गले में बांधे तो उसके गर्भधारण जरूर होगा।

पुत्र प्राप्ति यन्त्र

१९६	१९९	२०२	१८९
२०१	१९०	१९५	२००
१९१	२०४	१९७	१९४
१९८	१९३	१९२	२०३

इस यन्त्र को केसर की स्याही से या कुमकुम से कागज पर लिखकर रेशम के धागे में बाँध कर स्त्री की कमर में बांधे। बाद में ही पति-पत्नी अपने धर्म का पालन शुक्ल पक्ष में ही एवं मासिक धर्म से समदिन ८, १०, १२, १४, १६वें दिन करेंगे तो पुत्र ही होगा।

पुत्र रक्षक यन्त्र

१६५६१८	१६५६२१	१६५६२५	१६५६११
१६५६२४	१६५६१२	१६५६१७	१६५६२२
१६५६१३	१६५६२७	१६५६१९	१६५६१६
१६५६२०	१६५६१५	१६५६१४	१६५६२६

इस यन्त्र को कागज पर लाल स्याही से लिखकर गूगल का धुआँ ताप कर ताबीज में भरकर स्त्री के गले में बांधने से बच्चे की रक्षा होती है। जिस स्त्री को पुत्र पैदा तो होता हो लेकिन बार-बार मर जाता हो, जिन्दा नहीं रहता हो तो यह यन्त्र प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

पुत्र प्राप्ति हेतु अष्टम मणि : गुरुकृपा-गुरु आशीर्वाद

गुरु कृपा एवं आशीर्वाद प्राप्त हो जाये और फिर भी वंश नहीं बढ़े तो यह असम्भव बात है। गृहस्थ जीवन के प्रत्येक कार्य में गुरु की आवश्यकता होती है। यदि आपके गुरु नहीं है तो योग्य को गुरु बनाने का कार्य करें और आपको यदि इस दुनिया में कोई भी योग्य नहीं लगे तो भगवान् शिव को ही गुरु मानें।

गुरु कृपा बिना किसी भी कार्य में सफलता पाना कठिन है। जीवन में प्रभु से साक्षात्कार करना, प्रभु को देख पाना असम्भव नहीं परन्तु कठिन अवश्य है। परन्तु आपके कोई योग्य गुरु है तो यह बड़े हर्ष का विषय है कि देवतुल्य पूजनीय गुरु को आप जब चाहे साक्षात् देख सकते हैं। मनुष्यरूपी एवं वह भी गृहस्थ जीवन में गुरु का महत्व देवताओं से कई गुना अधिक है।

कहा भी है—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मयै श्री गुरवै नमः॥

इस दिव्य द्रष्टा गुरु द्वारा हम अपनी अपवित्र एवं पापयुक्त देह को पवित्र कर आलोकित कर सकते हैं। योग्य गुरु का सान्निध्य प्राप्त होने पर जीवन में आपका कितना ही बिगाड़ क्यों नहीं हो चुका हो आप आगामी जीवन सुखपूर्वक जी सकते हैं। जिस प्रकार ट्रक का हेल्पर ड्राइवर के सान्निध्य में रहकर गाड़ी साफ करते-करते अच्छा ड्राइवर बन जाता है, ठीक उसी प्रकार अच्छे गुरु के मार्ग निर्देशन में आप अपने दुःखमय जीवन को सुखी एवं समृद्ध बना सकते हैं। वैसे गुरु के महत्व को लिखना असम्भव है। असंख्य जन्म लेकर भी गुरु के महत्व का कोई वर्णन नहीं कर सकता है, अतः सिर्फ दो दोहों में गुरु के महत्व का वर्णन करता हूँ—

मिला नहीं गुरु ज्ञान तभी तक देखी रातें काली।
ज्योति से ज्योति जगा सद्गुरु ने कर दी सदा दीवाली॥ १॥
यह तन विष की बैलरी, गुरु अमृत की खान।
शीश दिए जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान॥ २॥

अतः पुत्र प्राप्ति की प्राथमिक जिज्ञासा पूर्ति में गुरु का महत्व है और पुत्र प्राप्ति के लिए गुरु का आशीर्वाद परमावश्यक है। सत्यता तो यह है कि प्रभु या इष्ट से पहले गुरु को पूजना होता है। कहा भी है—

गुरु गोविन्द दोउ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन्ह गोविन्द दियो बताय॥

परन्तु आज के इस वातावरण में आपने लोगों को कहते सुना होगा कि गुरु क्या कर लेगा? गुरु कौन सा भाग्य बदल देगा। मैंने आज के युग के स्थान पर वातावरण शब्द का प्रयोग किया है इस पर गम्भीरतापूर्वक मनन करें। लोग कहते हैं अब कलियुग है, पहले सतयुग था। पर शास्त्रकारों ने कहा है युग कभी नहीं बदलता है मनुष्य की सोच, आचार-विचार, रहन-सहन और वातावरण बदलता है। युग अर्थात् समय तो एक सा ही रहता है पहले भी सूर्योदय होता था आज भी उदय होता है। परन्तु आज के वातावरण

(कलियुग) में मानसिकता बदल गई है। मनुष्य-मनुष्य को खा रहा है। वास्तविकता तो यह है कि कलियुग में गुरु द्वारा भी शिष्यों को ठगने की प्रक्रिया के कारण व्यक्ति असमंजस में पड़ जाते हैं कि इस दुनिया में योग्य गुरु कहाँ है! लेकिन मेरा यह मानना है कि दुनिया में बुराई के साथ अच्छाइयाँ भी रहती हैं। सब गुरु एक से हों यह असम्भव बात है। आपको इस कलियुग में योग्य गुरु की परख करने के लिए मात्र दो बातों का विश्लेषण करना है। यह दो बातें जिस व्यक्ति में हो उसे ही आप अपना गुरु स्वीकार लें—

१. जिसे आप गुरु बनाने जा रहें हैं, पान, बीड़ी सिगरेट, मादक पदार्थों का सेवन न करता हो क्योंकि ये व्यसन के परिचायक हैं। जो गुरु स्वयं व्यसनी है, वह भला आपको क्या सुधारेगा। क्या वह ज्ञानार्जन कराकर सद्राह दिखा पाएगा? इस सम्बन्ध मैं आपबीती सत्य घटना लिख रहा हूँ—

   एक सज्जन मेरे पास आए कि पण्डित जी, हमारा बच्चा गुड़ बहुत खाता है आप इसे छुड़ाने की कृपा करें। मैं चुप हो गया कयोंकि जब वो सज्जन मेरे पास आए थे तब मैं भी बहुत ज्यादा गुड़ खाता था, तो भला उस बच्चे को गुड़ खाने के लिए कैसे मना कर सकता था। तात्पर्य यह है कि जिसमें कोई व्यसन नहीं हो, किसी प्रकार का लालच नहीं हो, वही योग्य गुरु है।

२. जो धर्मशास्त्र का ज्ञाता हो, ज्योतिष, मुहूर्त्त का ज्ञाता हो तथा आपको भी मन्त्र-तन्त्र सम्बन्धी छोटे-छोटे प्रयोगों की जानकारी देकर आपके जीवन को सुखों से भरं दे। आपके खराब ग्रहों की स्थिति में भी सुखी जीवन की राह दिखाये। जिस व्यक्ति के संग में रहने से आपको शान्ति मिले आपके रुके हुए कार्यों को दिशा मिल जाए, वही आपके लिए योग्य गुरु है।

गुरु उसे स्वीकारें जिसका ठिकाना हो, आश्रम हो। होटल में ठहरने वाले, अपने नाम को बदलकर, एक-दो दिन आपके शहर में आने वाले को कभी भी गुरु नहीं स्वीकारें। अतः पुत्र प्राप्ति हेतु आठवीं मणि गुरु एवं गुरु का आशीर्वाद है। यदि भगवान् आशीर्वाद नहीं दे, भगवान् कृपा नहीं करें।

फिर भी गुरु कृपा हो जाए तो आपके पुत्र लिखा नहीं है तब भी हो जाएगा क्योंकि गुरु सर्वसामर्थ्यवान है, गुरु सब कुछ दे सकते हैं। संत कबीर ने तो गुरु के लिए यहाँ तक कहा है—

कबीरा हरि के रूठते गुरु के शरणे जाय।
कह कबीर गुरु रूठते हरि नहिं होत सहाय॥

पुत्र प्राप्ति हेतु नवम मणि : स्त्री-पुरुष संयोग एवं औषधि

नोट—पुत्र प्राप्ति या पुत्री प्राप्ति हेतु कर्म की संज्ञा स्त्री पुरुष संसर्ग को दी है। बिना स्त्री-पुरुष संसर्ग के बेटा या बेटी प्राप्त होना असम्भव है। अब संसर्ग विधि पर निर्भर होता है कि पुत्र होगा या पुत्री, तद्नुसार ही फल मिलेगा। प्रस्तुत पुस्तक आप जिस प्रकाशक 'रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार' की पढ़ रहे हैं, इस प्रकाशक की सभी पुस्तकें धार्मिक, मन्त्र तन्त्र अनुष्ठान की ही हैं तथा इस प्रकाशक के पाठक भी श्रेणी के हैं, अतः इस संसर्ग विधि पर इस पुस्तक में स्पष्टीकरण देने का तात्पर्य यह नहीं है कि प्रकाशक एवं लेखक ने अपनी गरिमा पर प्रश्न चिन्ह लगाया है। यह विधि बहुत ही सभ्य तरीके से यहाँ प्रस्तुत है और यह विधि भी इसलिए प्रस्तुत की जा रही है क्योंकि भारत के ही नहीं दुनिया के हजारों दम्पत्ति कोई पुत्र नहीं होने से दुःखी हैं। यहाँ तक की भारत में लगभग २७,२५० ऐसे स्त्री-पुरुष के गुप्त रोगों के प्राइवेट दवाखाने खोल रखे हैं जो प्रतिदिन लाखों दम्पत्तियों को इस नाम से ठग रहे हैं क्योंकि यह ऐसी चीज है जिसमें व्यक्ति ठगे जाने के बाद भी किसी को बताता नहीं है। मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझे कहा कि दुःखी दम्पत्ति इस पुस्तक को पढ़ने के बाद कहीं ठगाये नहीं इसलिए इस पुस्तक में संसर्ग विधि जिससे पुत्र ही होता है, जिससे पुत्री ही होती है, औषधियों का विवरण जो कि हिमालय योगियों ने बताई है उनका वर्णन पाठकों के हितार्थ अति सभ्य शब्दों में प्रस्तुत है। प्रस्तुत विधि एवं औषधियाँ कहीं वर्णित नहीं है ये योगी-सन्तों का प्रसाद है जो इस पुस्तक में वर्णित किया जा रहा है। अतः इस विषय-वस्तु की प्रामाणिकता मैं उन्हीं योगियों पर छोड़कर पुत्र प्राप्त करने वाले एवं पुत्री प्राप्त करने वाले दम्पत्तियों के हितार्थ विशेष सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री प्राप्त करने हेतु

पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुष के बलिष्ट एवं स्त्री को कमजोर होना अनिवार्य है।

पुत्री प्राप्ति हेतु स्त्री को बलिष्ट देर से स्रावित होना तथा पुरुष को कमजोर होना अनिवार्य है।

अब इस हेतु निम्नानुसार उपाय करें तो वांछित संतान ही प्राप्त होती है।

आहार-विहार (Dieting)

पुत्र प्राप्ति हेतु—पुत्र ही प्राप्त हो इसके लिए ६ माह पूर्व ही पति-पत्नी को तैयारी करनी पड़ती है अर्थात् पति-पत्नी संसर्ग से ६ माह पूर्व ही डाइटिंग करना शुरू कर दें। पुत्र प्राप्ति की कामना से पति को दूध एवं उसके प्रोडक्ट्स दही, पनीर, दूध, मक्खन, मिश्री, मावा, रबड़ी आदि खाने चाहिएँ। पुत्र की कामना हेतु पुरुष को अपनी पत्नी से पुत्र की कामना से संसर्ग से ६ माह पूर्व ही खट्टाई बिल्कुल छोड़ देनी है।

इस दौरान संसर्ग करें तो निरोध प्रयोग कर लें परन्तु ६ माह तक दूध एवं उसके प्रोडक्ट्स लें खूब वीर्यवर्धक औषधियाँ लें तथा खट्टाई का सख्ती से परहेज करें। इसी प्रकार पुत्र प्राप्ति हेतु पत्नी को भी ६ माह पूर्व से ही डायटिंग करनी है। अर्थात् पुत्र-प्राप्ति हेतु पत्नी को गर्भाधान एवं संसर्ग से ६ माह पूर्व ही, अंगूर, टमाटर, नारंगी (संतरा), तरबूज, केला जितना खा सके, खाना है तथ पत्नी को ६ माह तक निम्न वस्तुएँ पुत्र प्राप्ति हेतु कदापि नहीं खानी हैं—

जो वस्तुएँ पुत्र प्राप्ति हेतु पत्नी को ६ माह पूर्व ही नहीं खानी हैं वे हैं—दूध और उसके प्रोडक्ट्स जैसे दूध, दही, पनीर, मावा, मक्खन, दूध से बनी मिठाईयाँ, पाइनएपल (सेव), गोभी, खीरा, ककड़ी, गाजर, शलजम, मौसमी, मिर्ची। इस प्रकार से पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुष तो दूध एवं उसके प्रोडक्ट्स खूब खायें तथा स्त्री, अंगूर, टमाटर नांरगी, खट्टी चीजें खूब खाएँ। यह डाइटिंग ६ माह हो जाएँ उसके बाद संसर्ग की तैयारी करें और स्त्री के मासिक धर्म से ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि शुक्लपक्ष में हो तब संसर्ग करें तथा संसर्ग के प्रथम बार बाद ही स्त्री खट्टाई खाना बन्द कर दें तथा गर्भाधान होते ही ४० दिनों तक बछड़े वाली गाय का दूध पीये तो पुत्र ही होगा। इस प्रयोग में मन्त्र जप, तन्त्र, यन्त्र की आवश्यकता ही नहीं है बस पुरुष बलिष्ट होकर गहराई तक पहुँचे तथा स्त्री पुरुष से बहुत जल्दी स्रावित हो जाए तो संसर्ग के दौरान ही समझ लें कि पुत्र ही होगा। स्त्री के संसर्ग दौरान पुरुष के बाद में संतुष्ट होने से कन्या होती है। अतः पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुष को चाहिए कि वह स्त्री को संसर्ग में शीघ्र संतुष्ट कर दे तथा उसके बाद स्वयं स्खलित हो तो जान लें कि पुत्र ही है। शुक्ल पक्ष, समरात्रि संसर्ग तथा स्त्री पहले स्रावित होए तीन संयोग मिल जायें तो ब्रह्मा भी पुत्र उत्पत्ति को नहीं रोक सकते हैं।

पुत्री प्राप्ति हेतु—पुत्री ही प्राप्त हो इसके लिए ६ माह पूर्व ही पति-पत्नी को तैयारी करनी पड़ती है अर्थात् पति-पत्नी संसर्ग से ६ माह पूर्व ही पुत्री प्राप्त करने हेतु डाइटिंग शुरू कर दें।

पुत्री की प्राप्ति की कामना से पुरुष को खट्टाई अत्यधिक खानी चाहिए तथा दूध एवं दूध से बने समस्त प्रोडक्ट्स दूध, दही, पनीर, मावा, मिश्री, मक्खन, दूध की मिठाई खाना बन्द कर देना चाहिए। दूध से बने पदार्थ बिल्कुल नहीं खाने हैं और खट्टाई ही खानी है यह आहार बिल्कुल पुत्र के आहार से विपरीत है। इसी प्रकार स्त्री को पुत्री प्राप्ति हेतु ६ माह पूर्व से ही दूध एवं उसके प्रोडक्ट्स जैसे दूध, दही पनीर, मक्खन, मावा आदि ही खाने हैं तथा खट्टाई अंगूर, टमाटर, नारंगी (संतरा) तरबूज, केला बिल्कुल नहीं खाना है। पुत्री प्राप्ति हेतु संसर्ग से पूर्व पत्नी को बलिष्ट एवं पुरुष को

कमजोर होना आवश्यक है। अतः पुत्री प्राप्ति की कामना हो तो पुरुष को वीर्यवर्धक औषधि कदाचित नहीं लेनी चाहिए परन्तु स्त्री को बलवर्धक औषधि सेवन करना चाहिए।

इस प्रकार ६ माह डाइटिंग के दौरान संसर्ग नहीं करें। यदि करना पड़े तो निरोध का प्रयोग करें। इस प्रकार पुत्री प्राप्ति हेतु ६ माह पति-पत्नी दोनों की डायटिंग होने के बाद स्त्री-पुरुष संसर्ग की तैयारी करें और स्त्री के मासिक धर्म से ५, ७, ९, ११, १३, १५वें विषम दिन कृष्ण पक्ष में संसर्ग करें तथा संसर्ग के बाद गर्भाधान होते ही स्त्री खूब खट्टाई खाना शुरू कर दे तथा दूध एवं उसके प्रोडक्टस बिल्कुल बन्द कर दें। इस प्रकार पुत्री प्राप्त करने के इस प्रयोग में भी मन्त्र जप, यन्त्र तन्त्र आवश्यक नहीं है बस स्त्री बलिष्ट होना अनिवार्य है अर्थात् स्त्री के संसर्ग में देर से स्रावित हो तथा पुरुष बिल्कुल गहराई तक नहीं पहुँच सके और शीघ्र पतन हो जाये। शीघ्र पतन के रोगी पुरुष कन्या ही जन्मते हैं। अतः कृष्णपक्ष विषमरात्रि संसर्ग तथा स्त्री बाद में स्रावित हो ये तीनों संयोग मिल जाएँ तो पुत्री ही होगी इस परिस्थिति में ब्रह्मा भी पुत्र उत्पन्न नहीं कर सकते हैं।

कपड़े (वस्त्र)

पुत्र के लिए—पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुष को कई माह तक अधिक कसे हुए कपड़े नहीं पहनने चाहिए जैसे जीन्स, कसी हुई निकर, जॉक स्ट्रेप्स क्योंकि कसे हुए कपड़े पहनने से शुक्राणु में कमी हो जाती है और पुत्री होती है। इसलिए पुत्र प्राप्ति हेतु पुरुष को एकदम ढीले वस्त्र पहनने चाहिए, यहाँ तक कि अण्डर वियर भी ढीली सिली हुई पहनें अर्थात् भीतरी कपड़े भी कसे हुए नहीं होने चाहिए। इससे शुक्राणुओं की गिनती में वृद्धि होगी और (y) शुक्राणुओं को लाभ पहुँचेगा।

पुत्री के लिए—पुरुष को कसी हुई निकर, जीन्स 'जॉक स्ट्रेप्स' आदि कसे हुए कपड़े कई माह तक पहनने चाहिए, जिससे शुक्राणुओं की संख्या में कमी आएगी और x शुक्राणुओं को लाभ पहुँचाने वाले तत्वों की संख्या में वृद्धि होगी और पुत्री ही पैदा होगी। इसके लिए पुरुष सप्ताह में दो

तीन बार गर्म पानी से नहाए तो भी शुक्राणुओं की संख्या में कमी होकर पुत्री ही होती है।

द्रव्य

पुत्र के लिए—पुरुष को शुक्ल पक्ष एवं मासिकधर्म स्राव से ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि संसर्ग की रात्रि में स्त्री संसर्ग से १५ से ३० मिनट पूर्व दो, से तीन कप या पी सके तो चार कप स्ट्रांग कॉफी पीनी चाहिए। ऐसा करने से पुरुष के नर पैदा (लड़का पैदा) करने वाले शुक्राणुओं की गति तेज होगी तथा बने रहने की शक्ति बढ़ती है। इसी पुत्र प्राप्ति हेतु स्त्री को संभोग से पूर्व योनि में कॉफी का डूश ले लेना चाहिए। यदि स्त्री डूश नहीं ले तब भी पुरुष को संसर्ग से १५ या ३० मिनट पूर्व कॉफी अवश्य पी ले ताकि पुत्र ही हो तथा स्त्री को संसर्ग के बाद ठण्डा पानी पीना चाहिए। चाहे तो संसर्ग के बाद एक गिलास फ्रीज का पानी पी सकती है।

पुत्री के लिए—पुरुष को संभोग से पूर्व गर्म पेय पदार्थों कॉफी, चाय से बचना चाहिए तथा पुत्री प्राप्ति हेतु स्त्री को संसर्ग से १५ से ३० मिनट पूर्व २ से तीन कप स्ट्रांग कॉफी पीनी चाहिए।

योनि के वातावरण को डूश द्वारा परिवर्तित करना

इस क्रिया में पिचकारी द्वारा अम्लीय या क्षारीय द्रव्य योनि मार्ग में पहुँचाया जाता है।

पुत्र के लिए—डॉ॰ शेटल्स की १९७७ में प्रकाशित पुस्तक में डॉ॰ ने लिखा है कि पुत्र प्राप्ति अति शीघ्र होती है यदि योनि का वातावरण क्षारीय हो क्योंकि क्षारीय वातावरण पुरुष y शुक्राणओं को जीवित रखने में अत्यन्त सहयोगी है। अतः इस पुस्तक में डॉ॰ शेटल्स ने स्पष्ट लिखा है "क्षारीयता को बढ़ाने के लिए कुछ भी करें।"

अतः पुरुष संसर्ग से १५ से ३० मिनट पूर्व स्त्री को शुक्लपक्ष एवं मासिक धर्म के समदिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि को पति संसर्ग पूर्व बेकिंग सोडा के डूश द्वारा योनि के वातावरण को क्षारीय कर लेना चाहिए।

प्रत्येक रात्रि के संसर्ग पूर्व ऐसा करना नितान्त आवश्यक है ताकि पुत्र ही हो।

पुत्री के लिए—पुत्री पैदा करने के लिए प्रत्येक प्रयत्न अर्थात् कृष्णपक्ष एवं विषम ५, ७, ९, ११, १३, १५वीं रात्रि को स्त्री को अपने पति संसर्ग से १५ से ३० मिनट पूर्व योनि में अम्लीय वातावरण पैदा करने की दृष्टि से सफेद सिरका मिलाकर डूश कर लेना चाहिए। पुत्री प्राप्त करने हेतु संसर्ग से पूर्व प्रत्येक रात्रि स्त्री को अम्लीय द्रव्य सफेद सिरका द्वारा डूश करना आवश्यक है क्योंकि इस प्रकार के अम्लीय वातावरण में केवल मादा शुक्राणुओं के ही जीवित रहने की सम्भावना रहती है और पुत्री ही पैदा होती है।

संसर्ग के समय आसन

पुत्र के लिए—पुत्रोत्पत्ति की इच्छा है तो पति को अपनी पत्नी के पृष्ठभाग से योनि में प्रवेश करना चाहिए ताकि शुक्राणुओं (y) का स्राव ठीक गर्भाशय के द्वार पर ही हो। यहाँ का वातावरण योनि मार्ग की अपेक्षा अधिक क्षारीय होता है। योनि मार्ग के अम्लीय वातावरण से ही पुरुष का y खत्म हो जाता है, अतः उस वातावरण में ही प्रवेश नहीं करके पत्नी के पृष्ठभाग से प्रवेश करके सीधे गर्भाशय के बाहर स्खलन करने से पुत्र ही होता है।

पुत्री के लिए—पुत्री उत्पन्न करने की कामना है तो कृष्ण पक्ष एवं विषम रात्रि में पति को पत्नी के आमने-सामने योनि मार्ग में सीधे ही अति सरल आसन जो आमतौर पर प्रयोग किया जाता है में संसर्ग करना चाहिए क्योंकि यहाँ का वातावरण अम्लीय होता है, जिसकी वजह से x शुक्राणुओं को डिम्ब तक पहुँचाने में अपनी मोटी परत के कारण सहायता मिलती है और x-x संयोग से पुत्री ही पैदा होती है।

बारम्बार संसर्ग

पुत्र के लिए—पुत्र के लिए पति-पत्नी को संसर्ग की शुक्ल पक्ष की ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं जो रात्रियों में पत्नी के साथ बार-बार संसर्ग करना चाहिए अर्थात् एक रात्रि में कम से कम दो-तीन बार संसर्ग तो हो ही जाए, अधिक बार संसर्ग कर सके तो पुत्र प्राप्ति की दृष्टि से अति उत्तम एवं

श्रेष्ठ है क्योंकि ऐसा करने से शुक्राणुओं की संख्या बढ़ती है और उन अम्लीय तत्वों को सहायता मिलती है, जिससे y शुक्राणुओं को लाभ पहुँचता है और xy का संयोग होकर पुत्र ही पैदा होता है।

पुत्री के लिए—पुत्री के लिए पुरुष को कृष्ण पक्ष एवं विषम रात्रि में संसर्ग करना है तथा ५, ७, ९, ११, १३, १५वीं जो रात्रि बताई है उसमें एक बार ही संसर्ग करें और पत्नी को संतुष्टि भी नहीं हो ऐसा शीघ्र स्खलन हो जाए तो पुत्री ही होगी क्योंकि शुक्राणुओं में y नामक शुक्राणु गर्भाधान से पूर्व ही मर जायेगा अैर xx का संयोग होकर पुत्री ही होगी। अत: पुंत्री के लिए बारम्बार संसर्ग से बचना है। यही तो कारण है कि पुरुष ऐसा नहीं कर पाते और पुत्र-ही पुत्र पैदा होते हैं। इसी कारण से स्त्री के पैदा होने के अनुपात में कमी आयी है क्योंकि कामी पुरुष आसानी से पुत्र पैदा कर देते हैं और जो सज्जन, धर्मात्मा तथा सीधे-साधे लड़के होते हैं, संसर्ग भी पूरा नहीं कर सकते उनके कन्या उत्पन्न होती है। कामी पुरुष ज्यादा हैं इसलिए पुत्री पैदा होने का अनुपात भी कम है।

आवेग अथवा उत्साह अथवा कामोत्तेजना

पुत्र के लिए—पत्नी को पति से पहले ही आवेग की चरमसीमा पर पहुँचना चाहिए, ऐसा प्रत्येक संसर्ग में और बार-बार हो तो अति उत्तम है क्योंकि इससे क्षारीय स्राव बढ़ता है और योनिमार्ग का अम्लीय प्रभाव कम हो जाता है, जिससे y शुक्राणुओं को सहायता मिलती है और xy का संयोग होकर पुत्र ही होता है। इस प्रकार पुत्र पैदा करने के लिए पति की पहुँच पत्नी के अन्दर अत्यधिक गहरी होनी चाहिए। यहाँ तक की इतनी गहरी पहुँच हो कि शुक्राणओं का स्राव ठीक गर्भाशय के द्वार पर ही हो तो इससे शुक्राणु योनिमार्ग के अम्लीय वातावरण से बच जायेंगे और उपर्युक्त क्षारीय वातावरण में पहुँचने के बाद y को अत्यधिक मदद मिलेगी और xy का संयोग होकर पुत्र ही होगा। पति को अत्यधिक गहराई तक पहुँच के लिए यदि आवश्यकता हो तो पृथ्वी के तीन अमृत—१. अमृत जोहर सत २. हीरा भस्म ३. सोना भस्म इनसे तैयार औषधियाँ जो कि अत्यन्त महँगी एवं उच्चकोटि के रसायन

हैं सेवन करना उपयोगी है। ये अमृत सेवन करने के बाद सामान्य क्षमता से दुगनी गहराई तक पहुँच सकते हैं इसलिए कहा भी गया है कि इन तीन अमृत सेवन वालों के कन्या हरगिज नहीं जन्मती है। जिन दम्पत्ति के दो, तीन या चार कन्याएँ है तो उन्हें निराश नहीं होना चाहिए यदि वे थोड़ा सामर्थ्य रखते हैं (अमीर हैं) तो पृथ्वी के ये तीन अमृत से तैयार की गई औषधि पुरुष ले लें तो साक्षात् कामराज, कामदेव भी उसके सामने फेल हो जाते हैं। ये अमृत प्राचीकाल में राजा-महाराजा सेवन करते थे और एक साथ सैकड़ों रानियों को सन्तुष्ट करते थे। यहाँ तक कि बहुत से राजा-महाराजा तो पुत्र होने के बाद भी मौज-शौक के लिए ये अमृत सेवन करते थे। इन अमृतों की प्रशंसा में आयुर्वेद संहिता में कहा है कि एक बार ये अमृत सेवन कर लें तो ५ वर्ष उम्र बढ़ जाती है तो आप अनुमान लगा लें कि इन तीन अमृत के सेवन के बाद कन्या कैसे जन्म सकती है। अतः प्रथम दो, तीन, चार, पाँच, छः पुत्रियों के पिता ये अमृत सेवन करके एक प्रयास पुत्र-प्राप्ति निमित्त और करें। सब झूठे हो सकते हैं परन्तु शास्त्र नहीं, अतः जिसके पुत्र नहीं है वे घबरायें नहीं अभी भी ये अमृत उपलब्ध हैं बस इनसे औषधि तैयार करके देने वाला चाहिए। मेरे गुरुदेव ने मुझे इन अमृत से औषधि तैयार करके बताया और अब तक तेरह दम्पत्तियों ने जिनके कन्याएँ ही कन्याएँ हैं ये औषधि ली है। सभी के पुत्र हुआ इस आधार पर निश्चित रूप से आज भी प्रत्येक समस्या का निदान उपस्थित है, बस करने वाला चाहिए।

पुत्री के लिए—पत्नी को कामोत्तेजना की चरम सीमा से बचने का प्रयास करना चाहिए ताकि उसकी योनि का वातावरण अम्लीय ही रहे और पुत्री ही पैदा हो।

तनाव (Tension)

पुत्र के लिए—पति-पत्नी को तनावमुक्त संसर्ग करना चाहिए अन्यथा पुत्र उत्पत्ति में बाधा आ सकती है।

पुत्री के लिए—पति-पत्नी को तनाव में या किसी tension में ही संसर्ग करना चाहिए। एक भयभीत एवं तनावग्रस्त पत्नी में अम्लीय स्राव

अधिक होता है, जिसके कारण पुत्र उत्पत्ति में सहायक शुक्राणुओं के प्रभावहीन होने की संभावना अधिक रहती है। इस प्रकार यदि पति तनावग्रस्त रहे तो, उसके शुक्राणुओं की संख्या भी प्रभावित होगी और परिणाम स्वरूप पुत्री उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

आचार-विचार, आहार-विहार एवं गर्भाधान की तैयारी

१. गर्भाधन के उद्देश्य से पति-पत्नी को संसर्ग करने से ३ माह पूर्व ही अपना आहार-विहार और आचार-विचार जितना सात्विक सरल और अच्छा रखेंगे, गर्भाधान के समय पति-पत्नी की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति उतनी ही अच्छी रहेगी और पुत्र ही होगा। इतने दिनों के प्रयास के बिना एन वक्त पर ऐसी स्थिति नहीं बन सकती।

२. आहार में तले हुए, तेज मिर्च मसालेदार, उष्ण प्रकृति के और खट्टे पदार्थों का सेवन कम से कम करें, मांसाहार शराब और मादक पदार्थों का सेवन कतई न ही करें। अधिक से अधिक फलाहार करें, शुद्ध शाकाहारी भोजन करें। दूध-चावल की खीर, हलवा, मक्खन, मिश्री, सूखें मेवे आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन यथासम्भव करते रहें।

३. ३ महीने पूर्व ही सुबह जल्दी उठकर शौच स्नान आदि से निवृत्त होकर योगासन या व्यायाम आदि करना चाहिए। शाम को भी शौच अवश्य जाना चाहिए। ताकि पेट साफ रहे और कब्ज नहीं रहे। गर्मी के दिनों में दोनों समय स्नान करें।

४. तीन माह पूर्व से ही पति-पत्नी परस्पर सौम्य, मधुर और स्नेह पूर्ण व्यवहार एवं वार्तालाप करें। वैमनस्य, कटुवचन, कलह, तनावपूर्ण वातावरण और शोक से बचकर रहें। पति-पत्नी एक दूसरे से तादात्म्य बनायें रखें ताकि गर्भाधान के समय भी ऐसी ही मानसिकता बनी रहे।

५. बस उपाय और प्रयास करते हुए भी इसकी चर्चा किसी से नहीं करें यानि इसे चर्चा का विषय नहीं बनने दें। सारा कार्यक्रम पति-पत्नी के बीच में ही रहना चाहिए। दो कान पति के और दो कान पत्नी के यानि गर्भाधान होने तक ये बात चार कानों तक (पति-पत्नी के बीच) ही

रहनी चाहिए। कहा भी है—

"छठे श्रवण यह परत कहानी।
नास तुम्हार सत्य मम बानी॥"

६. संसर्ग की रात्रि के दिन शाम को अत्यन्त हल्का भोजन दाल-चावल करें। गरिष्ठ भोजन या पेट भरकर भोजन नहीं करें अन्यथा संसर्ग सुख में कमी रहेगी।

गर्भाधान हेतु पक्ष एवं रात्रि

पुत्र के लिए—पुत्र पैदा करने के लिए शुक्लपक्ष एवं समरात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि ही श्रेष्ठ है।

नारद विष्णु पुराण अंक के त्रिस्कन्ध जातक ज्योतिष स्कन्ध में वर्णित है—

१. पुरुष यदि चौथे दिन रात्रि में प्रसंग करता है तो उसके निरोग और पूर्णायु पुत्र पैदा होता है।
२. छटी रात्रि में प्रसंग करने से निश्चय ही पुत्र पैदा होता है।
३. आठवीं रात्रि प्रसङ्ग करने से भाग्यवान पुत्र पैदा होता है।
४. दसवी रात्रि प्रसङ्ग करने से धनैश्वर्यमान पुत्र होता है।
५. बारहवीं रात्रि में प्रसङ्ग करने से बलवान पुत्र होता है।
६. चौदहवीं रात्रि में प्रसङ्ग करने से सर्वगुण सम्पन्न पुत्र होता है।
७. सोलहवीं रात्रि में प्रसङ्ग करने से सोलह कलाओं से युक्त ज्ञानवान पुत्र होता है।

नोट—इस तथ्य को ध्यान रखना चाहिए कि उत्तरोत्तर रात्रियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं। चौथी रात से छटी, छटी से आठवीं, आठवीं से दसवीं, दसवीं से बाहरवीं उतम होती है। तात्पर्य यह है कि आठवीं रात्रि में संगम करने से जैसा बलवान और बुद्धिमान पुत्र होगा उसकी अपेक्षा दसवीं में प्रसंग करने से और भी बलवान होगा। तथा दसवीं से भी अधिक बली बारहवीं में प्रसंग करने से होगा। लेकिन यह तथ्य पुराणों-शास्त्रों में लिखा है कि आठवीं रात्रि में पत्नी प्रसङ्ग करने से एक ही बार संसर्ग से गर्भाधान हो जाता है और पुत्र होता है

वह भी बलवान होता है। सोलहवीं रात्रि के बाद गर्भ का मुँह बन्द हो जाता है अत: अठारवीं रात्रि में गर्भाधान होता ही नहीं है। यहाँ पर यह भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि चौथी, छठी, आठवी, दसवीं, चौदहवीं एवं सोलहवीं रात्रि में स्त्री का रज कम एवं पुरुष का वीर्य ज्यादा होता है इसलिए पुत्र ही होता है।

पुत्रोत्पत्ति के लिए शास्त्रों में शुक्ल पक्ष में ही स्त्री संसर्ग का प्रावधान कहा गया है अत: शुक्ल पक्ष में समरात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६वें तभी स्त्री संगम करना है अन्यथा पुत्र नहीं होगा। शुक्ल पक्ष में चन्द्रमा बली होता है और वह सन्तान का कारक है। चन्द्रमा की कला घटने बढ़ने से जब समुद्र में ज्वार भाटा आता है तो स्त्री संसर्ग में शुक्ल पक्ष में वेग क्यों नहीं रहेगा। इसलिए शास्त्रकारों ने पुत्र प्राप्ति हेतु कृष्ण पक्ष में संसर्ग अथवा प्रसंग पूर्णतया: वर्जित किया है।

शास्त्रों में तो नक्षत्र एवं वार भी दिये हैं लेकिन उसका वर्णन मैं इसलिए नहीं करूँगा क्योंकि इस प्रकार प्रेम प्रसङ्ग में यदि शुक्ल पक्ष एवं समरात्रि के साथ नक्षत्र एवं वार भी देखने लग जाएँ तो ५-६ वर्षों तक बिना संसर्ग के रहना पड़ेगा क्योंकि इतना कलियुग में देखना सम्भव नहीं है। हाँ, इतना अवश्य देख सकते हैं कि स्त्री प्रसङ्ग के लिए मौसम बहार या बसन्त ऋतु अच्छी होती है।

सम रात्रियों की गणना

शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष तो आप सब जानते ही हैं। पुत्र प्राप्ति के लिए शुक्ल पक्ष एवं समरात्रियों ६, ८, १०, १२, १४, १६ में ही प्रसङ्ग करना है इसका वर्णन इस पुस्तक में कई स्थानों पर वर्णित है परन्तु प्रश्न अब यह है कि समरात्रि की गणना कैसे की जाए—

भारतीय काल गणना के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच एक दिन-रात और तिथि की गणना की जाती है जबकि रात्रि १२ बजे के बाद तारीख या दिनांक परिर्वतन की मान्यता पश्चिमी देशों की है। अत: दिन या रात्रि में कभी भी मासिकधर्म शुरू हो पहली रात्रि उसी को माना

जायेगा।

उदाहरणार्थ माना कि एक महिला को मासिकस्राव दिनांक २ नवम्बर २००२ को शनिवार की रात्रि १ बजे ऋतुकाल प्रारम्भ हुआ अर्थात् अंग्रेजी दिनांक से यह ३ तारीख सुबह एक बजे माना जायेगा परन्तु यहाँ पर २ तारीख ही मानेंगे क्योंकि हमने पूर्णतया स्पष्टीकरण कर दिया है कि किसी भी वार के सूर्योदय से अगले वार के सूर्योदय से पहले के बीच में कभी भी मासिक धर्म शुरू हो या दाग दिखने लगे तो वही दिन माना जायेगा। यहाँ शनिवार दिनांक २ नवम्बर, २००२ की रात्रि एक बजे भी २ नवम्बर, २००२ शनिवांर ही पहली रात्रि मानी जायेगी। अब मासिकस्राव की गणना २ नवम्बर, २००२ से ही करेंगे इससे ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि ७ नवम्बर २००२, ९ नवम्बर २००२, ११ नवम्बर २००२, १३ नवम्बर २००२, १५ नवम्बर २००२, १७ नवम्बर २००२ क्रमश होगी। इस उदाहरण में तो ७ नवम्बर ०२, ९ नवम्बर ०२, १३ नवम्बर ०२, १५ नवम्बर ०२, १७ नवम्बर ०२ सभी रात्रियाँ शुक्ल पक्ष में ही हैं अत: यह महिला तो भाग्यशाली है क्योंकि इसका मासिकस्राव कृष्णपक्ष की दशमी तिथि के बाद होने से शुक्लपक्ष की सभी सम रात्रियों में पुरुष प्रसङ्ग करके पुत्र पैदा कर सकती है। अब यदि इस महिला का पति दिनांक ७ नवम्बर ०२, ९ नवम्बर ०२, १३ नवम्बर ०२, १५ नवम्बर ०२ एवं १७ नवम्बर ०२ को ही अपनी पत्नी का संगम करता है तो निश्चित रूप से इस महिला के पुत्र ही होगा और यदि इस महिला के पति ने काम के आवेश में विषम रात्रि ८ नवम्बर ०२, १० नवम्बर २०, १२ नवम्बर ०२, १४ नवम्बर ०२ को भी अपनी पत्नी के साथ प्रसङ्ग कर लिया तो पुत्र उत्पन होने की सम्भावना नहीं में भी बदल सकती है क्योंकि विषम रात्रि में स्त्री रज अधिक होने से कन्या उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल रहती है।

यहाँ यह भी स्पष्टीकरण उल्लेखनीय है कि इस तथ्य से कोई फर्क नहीं पड़ता कि माहवारी कब शुरू हुई कृष्ण पक्ष में या शुक्ल पक्ष में मुद्दे की बात यह है कि गर्भाधान पति-पत्नी के प्रसंग की रातें शुक्ल पक्ष में एवं सम रातें ही होनी चाहिए। यानि सम रात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६ में जो रात्रियाँ शुक्ल पक्ष में पड़े उन्ही रातों में प्रसंग करना है। १८वीं रात्रि में प्रसंग

करने का औचित्य ही नहीं है क्योकि गर्भाधान ऋतुकाल से १६ दिन तक ही होता है। अत: संयमी पुरुष को तो परिवार नियोजन हेतु नसबन्दी या ऑपरेशन कराने की आवश्यकता ही नहीं है। १६ रात्रि बाद ऋतुकाल आने तक प्रतिदिन संसर्ग करे तो भी गर्भाधान होगा ही नहीं। परिवार नियोजन का यह प्राकृतिक तरीका है।

अब रहा प्रश्न स्टेण्डर्ड टाइम का कि पति-पत्नी प्रसङ्ग किस समय करें तो यह कार्य दिन में करना तो कदापि उचित नहीं होता है। रात्रि में भी स्थिति-परिस्थिति और वातावरण के अनुसार ऐसा समय चुनना चाहिए जब पति-पत्नी निश्चिन्त मन हो सके किसी प्रकार की बाधा उपस्थित होने की सम्भावना नहीं हो और एकान्त तथा शान्त वातावरण हो। ऐसा समय मध्य रात्रि के आसपास हो सकता है रात्रि का प्रथम और अन्तिम प्रहर इस कार्य के लिए उचित नहीं है क्योंकि रात्रि का प्रथम प्रहर चहल-पहल भरा तथा अन्तिम प्रहर यानि रात्रि के ४ बजे के बाद ब्रह्ममुहूर्त्त अर्थात् अमृत बेला का समय होता है।

मासिकस्राव में एक दो दिन केवल गुलाबी दाग लगना स्वस्थ स्थिति नहीं है अत: मासिकस्राव पूरे तीन दिन होना चाहिए। मासिकस्राव नियमित तीन दिन होने लगे तभी गर्भाधान की सोचे इससे पूर्व औषधि लेकर ठीक हो जाएँ।

शुक्ल पक्ष एवं समरात्रि में ही संसर्ग करने में उत्पन्न होने वाली समस्याएँ

यदि किसी महिला को मासिकस्राव शुक्ल पक्ष की बारहवीं या दसवीं तिथि के आस-पास होता है तो गर्भधान योग्य ऋतुकाल कृष्ण पक्ष में ही आता है ऐसी सभी बहनों की समस्याओं का समाधान भी मेरे पूज्य गुरुदेव हिमालय योगी ने बता दिया है वह भी मैं क्रमवार प्रस्तुत करूँगा। अनेक महिलाओं का मासिकस्राव कुछ महीनों तक शुक्ल पक्ष के अन्तिम दिनों में शुरू होता रहता है जिससे जब तक वे ऋतुस्राव से निवृत्त होकर स्नान करती हैं तब तक कृष्ण पक्ष शुरू हो जाता है जबकि पुत्र प्राप्ति हेतु शास्त्र का

विधान है कि ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि के समय शुक्ल पक्ष (चांदनी रात वाला उजेला पखवड़ा) भी होना आवश्यक है। यदि ये छः ही रात्रियाँ शुक्ल पक्ष में पड़ती हों तो सभी ६ रात्रियों में पुरुष को पत्नी प्रसंङ्ग करना चाहिए और पत्नी को पति प्रसंग करना चाहिए क्योंकि पता नहीं किस रात्रि के करने से गर्भ ठहरे। यदि ये ६ रात्रियाँ शुक्ल पक्ष में नहीं पड़े यानि ६, ८, १० रात्रि के बाद शुक्ल पक्ष समाप्त हो जाता है तो १२, १४, १६वीं रात्रि प्रसंग नहीं करना चाहिए क्योंकि पुत्र प्राप्ति के लिए सिर्फ शुक्ल पक्ष में पड़ने वाली सम संख्या (जिसकी गणना मासिकस्राव प्रारम्भ होने के दिन से करेंगे) ही होनी चाहिए। ध्यान रखें— ६, ८, १०, १२, १४, १६ सम संख्याएँ है ७,९,११,१३,१५ विषम संख्या हैं।

मासिकस्राव शुक्ल पक्ष के अन्तिम दिनों में होने वाली महिला के लिए यह समस्या है क्योंकि प्रसंगकाल कृष्ण पक्ष में पड़ता है तब भी ऐसी स्थिति में कृष्ण पक्ष में हरगिज प्रसंग नहीं करे बल्कि मासिकस्राव की आगामी ७-८ महीनों की सम्भावित तारीखे लिख लें और यह देखें कि कितने समय बाद यह मासिकधर्म शुक्ल पक्ष की एकम तक आ जायेगा। कभी न कभी तो ऐसा जरूर होगा आज शुक्ल पक्ष के अन्तिम दिनों में या कृष्ण पक्ष के प्रारम्भ में होने वाला मासिकधर्म कृष्ण पक्ष की दसमी से शुक्ल पक्ष की एकम के बीच होगा क्योंकि पखवाड़े (पक्ष) १५-१५ दिनों के होते हैं, जबकि ऋतुकाल या मासिक चक्र २८ दिन या इससे कम का भी हो सकता है। इस प्रकार हिसाब लगा लेना चाहिए। यदि ऋतुकाल ३० दिन का ही हो और आगामी एक वर्ष तक ऐसी स्थिति नहीं बने और आपको पुत्र इसी वर्ष ही करना है तब भी स्त्रियों को मासिकधर्म आगे बढाने के लिए टोटका (मेरे गुरुदेव ने बताया जो अन्य कहीं पर वर्णित नहीं है) लिख रहा हूँ—

टोटका—मासिकस्राव प्रारम्भ होने से २ या तीन दिन पूर्व स्त्री को तुलसी के पेड़ या पौधे जो आपके घर में लगा हो उसकी जड़ में सवा रुपया एवं सुपारी दबा देनी चाहिए तथा तुलसी माता को बोलना चाहिए— हे मातेश्वरी इस बार यह मासिक धर्म ५ दिन आगे बढ़ा देना ताकि दो तीन माह आपके इस प्रयोग से मेरा मासिकस्राव कृष्ण पक्ष की दसवीं से

शुक्ल पक्ष की एकम के बीच हो जाए। आप मासिकस्राव जितने दिन विलम्ब से बोलेंगे उतने दिन तुलसीमाता वह भार अपने ऊपर ले लगी। बाद में मासिकधर्म तीन दिन के शुद्ध स्नान बाद सवा रुपया व सुपारी निकालकर किसी भी मन्दिर में चढ़ाकर आ जाएँ। इस प्रकार दो-तीन माह के इस प्रयोग से आपका जो उद्देश्य है वह पूरा हो जायेगा। कभी विवाह, हवन, उत्सव आदि पवित्र आयोजनों की तिथि पर भी आपके मासिकस्राव की तिथि आती है तो स्त्रियों को यह टोटका कर लेना चाहिए। यह टोटका गोपनीय रखें, अपने पति को भी नहीं बतायें, किसी स्त्री से इसकी चर्चा नहीं करें, कभी नहीं करें अन्यथा फिर भविष्य में यह टोटका कभी सफल नहीं होगा। इस टोटके को या तो केवल आप जानें या पुस्तक पढ़ने वाली महिला ही जाने वरना तुलसी माता सफल होने नहीं देगी। यदि आपको किसी को बताना ही हो तो भी यह मत कहें कि इस पुस्तक में यह टोटका देख लें ज्यादा से ज्यादा उसको नई पुस्तक खरीदकर पढ़ने को कहें। अन्यथा टोटका आप खोलकर बता देंगी तो वह स्त्री यह समझेगी की आपने भी यह किया होगा तो फिर आपके ऊपर कभी लागू नहीं होगा।

'न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन'

इस टोटके को कोई भी स्त्री आपसे कितनी ही विनती करके माँगे नहीं दें। वरना आपके ऊपर कभी असर नहीं करेगा। अधिक ही हो तो पुस्तक सम्बन्धित स्त्री को खरीदने को बता दें। उसका भाग्य है यदि वह इस टोटके को पढ़ती है। टोटका करते समय अश्रद्धा नहीं रखें। किसी कारण से भावना में कभी या इष्टकृपा में कमी से हो सकता है टोटका आपके काम नहीं करे तो टेबलेट लेकर भी मासिक धर्म दो-तीन माह आगे बढ़ाकर शुक्ल पक्ष में प्रसंग रात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६ ला सकती हैं। यानि पुत्र प्राप्ति के लिए आप जो कुछ प्रयास कर सके कर लें। वंश वृद्धि एवं पुत्र सुख के बिना माता की गोद एवं आँचल सूना माना जाता है। और जिस स्त्री की गोद एवं आँचल सूना होता है, समझ लें कहीं न कहीं उसने दुर्भाग्यवश कोई गलत कर्म किया है। परन्तु भाग्य से यह पुस्तक मिलने के बाद पूरा अध्ययन करके प्रयास करें तो पुत्र की मनोकामना पूरी होगी। पुत्र के बिना तो कई पूजाएँ स्त्रियाँ कर ही

नहीं सकती हैं। जैसे बछबारस के दिन बछड़े वाली गाय की पूजा। अतः कन्या वाली माताएँ निराश नहीं हों यदि पुस्तक की कोई बात समझ में नहीं आती है तो आप हमसे निःसंकोच पत्र व्यवहार कर पूछ लें। गुरुदेव ने मुझे सौगन्ध दे रखी है कि किसी भी दुःखी महिला की बात इधर-उधर नहीं करोगे। तो गुरुदेव के वचन से मैं बद्ध भी हूँ अर्थात आपकी सम्पूर्ण समस्या गोपनीय ही नहीं अत्यन्त गोपनीय रहेगी। पत्र में आप अपना शुरू से अन्त का सब दुःख वर्णन कर दें हो सकता है कि ईश्वर की कृपा से आपके दुःख मिट जाएँ और जीवन में नई क्रान्ति आ जाए।

''ज्योति से ज्योति जगा सद्गुरु ने कर दी सदा दीवाली।''

कुछ गलतफहमी या शंकाएँ

प्रश्न—ऋतुकाल का आरम्भ दिन से गणना करें या ऋतुस्राव बन्द होने पर स्नान के दिन से मानें।

उत्तर—ऋतुकाल तो पहले दिन से ही माना जाता है जो कि १६ दिन का होता है लेकिन गर्भाधान के लिए छठी रात्रि से १६ वीं रात्रि के अन्तिम दिन कुल ११ रात्रि ही प्रसंग योग्य होती हैं। ऋतुकाल प्रारम्भ से पहली पाँच रात्रि प्रसंग के लिए वर्जित हैं। माना कि १ जनवरी, २००३ को दिल्ली की किसी महिला को प्रातः ७ बजकर ५० मिनट पर ऋतुकाल प्रारम्भ हुआ (कपड़े आये) तो १ जनवरी, २००३ को बुधवार है अतः बुधवार को सूर्योदय से गुरुवार सूर्योदय तक एक तारीख ही मानेंगे इसलिए इस केस में समरात्रि ६ जनवरी, २००३, ८ जनवरी, २००३, १० जनवरी, २००३, १२ जनवरी, २००३, १४ जनवरी, २००३, १६ जनवरी, २००३ होगी और इन सभी रात्रियों में शुक्ल पक्ष है। अतः इन सभी रात्रियों को पति-पत्नी प्रसंग करने से पुत्र ही होगा। अब उदाहरण में मान लीजिए महिला को मासिकस्राव १ जनवरी, २००३ को प्रातः ५ बजे ही हुआ तो १ जनवरी, २००३ को प्रातः ५ बजे मंगलवार ही होगा और इसे ३१ दिसम्बर, २००२ को हुआ ऋतुस्राव ही मानेगे जैसा कि मैंने बार-बार स्पष्ट कर दिया है। भारतीय कालगणना के अनुसार एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बीच दिन रात और तिथि की

गणना की जाती है जबकि रात को १२ बजे तारीख बदलने की मान्यता पश्चिमी देशों की है यह बार-बार समझा रहा हूँ क्योंकि अर्थ का अनर्थ हो जाता है और पुत्र की जगह पुत्री होती है। अब इस उदाहरण में १ जनवरी, २००३ को प्रातः ५ बजे मासिकस्राव प्रारम्भ हुआ (प्रारम्भ उसे मानेंगे जब पहली बूँद स्त्री योनि से स्राव हो) अतः इसे ३१ दिसम्बर, २००२ को ही स्राव मानेंगे। पहली बूँद गिरने का समय महिला को सतर्क रहकर नोट करना पड़ेगा अन्यथा सब मेहनत बेकार हो जाती है। अब ३१ दिसम्बर, २००२ से सम रात्रि ५ जनवरी, २००३, ७ जनवरी, २००३, ९ जनवरी, २००३, ११ जनवरी, २००३, १३ जनवरी, २००३, १५ जनवरी, २००३ होगी; इन्ही तारीखों की रात्रि ११ बजे से ४ बजे के मध्य कभी भी स्त्री प्रसंग करे तो पुत्र ही प्राप्त होगा। अब आप समझें कि मात्र २ घण्टे ५० मिनट का मासिक स्राव पूर्व होना सम-विषम दिन को ही परिवर्तित कर देता है। २ घण्टे ५० मिनट तो बहुत दूर है यदि ऐसे समय स्राव प्रारम्भ हो जब सूर्योदय हुआ हो तो आपके स्थानीय सूर्योदय की भी गणना करनी होगी जैसे मुम्बई की एक महिला को १ जनवरी, २००३ को मासिकस्राव सुबह सात बजकर ५ मिनट पर होता है तो भी ३१ दिसम्बर, २००२ ही माना जायेगा क्योंकि बम्बई में ७ बजकर १५ मिनट पर एक जनवरी, २००३ को सूर्योदय हुआ है और जैसा कि मैं बार-बार स्पष्ट कर चूका हूँ कि सूर्योदय से पूर्व पिछला वार एवं दिन ही मानेंगे तो ७ बजकर ५ मिनट पर १ जनवरी, २००३ को मासिकस्राव प्रारम्भ होने वाली महिला के लिए समरात्रि क्रमशः ५, ७, ९, ११, १३ एवं १५ जनवरी होगी। यदि इसी महिला को १ जनवरी, २००३ को मासिकस्राव ७ बजकर २० मिनट प्रातः होता तो इसे १ जनवरी, २००३ को ही मानें क्योंकि ७ बजकर २० मिनट पर बम्बई में सूर्योदय हो चुका है अतः ७ बजकर २० मिनट पर पहली बूँद टपकने पर समरात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६ जनवरी, २००३ होती क्योंकि इन सभी दिनांकों को शुक्ल पक्ष ही है। अतः सभी रात्रियाँ प्रसंग के काम में ली जानी चाहिए। यदि मान लें कि इसमें शुक्ल पक्ष नहीं होता तो नहीं करते। विदित रहे सूर्योदय प्रत्येक स्थान के अक्षांश एवं रेखांश परिर्वतन के कारण अलग-अलग होते हैं। इसमें भी

गणना करने में दिक्कत आती है या समझ में ही नहीं बैठ रहा है तो आप हमसे पूछ सकती हैं परन्तु बिना समझे विचारे गलत गणना करके प्रसंग नहीं करें वरना पुत्र की जगह पुत्री हो जायेगी। किसी भी प्रकार का मन में भय नहीं रखकर शुक्ल पक्ष एवं समरात्रि का प्रयोग करें फिर गर्भाधान के बाद पुत्र प्राप्ति की औषधि ले लें जिसका वर्णन भी मैं इसी पुस्तक में करूँगा, तो आपके पुत्र होने से कोई रोक ही नहीं सकता है। गर्भ के पहले माह से तीसरे माह कई व्यक्ति पुत्र प्राप्ति की औषधि देते हैं परन्तु वे बताते नहीं हैं मेरे पूज्य गुरुदेव ने कह दिया कि तुम सब औषधि इस पुस्तक में मेरे बताये अनुसार वर्णन कर दो ताकि दुकान लगाकर जो कन्या के पिता-माता को ठग रहे हैं उनकी दुकानदारी बन्द हो और दु:खी माता-पिता की जेबें नहीं कटे।

पुत्री पैदा करने हेतु गर्भाधान पक्ष एवं रात्रि

पुत्री पैदा करने के लिए कृष्ण पक्ष एवं विषम रात्रि ५, ७, ९१, १३, १५ श्रेष्ठ है। वैसे शास्त्रों में तो कहीं पर भी कृष्ण पक्ष में प्रसंग का वर्णन नहीं है क्योंकि कृष्ण पक्ष में प्रेत-पितर आदि आत्माएँ हावी रहती हैं और शुक्ल पक्ष में देव कार्य होते हैं, देवात्मा विचरण करती है इसलिए शास्त्रों में तो पुत्री पैदा करने हेतु भी शुक्ल पक्ष एवं विषम रात्रि ५, ७, ९, ११, १३, १५ का प्रावधान है। परन्तु सर्वसम्मत मत से यह कहा जा सकता है कि पुत्री पैदा करने की इच्छा रखने वाले किसी भी पक्ष (चाहे कृष्ण पक्ष हो या शुक्ल पक्ष) में मासिक धर्म प्रारम्भ से विषम रात्रि ५वीं ७वीं ९वीं ११वीं १३वीं १५वीं रात्रि में प्रसंग करने से पुत्री पैदा होती है। रात्रि की गणना करना पुत्र पैदा करने वाले दृष्टान्त में विस्तृत समझाया गया है। पुत्री पैदा करने में कृष्ण पक्ष भी काम में लेते हैं क्योंकि ऐसा माना जाता है कि प्रेत-पितर आदि कन्या को दोष नहीं देते हैं। वैसे तो इसमें भी शुक्ल पक्ष की विषम रात्रि ५, ७, ९, ११, १३, १५ हो तो देवकन्या ही उत्पन्न होती है उसका तो वर्णन ही क्या करना तथापि पुत्री पैदा करने के लिए दोनों पक्ष प्रसंग के लिए उपयोगी हैं इसलिए पुत्री पैदा करने में मासिक धर्म कब आये इसका कोई चक्कर ही नहीं है बस विषम रात्रि में पति-पत्नी प्रसंग कर लें।

माना कि पुत्री पैदा करने वाली महिला को दिनांक १० जनवरी, २००३ को मासिकस्राव प्रारम्भ हुआ और दिन में २ बजे हुआ तो १० जनवरी, २००३ शुक्रवार सूर्योदय से शनिवार ११ जनवरी, २००३ सूर्योदय तक वही दिन होगा। अतः १० जनवरी, २००३ से विषम रात्रि गणना करने पर ५, ७, ९, ११, १३, १५वीं रात्रि क्रमशः १६ जनवरी, २००३, १८ जनवरी, २००३, २० जनवरी, २००३, २२ जनवरी, २००३, २४ जनवरी, २००३ एवं २६ जनवरी,२००३ होगी। अब इन दिनों को पक्ष में देखने की जरूरत ही नहीं है। १६ जनवरी, २००३ को शुक्ल पक्ष की १३ है; १८ जनवरी, २००३ को पूर्णिमा है; २० जनवरी, २००३, २२ जनवरी, २००३, २४ जनवरी, २००३ एवं २६ जनवरी, २००३ को कृष्ण पक्ष की क्रमशः २, ४, ७, ९ तिथि है चूंकि यह स्पष्ट किया जा चुका है कि पुत्री पैदा करने के लिए केवल मासिक धर्म से विषमरात्रि देखना है कृष्ण पक्ष, शुक्ल पक्ष का ध्यान रखना ही नहीं है। अतः पुत्री पैदा करने के लिए तो जिस माह सोचें उसके अगले माह ही गर्भाधान हो जाएगा। बस विषम रात्रि में स्त्री की रज अधिक होती है और रज अधिक होने के परिणाम स्वरूप पुत्री ही पैदा होती है। यह तो मैं आपको बार-बार स्पष्टकर चुका हूँ कि पति-पत्नी प्रसंग के लिए नक्षत्र एवं तिथि नहीं देखनी है हालाँकि शास्त्रों में तो पुत्र पैदा करने के विहित नक्षत्र एवं समतिथि ही बतायी है परन्तु फिर निहित नक्षत्र समतिथि समरात्रि वर्षों बाद भी नहीं मिलेंगे और शास्त्रों के चक्कर में आप डूब जायेंगे क्योंकि कहीं-कहीं पर व्यावहारिक पहलू भी देखा जाना आवश्यक होता है। कर्म प्रधान होता है, प्रत्येक चीज को ईश्वर एवं शास्त्र भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता है इसीलिए तो औषधि सेवन भी पुत्र प्राप्ति हेतु फलदायी माना गया है।

इसी उदाहरण में जिस महिला के १० जनवरी, २००३ को दिन में २ बजे मासिकस्राव प्रारम्भ हुआ पुत्र ही पैदा करना है तो समरात्रि ६, ८, १०, १२, १४, १६वीं रात्रि एवं शुक्ल पक्ष में प्रसंग करना होगा। अब इस उदाहरण में ६वीं एवं ८वीं रात्रि तो शुक्ल पक्ष में पड़ रही है क्योंकि १५ जनवरी, २००३ को ६वीं रात्रि है और १७ जनवरी, २००३ को ८वीं रात्रि है ये दोनों रात्रि शुक्ल पक्ष की क्रमशः द्वादशी एवं चतुर्दशी है। परन्तु दसवीं रात्रि कृष्ण

पक्ष की एकम आ गयी, अतः पुत्र प्राप्ति हेतु पति-पत्नी १५ जनवरी, २००३ एवं १७ जनवरी, २००३ को ही मात्र २ दिन संगम कर सकेंगे। तिथि में यदि एकादशी की रात्रि पति-पत्नी संयम रख सकें तो उचित है। इस दिन सम रात्रि आये तो भी पति-पत्नी को संयम ही रखना चाहिए।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

भारतीय शरीर विज्ञान के अनुसार शुक्ल पक्ष के समय सम संख्या वाली ६वीं, आठवीं, दसवीं, बारहवीं, चौदहवीं एवं सोलहवीं रात्रियों में गर्भाधान करने से पुत्र प्राप्ति का विधान बताया है तो हो सकता है कि इन रात्रियों में और शुक्ल पक्ष के समय में चन्द्रमा के प्रभाव से पुरुष शुक्राण में y पावरफुल रहता हो। जिस प्रकार ओवूलेशन पीरियड में स्त्री का डिम्ब अनिवार्य रूप से गर्भाधान में उपस्थित रहता है। चन्द्रमा से मन के वेग का सीधा सम्बन्ध तो यजुर्वेद ने स्वीकार है। यजुर्वेद में वर्णित रुद्राष्टाध्यायी के दूसरे अध्याय को बारहवें श्लोक में वर्णन है—

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्रद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निर जायता॥

अर्थात् चन्द्रमा मन का स्वामी है मन के वेग को चन्द्रमा ही प्रभावित करता है। सूर्य नेत्र का, कान वायु का और मुख अग्नि का स्वामी है।

पति-पत्नी संगम में कृतसंकल्प मन का वेग ही महत्वपूर्ण होता है। मन का वेग ही आवेश एवं उत्तेजना उत्पन करता है और जितना अधिक पौरुषीय वेग होगा उतनी ही सफलता पुत्र प्राप्ति में मिलेगी। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा की कला दिन प्रतिदिन बढ़ती है उसी से शुक्ल पक्ष की उत्तरोत्तर रात्रि में पुरुष का वेग अधिक होता है। मन के वेग अधिक होने से वीर्य का वेग भी अधिक होगा। वीर्य के वेग अधिक होने से पुरुष का y सीधा गर्भ में गिरेगा और xy का संयोग होकर पुत्र होगा। वीर्य के वेग अधिक होने से y शुक्राणु की गति भी तेज होगी। इसलिए यदि आप शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की रात्रि में और वह आठवीं रात्रि हो तो एक बार पति-पत्नी संगम में गर्भाधान हो जायेगा और गारण्टी से वह पुत्र होगा। बशर्ते ध्यान रखें की संगम के

समय कृष्ण पक्ष की एकम तो प्रारम्भ नहीं हो गई क्योंकि कलैण्डर या पंचाग में तिथि पूरे दिन के लिए दी होती है। परन्तु घटी पल से घण्टा मिनट ज्ञात कर जानना होता है कि पूर्णिमा कब समाप्त हो रही है। माना कि पूर्णिमा रात्रि ११ बजे समाप्त हो गई और आप रात्रि १२ बजे व २ बजे के मध्य समागम कर रहे हैं तो पुत्र नहीं होकर पुत्री होगी क्योंकि आपने समागम कृष्ण पक्ष की एकम को किया। और चूँकि पूर्णिमा समाप्त होते ही चन्द्रमा की कलाएं घटती जाती हैं इसके साथ मन का वेग एवं गति भी कम हो जाती है।

गर्भ में पुत्र या पुत्री का शरीर बनाने में कारण होते हैं पुरुष-स्त्री के क्रोमोज़ोम। स्त्री में xx क्रोमोज़ोम्स ही होते हैं जबकि पुरुष में x और y दोनों क्रोमोज़ोम होते हैं यदि x और x क्रोमोज़ोम का संयोग होता है तो लड़की और x और y क्रोमोज़ोम का संयोग होता है तो लड़का होता है। चूंकि शुक्ल पक्ष में y क्रोमोज़ोम अत्यन्त पावरफुल होता है तथा समरात्रि में स्त्री रज कम होने से स्त्री के x x क्रोमोज़ोम जो y को मारकर गिराने की चेष्टा करते हैं सफल नहीं हो पाते हैं। विदित रहे स्त्री के x x क्रोमोज़ोम सदैव पुरुष के y क्रोमोज़ोम से झगड़ा करके मारने का प्रयास करते हैं परन्तु पुरुष का y क्रोमोज़ोम यदि पवारफुल है जो कि औषधि सेवन से किया है या शुक्ल पक्ष समरात्रि से किया है तो y मरेगा ही नहीं और xy का संयोग होकर पुत्र हो जायेगा। इस प्रकार शुक्लपक्ष एवं समरात्रि में संयोग होकर पुत्र होना पूर्णतया: वैज्ञानिक दृष्टिकाण से युक्त एवं यजुर्वेद के अनुसार प्रमाणित है परन्तु विज्ञान इसे साबित करना नहीं चाहता है क्योंकि जो वैज्ञानिक बोलेगा उसी को पुरुष-स्त्री कोसेगें क्योंकि आज के पुरुष-स्त्री प्रत्येक चीज तो चाहते हैं लेकिन किसी भी चीज को प्राप्त करने के लिए कुछ खोना नहीं चाहते हैं। परन्तु हिमालय योगियों की राय में कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। अत: यदि पुत्र ही प्राप्त करना है तो शुक्ल पक्ष एवं सम रात्रि में ही पति-पत्नी प्रसंग करें विषम रात्रि में संयम रखना अनिवार्य है। ऐसा नहीं कि शयन कक्ष में गए और सम-विषम देखना बन्द। क्योंकि काम के वशीभूत समविषम देखना हास्यस्पद है उस समय कुछ नहीं सूझता, यह कार्य तो विवेकी पुरुष ही कर सकते हैं। इसमें भी यह अनिवार्यता है कि आपकी पुत्र प्राप्त करने

की चाहत कितनी है। यदि आपमें वाकई में पुत्र प्राप्ति की कामना है और इसके लिए कुछ भी कर सकते हैं तो ऐसे दम्पत्ति तो संयम रख भी लेते हैं और उन्हें पुत्र सुख मिलता भी है और वंश वृद्धि भी होती है। सही मायने में पुत्र चाहने वाला तो सब कुछ करने को तैयार हो जाता है। ५ मिनट एकान्त में पति-पत्नी युवावस्था में बैठकर सोचें की हमारे बुढ़ापे में हमारे धन को कौन खायेगा, हमारा बुढ़ापा कैसे बीतेगा हम सब यह हाय हाय किसलिए कर रहे हैं? तो निश्चित रूप से आप भी येनकेन प्रकरेण पुत्र उत्पन्न करना ही चाहेंगे। हिन्दुओं के सभी वेद शास्त्रों में पुत्र उत्पत्ति अनिवार्य बताई है। जब मुस्लिम शास्त्र में मुस्लिम को दो विवाह करने का कानूनन अधिकार है तो हिन्दू को भी पुत्र प्राप्ति का कानूनन अधिकार वेदों-शास्त्रों अनुरूप होना चाहिए, इसके लिए प्रत्येक कन्या का पिता अनिवार्यतः पुत्र उत्पन्न करने का प्रयास करें। क्योंकि भारतवर्ष में जनसंख्या नियन्त्रण पर मुस्लिमों के लिए कोई प्रतिबन्ध कानून नहीं है क्योंकि वे दो विवाह के हकदार हैं तो आप भी पुत्र उत्पत्ति के हकदार बनें। पुत्र पैदा करने का एक प्रयास पुस्तक पढ़ने के बाद तुरन्त प्रभाव से करें चाहे आपके दस कन्याएँ ही क्यों नहीं हों। भगवान् चोंच देता है तो चुग्गा भी देता है। अब पाँच बातें लिखकर उनका उत्तर देना शास्त्रसम्मत उचित समझ रहा हूँ ये पाँचों प्रश्न वैज्ञानिक एवं वैदिक दृष्टिकोण से युक्त हैं—

पुत्र पैदा करने हेतु पाँच प्रश्नों पर मनन

प्रश्न— *पुत्री और पुत्र तो बराबर हैं, परिवार नियोजन नहीं करेंगे तो जनसंख्या बहुत बढ़ जायेगी जिससे लोगों को अन्न नहीं मिलेगा, फिर लोग जीयेंगे कैसे?*

उत्तर—यह प्रश्न सर्वथा ही अयुक्त है, युक्तिसंगत नहीं हैं। क्योंकि जहाँ मनुष्य पैदा होते हैं, वहाँ अन्न भी पैदा होता है। भगवान् के यहाँ इतना अँधेरा नहीं है कि मनुष्य पैदा हो और अन्न पैदा नहीं हो।

प्रारब्ध पहले रचा, पीछे रचा शरीर।
तुलसी चिन्ता क्यों करे, भज ले श्रीरघुवीर॥

माँ के स्तनों में दूध पहले पैदा होता है उसके बाद बच्चा पैदा होता है। इसका क्या पता? जब बच्चा पैदा होता है, तब माताएँ स्तनों में से पुराना दूध निकालकर बच्चे को नया दूध पिलाती हैं। आपने भी विवाह में देखा होगा कि विवाह की व्यवस्था पहले होती है, बाराती बाद में पहुँचते हैं। ऐसा नहीं होता है कि बाराती पहुँच गये और उसके बाद में कन्या के पिता ठहरने का स्थान ढूढेंगे या व्यवस्था करेंगे। कोई उत्सव होता है तो उसकी व्यवस्था पहले हो जाती है। ऐसा नहीं होता कि पहले उत्सव हो, फिर व्यवस्था हो। ऐसा देखा भी जाता है और वैज्ञानिकों का भी कहना है कि जहाँ वृक्ष नहीं होते, वहाँ वर्षा कम होती है। इसी प्रकार मनुष्य अधिक होंगे तो अन्न भी अधिक पैदा होगा। अन्त में कमी कैसे आयेगी? क्या मनुष्य वृक्षों से नीचे है। अत: एक, दो, तीन, चार, पाँच कन्याओं के पिता एक बार पुत्र प्राप्ति के प्रयास करें। चाहे उम्र अधिक हो गई है। पुरुष ८० वर्ष की आयु तक और महिला ६५ वर्ष की उम्र तक पुत्र पैदा कर सकती है। ''बिना पुत्रे न गतम्'' पुत्र के बिना गति नहीं है। ध्यान रखें।

प्रश्न— *अधिक बच्चे होंगे, मनुष्य होंगे तो अन्न और महँगा होगा। आज अन्न इतना महँगा हो गया है इसका कारण जनसंख्या वृद्धि नहीं है तो और क्या है?*

उत्तर—वास्तविकता तो यह है कि जब से परिवार-नियोजन होता गया, तब से अन्न भी महँगा होता गया, कम पैदा होता गया। जब मनुष्यों की संख्या कम होगी तो फिर अन्न अधिक क्यों पैदा होगा? तात्पर्य यह है कि परिवार नियोजन की प्रथा चलने से ही यह दशा हुई है।

आज 'मांस खाओ,' 'मछली खाओ,' 'अण्डा खाओ'—ऐसा प्रचार किया जाता है तो फिर वर्षा और खेती क्यों हो? कारण कि मांस खाने से पशु नहीं रहेंगे तो उनके लिए घास की जरूरत नहीं और मनुष्य मांस खायेगे तो उनके लिए अन्न की जरूरत नहीं, फिर निरर्थक घास और अन्न पैदा क्यों हो।

जब मनुष्य अधिक हों और वस्तुएँ कम हों, तब महँगाई होती है। वस्तुएँ तभी कम होती हैं, जब मनुष्य काम न करे, आलस्य प्रमाद करें। आज

भी यही दशा है। लोग काम तो कम करते हैं और खर्चा ज्यादा करते हैं, इसलिए इतनी महँगाई हो रही है। काम कम करने से वस्तुएँ कम पैदा होंगी ही। अत: महँगाई का कारण जनसंख्या अधिक होना नहीं है प्रत्युत मनुष्यों में अकर्मण्यता, आलस्य, प्रमाद आदि दोषों का बढ़ना ही है। सरकार की अव्यवस्था भी इसमें कारण है।

***प्रश्न**—आज महँगाई के जमाने में दो पुत्रियाँ, तीन पुत्रियाँ, चार पुत्रियाँ के बाद भी एक पुत्र पैदा करने की सोचोगे तो उनका पालन पोषण कैसे करोगे?*

उत्तर—जिनके एक पुत्र एवं एक पुत्री है उनको तो पैदा करने की आवश्यकता नहीं है, जिनके दो पुत्र हैं वे भी कन्या के अभाव में दान-पुण्यकर जीवन को धन्य बना सकते हैं परन्तु जिनके केवल कन्याएँ ही हैं उनका भविष्य आज के इस युग में कौन सम्भालेगा? अत: आप विचार करें कि एक पुत्र और होने से पालन-पोषण में कितना खर्च बढ़ जायेगा, वैसे भी आवश्यकता अविष्कार की जननी है। सन्तानें अधिक होंगी तो उनके पालन-पोषण की व्यवस्था भी जरूर होगी। पहले के जमाने में यह देखी हुई बात है कि जिस वर्ष टिड्डियाँ अधिक आती थीं, उस वर्ष खेती अच्छी होती थी, अकाल नहीं पड़ता था। टिड्डियाँ के आने पर लोग उत्साह से कहते थे कि इस बार वर्षा अधिक होगी क्योंकि इतने जन्तु आये हैं तो उनके भोजन की व्यवस्था (खेती) भी अधिक होगी। भगवान् की व्यवस्था पहले थी, वह आज भी जरूर होगी। आप परिवार नियोजन तो दो पुत्री, तीन पुत्री, चार पुत्री के बाद पुत्र नहीं होते हुए भी कर लेते हैं और व्यवस्था का भार अपने पर ले लेते हैं, इसी का यह परिणाम है कि आज व्यवस्था करने में मुश्किल हो रही है। अत: आप अपने पर भार मत लो अपने कर्त्तव्य में तत्पर होकर इस पुस्तक में वर्णित विधि के अनुसार कम से कम एक पुत्र तो अवश्य पैदा करो। आपके और आपके परिवार के पालन-पोषण की व्यवस्था भगवान् की तरफ से जरूर होगी।

पहले राजा-महाराजाओं के यहाँ हजारों सन्तानें पैदा होती थीं और उनका पालन पोषण भी होता था। जैसे राजा सगर के साठ हजार पुत्र थे, राजा

अग्रसेन के अनेक पुत्र हुए, जिनके वंशज आज अग्रवाल कहलाते हैं। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र थे। इस प्रकार एक-एक आदमी की सैंकड़ों, हजारों सन्तानें हुई हैं।

आप थोड़ा विचार करें, जो मुसलमान भाई हैं, वे चार-चार विवाह करते हैं, मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा है कि एक भाई के उन्नीस बालक हुए उनमें से दो मर गए और सत्रह मौजूद हैं। इस प्रकार वे प्राय: परिवार नियोजन नहीं करते, फिर भी उनकी सन्तान का पालन-पोषण हो रहा है। क्या केवल हिन्दू ही अन्न खाते हैं, कपड़े पहनते हैं, पढ़ाई करते हैं? दूसरे लोग क्या अन्न नहीं खाते, कपड़े नहीं पहनते, पढ़ाई नहीं करते? मुसलमान भाई तो कहते हैं कि सन्तान होना खुदा का विधान है उसको बदलने का अधिकार मनुष्य को नहीं है। जो उसके विधान को बदलते हैं, वे अनाधिकार चेष्टा करते हैं। वास्तव में दो पुत्री, तीन पुत्रियाँ होने पर आदमी को भयभीत नहीं होना चाहिए एक पुत्र तो पैदा ही करना चाहिए। जब मुसलमानों ने तो यहाँ तक सोच रखा है कि परिवार नियोजन नहीं करेंगे तो अपनी जनसंख्या बढ़ेगी और जनसंख्या बढ़ने से अपना ही राज्य हो जायेगा, क्योंकि वोटों का जमाना है। इसलिए वे केवल अपनी जनसंख्या बढ़ाने की धुन में हैं। तब हिन्दू को दो पुत्रियाँ, तीन पुत्रियाँ, चार पुत्रियों के बाद भी पुत्र नहीं है तो ऑपरेशन कराने की जरूरत कहाँ है।

हिन्दु धर्म में मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में लिखा है—

बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सब ग्रंथहिं गावा॥

अर्थात् मनुष्य जन्म बड़ा दुर्लभ है। अत: कोई जीव मनुष्य जन्म में हिन्दू धर्म में आपका पुत्र दो पुत्रियाँ, तीन पुत्रियाँ या चार पुत्रियों के बाद बनकर आ रहा हो तो उसे परिवार नियोजन कराके रोकना नहीं चाहिए। यदि आप ऑपरेशन कराके उसे रोक देंगे तो वह जीव विधर्मियों के यहाँ पैदा होगा और आपके धर्म का, हिन्दुओं का नाश करेगा क्योंकि आपने पहले ऑपरेशन कराके उसका नाश करने की कोशिश की थी। क्योंकि जीव का

ऋणानुबन्ध केवल एक के साथ नहीं होता, प्रत्युत कइयों के साथ होता है। कौरव और पाण्डव-दोनों की नौ-नौ अंक्षौहिणी नारायणी सेना और एक अक्षौहिणी शल्य की सेना कौरवों की तरफ चली जाने से कौरवों की सेना पाण्डवों की सेना से चार अक्षौहिणी बढ़ गयी अर्थात् पाण्डवों की सेना सात अक्षौहिणी और कौरवों की सेना ग्यारह अक्षौहिणी हो गई। इसी प्रकार हिन्दू लोग दो पुत्रियाँ, तीन पुत्रियाँ या अधिक पुत्रियाँ होने के चक्कर में परिवार नियोजन करेंगे तो उनके यहाँ होने वाला पुत्र विधर्मियों के यहां पैदा हो जायेगा। सांख्यिकीय आंकड़े अनुसार ६ करोड़ दम्पत्ति के केवल कन्याएँ ही हैं। और इनमें से चार करोड़ पच्चीस लाख दम्पत्तियों ने तो बिना पुत्र प्राप्त किये ही परिवार नियोजन कर लिया। तो ये चार करोड़ पच्चीस लाख होने वाले पुत्र शास्त्रानुसार विधर्मियों (मुसलमानों) के घर पैदा हो गए इससे हिन्दुओं की संख्या सवा चार करोड़ कम हो गई और विधर्मियों अर्थात् मुसलमानों की संख्या सवा चार करोड़ बढ़ गई। विधर्मियों की संख्या बढ़ेगी तो फिर वे हिन्दुओं का ही नाश करेंगे। अत: हिन्दुओं को बिन पुत्र पैदा किये परिवार नियोजन नहीं कराना चाहिए अपनी वंश वृद्धि को, सन्तान-परम्परा को नष्ट नहीं करनी चाहिए और गौ घातकों की संख्या बढ़ाकर गौ हत्या के पाप में भागीदार नहीं बनना चाहिए।

प्रश्न— *दो पुत्रियाँ या अधिक पुत्रियाँ हैं, अब पुत्र करें और वह भी कपूत हो जाए तो किसने देखा, इससे अच्छा तो पुत्रियाँ जो हैं उनका पालन-पोषण ही करें, उन्हें ही अच्छा पढायें तो उनके जवाई ही बेटे होंगे। अत: परिवार नियोजन में क्या हानि है ? क्योंकि कम सन्तान होगी तो परिवार सुखी ही रहेगा। पुत्र प्राप्त करने के चक्कर में पुत्रियाँ पैदा करके लाइन लगाने में क्या लाभ है ?*

उत्तर—अब तो यह पुस्तक आपके हाथों लग गई है इसके अनुसार शुक्ल पक्ष, सम रात्रि एवं वीर्यवर्धक औषधि लें तो पुत्री तो हो ही नहीं सकती है। और जहाँ तक कम सन्तान की बात है कि कम सन्तान होने से परिवार सुखी रहेगा, सेवा तो आज के जमाने में बेटे-बेटी कोई नहीं करते हैं, दो पुत्रियाँ हो गईं, बस अब क्या करना ऑपरेशन करा लो, तो यह तो उस स्त्री

को गिराने वाली बात है। ऑपरेशन कराने के बाद उस महिला की गोद एवं आँचल जिन्दगीभर सूना हो जाएगा। और जिस माता का आँचल सूना है वह माता कहाँ हुई? अत: दो पुत्रियों या अधिक पुत्रियों के बाद परिवार नियोजन करा लेना बुद्धिमता नहीं है। क्योंकि जिनके संतान कम है वे भी दुखी है, और जिनकी सन्तान अधिक है वे भी दुखी हैं। मैंने बिना सन्तान वालों को भी देखा है, कम सन्तान वाले को भी देखा है और अधिक सन्तान वालों को भी देखा है। ज्योतिषीय सलाह लेने आने के कारण उनसे मेरी वार्ता भी हुई है। वास्तव में सन्तान ज्याद-कम होना सुख-दु:ख का कारण नहीं है। जो कम सन्तान होने के कारण सुखी हों, ऐसा व्यक्ति एक भी संसार में हो तो मुझे बताओ। संसार में क्या इस पूरी सृष्टि में नहीं मिलेगा कि जो कह दे कि मैं सुखी हूँ। मुझे कोई दु:ख न कभी हुआ, न होगा। क्योंकि सांसारिक आदमी को तो दु:ख घिरे ही रहते हैं। दु:ख का कारण है—'ये हि सं स्पर्शजा भोगा दु:खयोनव एव ते।' (गीता ५/२२) भोगपरायण आदमी कभी सुखी हो ही नहीं सकता है। सम्भव ही नहीं है। जो गृहस्थी है, उसकी सन्तान चाहे ज्यादा हो चाहे कम हो, चाहे बिल्कुल नहीं वह तो थोड़ा-बहुत तो दु:खी रहेगा ही।

मेरा आशय यह नहीं है कि आप सन्तान अधिक पैदा करें, परिवार नियोजन नहीं कराया है और आपके पुत्रियाँ ही हैं तो इस पुस्तक के अनुसार एक प्रयास पुत्र उत्पत्ति का और करें। इसमें कुछ भी समझ में नहीं आये तो नि:संकोच मुझसे पत्र व्यवहार करें या दूरभाष पर वार्ता कर लें। विज्ञान के इस युग में कई साधन हैं। हम घर बैठे ही आपकी सेवा एवं निर्देश के लिए तैयार हैं। प्रत्येक दु:खी माता-पिता जिनके पुत्र नहीं हैं वे पुत्र प्राप्त करें और हिन्दु परम्परा का वंश बढ़े इसी उद्देश्य को लेकर हिन्दुओं के वंशवृद्धि का संकल्प लेकर हिमालय योगियों का आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद यह पुस्तक लिखी है। इसे गम्भीरता से पढ़ें, मनन करें, यह तो वंशवृद्धि एवं पुत्रोत्पत्ति का प्रश्न है और आपके समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा का भी प्रश्न है कोई हंसी-मजाक या चुटकला नहीं है। कहा भी है—

हिम्मत मत छाँड़ो नराँ, मूर्ख ते कहताँ राम।
हरिया हिम्मत से किया, ध्रुव का अटल धाम॥

अतः उत्साह रखें, भगवान् पर भरोसा रखें और उनसे प्रार्थना करें कि एक पुत्र तो आपका देना ही पड़ेगा और मैं पुत्र रत्न आपसे छीन कर ही मानूँगा, तभी विश्राम लूँगा।

"पुत्र रत्न प्राप्त किये बिना मोहि कहा विश्राम"

इस प्रकार आप जितने तत्पर रहेंगे, भगवान् पर भरोसा रखेंगे उतना ही आपको अलौकिक चमत्कारी पुत्र शीघ्र मिलेगा।

प्रश्न— *स्त्री तो एक पुत्र पैदा करना चाहती है चाहे दस कन्याएँ हों परन्तु पुरुष नहीं करें तो क्या करना चाहिए?*

उत्तर—प्रश्न बिल्कुल सत्य है एवं यथार्थता पर आधारित है। प्रत्येक स्त्री पुत्र की माता बनना चाहती है। पुत्र बिना स्त्री की गोद एवं आँचल सूना है। पुत्र प्राप्ति की लालसा में कितनी ही कन्याओं को जन्म दे दिया फिर भी लालसा तो पुत्र की है। गर्भ के ९ मास के खूब दुःख सहे फिर भी यदि कोई व्यक्ति स्त्री को गारन्टी से कह दे कि अबकी बार पुत्र ही होगा तो वह एक बार ९ मास गर्भ और रखने को तैयार हो जाती है। ऐसी गारन्टी आज तक तो किसी पुस्तक में आयी नहीं परन्तु अब तो यह पुस्तक आपके हाथ में है यदि पुरुष वीर्यवर्धक, शुक्राणुवर्धक, शुक्राणुओं को पावरफुल करने की औषधि लें एवं ध्यानपूर्वक समरात्रि एवं शुक्ल पक्ष ही उपयोग करें इसमें कहीं भी नहीं चूकें तो फिर मैं तो मेरे गुरुदेव की जबान पर गारन्टी ही दे रहा हूँ कि पुत्र ही होगा। यह पुस्तक पढ़ने वाली पत्नी अपने पति को भी पूरी पुस्तक पढ़ा दे फिर भी पुरुष पुत्रोत्पत्ति के लिए तैयार नहीं होता है तो उसे कामसुख नहीं भोगने दे। क्योंकि स्त्रियों में कामवेग को रोकने की जितनी शक्ति होती है उतनी पुरुषों में नहीं होती है। अतः पुरुष को संयम नहीं रख पाने के कारण स्त्री की बात माननी ही पड़ेगी। अतः एक प्रयास कर पुत्र प्राप्त करें और हिन्दू वंश परम्परा को बढ़ावें।

पुत्र प्राप्ति के २७ टिप्स

१. मासिकस्राव में तीनों दिन पत्नी सुबह ढाक (पलाश) का पत्ता गाय के दूध में ले।

२. पूर्व दिशा में सिर रखकर शयन करें।
३. शयन कक्ष में भगवान् श्री कृष्ण का बाल चित्र लगायें या किसी सुन्दर से प्यारे बच्चे का केलेण्डर लगायें तथा घूमते-फिरते बार-बार उस चित्र को निहारती रहें और कृष्ण भगवान् से प्रार्थना करें हे प्रभु! मुझे भी ऐसा सुन्दर पुत्र प्रदान करें।
४. पति-पत्नी प्रसंग की प्रथम रात्रि में जो कि मासिकधर्म से छठे दिन की रात्रि होगी यदि छठे दिन की रात्रि चयन नहीं करें और आठवें दिन की रात्रि चयन करें तो अधिक उपयुक्त है। इस स्थिति में छठी रात्रि को समागम नहीं करना है फिर तो इससे श्रेष्ठ प्रयोग है ही नहीं। आठवीं रात्रि जो कि समागम की पहली रात्रि गर्भाधान के उद्देश्य से होगी उसमें प्रथम सहवास करने के १५ मिनट पूर्व या आधा घण्टा पूर्व पत्नी दो नींबू में नमक स्वादानुसार मिलाकर कृष्ण भगवान् के समक्ष रखकर पी जाये और बाद में पति प्रसंग करे तथा पुरुष आधा घण्टा पूर्व दो-तीन कप काफी पीयें।
५. १०वीं, १२वीं, १४वीं, १६वीं रात्रि को स्त्री को कुछ भी नहीं पीना है, नीबू नहीं पीना है अन्यथा हानि हो सकती है। ८वीं रात्रि के बाद से ही पत्नी को खटाई खाना बन्द कर देना है तथा ठण्डी, बासी, चटपटी चीजें नहीं खानी है और खट्टाई का सख्ती से परहेज करना है। साथ पुरुष को तो १०वीं १२वीं १४वीं १६वीं रात सहवास या स्त्री प्रसंग के आध घण्टे पूर्व दो तीन कप स्ट्रांग कॉफी पीनी ही है। तथा दिन में मावा, मिष्ठान्न, खीर, दूध, भात दूध जितन खा पी सकें खाना-पीना है। पुरुष को तो खट्टाई तीन माह पूर्व से लगाकर गर्भाधान तक बन्द ही रखनी है।
६. स्त्री को गर्भाधन के हेतु प्रथम सहवास से ३ माह पूर्व अंगूर टमाटर, नारंगी (संतरा) केला जितने खा सके खाने हैं तथा दूध, पाइनएपल, एपल, गोभी, खीरा, ककड़ी, गाजर, शलजम मौसमी एवं मिर्ची बिल्कुल नहीं खानी है। इस डायटिंग से स्त्री कमजोर होगी और पुत्र ही होगा।
७. पुरुष को प्रथम संगम के तीन माह पूर्व से ही जमकर वीर्यवर्धक

औषधि लेनी है।

८. मासिकधर्म आने का समय नोट करने में अत्यन्त सावधानी रखनी है क्योंकि सूर्योदय पूर्व एवं सूर्योदय पश्चात् में अन्तर हो जाता है। और सम का विषम और विषम का सम हो जाता है इस सम्बन्ध में भ्रान्ति दूर अवश्य करें।

९. मासिकधर्म आने का एक भी दिन चढ़ जाये तो समझ लें गर्भाधान हो चुका है अब पत्नी ३ माह तक लिंग बनने तक, बछड़े वाली गाय का दूध सुबह दोपहर, शाम जितना पी सके पीयें। इस दूध से लिंग ही बनेगा।

१०. घीया अथवा लौकी (Gourd) २५० ग्राम घिसकर साकिल्य अथवा मिश्री मिलाकर तीन माह तक पत्नी गर्भाधान होते ही खाये यह लौकी भी पुत्री नहीं होने देगी।

११. गर्भ के ४०वें एवं ४२वें दिन निम्न औषधि बनाकर लें।

औषधि बनाने की विधि—१. भांग का बीज एक, २. मोर पंख एक जिसमें से गहरा नीला एवं हरा कलर का ऊपर कलिंगी को ही काटकर छोटे-छोटे टुकड़े करने हैं। ३. देशी ५-६ वर्ष पुराना गुड़। ये तीनों चीजों मिलकर एक गोली बनेगी। भांग के एक बीज को पीसना नहीं है, साबुत ही रखना है और मोरपंख को छोटे-छोटे टुकड़े काटकर गुड़ में मिलकर तीनों चीज़ों की एक गोली बनानी है। इस प्रकार की तीन गोली बनानी है और ४०वें ४१वें एवं ४२वें दिन लेनी है। माना कि महिला के २ नवम्बर, २००२ को मासिकस्राव आया फिर गर्भाधान हो गया तो २ नवम्बर, २००२ से ४०वाँ दिन ११ दिसम्बर, २००२ होगा ४१वाँ दिन १२ दिसम्बर, २००२ होगा ४२ वाँ दिन १३ दिसम्बर, २००२ होगा। अत: एक गोली दिनांक ग्यारह दिसम्बर, २००२ को (४०वें दिन), दूसरी गोली दिनांक १२ दिसम्बर, २००२ को (४१वें दिन) तीसरी गोली १३ दिसम्बर, २००२ को (४२ वें दिन) लेने से यदि पुत्री भी गर्भ में पड़ी तो लिंग बदल जायेगा और पुत्र होगा। ध्यान रखें दिन की गणना मासिकस्राव के प्रथम दिन से ही होगी अत: यह

समय और दिनांक अवश्य नोट कर लें और आप चाहें तो मुझसे दूरभाष पर सलाह भी ले सकती हैं।

औषधि लेने की विधि—औषधि छत के नीचे बैठकर नहीं लेनी है, ऊपर खुला होना चाहिए, औषधि प्रातःकाल सूर्योदय होते ही बछड़े वाली गाय के दूध के साथ लेनी है औषधि लेते समय मुख सूर्य भगवान् की ओर पूर्व दिशा में रखना है। औषधि लेते समय पत्नी औषधि को चबाये नहीं, निंगल जाये। औषधि पति को अपने हाथ से पत्नी को देनी है। औषधि लेते समय महिला अपने बाँयें पैर पर दाँयें पैर को रखकर बैठ जाये तथा पृष्ठभाग जमीन पर नहीं स्पर्श करे इस प्रकार बैठकर औषधि लेनी है। यह औषधि लगातार तीन दिन ४०वें ४१वें एवं ४२वें दिन लेनी है।

१२. इस प्रकार ४२ वें दिन के बाद जितनें भी मंगलवार, गुरुवार एवं रविवार आये ७० दिन के गर्भ तक लक्ष्मणा बूटी की एक गोली प्रातः सुबह लेनी है। यह औषधि मंगल, गुरु एवं रविवार पुरुष ग्रहों के दिन ही लें।

१३. इसके बाद गर्भ के ७१वें दिन गुड़ में थोड़ा सा जायफल मिलाकर खाने से भी पुत्र ही होता है।

१४. इसके बाद ७२ वें दिन से ८० दिन के गर्भ तक सुबह भांग के २ बीज तथा रात्रि को सोते समय शिवलिंगी के ४ बीज तथा बछड़े वाली गाय के दूध के साथ निगल लें। अब आपका पुत्र लिंग तैयार हो गया है। ८४ वें दिन तो मेडिकल साइन्स में स्केन करके बता ही देते हैं कि गर्भ में पुत्र है या पुत्री। उक्त उदाहरण में २ नवम्बर, २००२ को प्रथम मासिकस्राव होने वाली महिला के २५ जनवरी, २००३ से ३१ जनवरी, २००३ के मध्य स्केनिंग करके पता किया जा सकता है और आश्वस्त रहा जा सकता है कि पुत्र ही है या नहीं।

१५. पुत्र प्राप्ति के लिए कई क्षेत्रिय व्यक्ति, कटेरी की जड़, लक्ष्मणा बूटी आदि-आदि से तैयार औषधि भी देते हैं उक्त औषधि के अतिरिक्त आपके आसपास गर्भ के ८४ दिन से पहले औषधि देता हो तो ले लें।

हर प्रकार से पुत्र प्राप्ति का प्रयास करें एक भी कमी या संशय नहीं छोड़ें तो ईश्वर क्यों नहीं सहायता करेगा। इतने कर्म करने के बाद तो ईश्वर को भी नतमस्तक होना पड़ेगा।

१६. गर्भाधान होते ही स्त्री ३ माह तक तो निम्न मंत्र को जपे ही। यदि पूरे नौ माह जपती हैं तो फिर कहना ही क्या मन्त्र—"**ॐ क्लीं ॐ देव की सुत गोविन्दं वासुदेव जगत्पतै। देहि मे तनयं कृष्णं त्वामहं शरणं गतः क्लीं ॐ॥**"

१७. गर्भाधान होते ही '**ॐ सूर्याय नमः**' इस मन्त्र को बोलकर सूर्योदय से पूर्व ३ बार जल चढ़ावें तथा सूर्योदय के पश्चात् '**ॐ घृणिं सूर्याय नमः**' बोलकर ३ बार जल चढ़ायें। सायं '**ॐ कृष्णाय नमः**' इस मन्त्र को १०८ बार गार्भिणी प्रतिदिन जपें। जल चढ़ाना एवं मन्त्र जाप सभी स्त्री को ही करना है।

१८. ८४ से ९० दिन के गर्भ में अति आधुनिक पद्धति कम्प्यूटराइज्ड द्वारा आश्वस्त हो जाएँ की पुत्र ही है। इस कार्य में विलम्ब नहीं करें। ग्रामीण धारणा मिथ्या है कि तीसरे महीने या चौथे महीने लिंग बनता है। लिंग ५३वें दिन से ८०वें दिन के मध्य बनकर तैयार हो जाता है।

१९. चौथे माह एक या दो खोपरा खायें या १०० ग्राम बादाम एक-एक करके घूमते फिरते ५-७ दिन में खायें।

२०. गर्भाधान होते ही १०० गोली आयरन फोर्ट की अर्थात् एक गोली रोजाना भोजन के बाद एक ही बार सेवन करें।

२१. दो टीके टिटनेस के एक माह के अन्तराल में अवश्य लगवायें तथा नवें मास तीसरा टीका लगवायें।

२२. गर्भाधान होते ही स्त्री को २ चम्मच सुबह तथा २ चम्मच शाम को द्राक्षावलेह (आयुर्वेदिक औषधि) बछड़े वाली गाय के दूध के साथ लेनी चाहिए।

द्राक्षावलेह ९ मास तक सुबह शाम लेने के लाभों का वर्णन निम्नानुसार है—

द्राक्षावलेह खून बनाता है। अतः खून में हिमोग्लोबीन कम नहीं होगा।

इसमें आयरन, केल्शीयम सब हैं इसके बाद तो किसी भी दवाई की जरूरत नहीं है।

द्राक्षावलेह से कब्ज तो दूर-दूर तक भाग जाती है। गर्भ में पेट का भाग बहुत कम रहता है और उस समय कब्ज हो जाये और भोजन सड़ जाये तो गर्भिणी की तबियत खराब हो जाती है। अतः द्राक्षावलेह इस समय ब्रह्मास्त्र है।

द्राक्षावलेह खून साफ करता है। अतः होने वाला बच्चा एक दम गौरवर्ण का होगा।

२३. ज्यादा वजन उठाना, जल्दी-जल्दी सीढ़ियाँ चढ़ना मना है क्योंकि विपरीतलिंगी पुत्र गर्भ में होने से सावधानी अत्यन्त आवश्यक है। पुत्रियाँ तो ऐसे ही हो जाती हैं, गर्भकाल में परेशानी नहीं आती। परन्तु गर्भ में पुत्र हो तो उसका moment भी जल्दी होता है इसलिए बहुत सावधानी आवश्यक है। कहा भी है—"सौ मण सोना गालो चाहे एक पुत्र को पालो।" अर्थात् स्वर्णकार या सुनार को एक सौ मन सोना गलाने में जितना श्रम करना पड़ता है, उतनी तपस्या एक पुत्र को नौ मास तक गर्भकाल में रखने में स्त्री को करनी होती है।

२४. किसी कारण एक बूँद भी लाल कपड़े पर आ जाए तो तुरन्त लेडी डॉक्टर को बतायें व चिकित्सा परामर्श प्राप्त करें।

२५. प्रसव पर जाने से पूर्व गाय के ताजा गोबर का रस निचोड़कर आधा कटोरी पी लें Normal Delivery होगी।

२६. डिलेवरी होने पर पुत्र को सर्वप्रथम स्वर्णप्राशन (सोना जीभ पर टच) करायें ताकि बच्चे में रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़े।

२७. अनुमानित प्रसव की दिनांक जानने की विधि—जिस दिन अन्तिम मासिक धर्म प्रारम्भ हुआ था (L.M.P) उस तारीख से उल्टे तीन महीने घटाकर जो तारीख निकाले उसमें सात दिन जोड़ दें। यह अनुमानित प्रसव दिनाँक होगी।

उदाहरण—माना कि किसी महिला को अन्तिम मासिक २ नवम्बर २००२ को प्रारम्भ हुआ था। यहाँ मासिक स्राव के पहले दिन की तारीख लेनी होगी। तो २ नवम्बर २००२ अर्थात् २ नवम्बर से उल्टे तीन महीने २ अगस्त २००२ होंगे इसमें ७ दिन जोड़ने पर लगभग ९ अगस्त २००२ को अनुमानित प्रसव होगा।

मासिक स्राव दिनांक	२	११	०२
	+ ७	(–)३	+ ०१
अनुमानित प्रसव दिनांक	९	८	०३

तारीख में ७ जोड़ें
माह से ३ घटायें
वर्ष में १ जोड़ें
सबसे सरल विधि है।



औषधि खण्ड

पुरुषों के लिए

महँगी चिकित्सा केवल धनिकों के लिए

बलवर्धक, वीर्यवर्धक, धातुपुष्ट, नपुंसकता निवारक औषधि विवरण

१. छोटी हरड़ एवं मिश्री के साथ लोहा भस्म खाने से पौरुषीय शक्ति में अत्यधिक वृद्धि होती है। पुरुष अतिविलक्षण ताकत वाला हो जाता है।

२. पान के पत्ते में लोहा भस्म खाने से वीर्य उत्पन्न होने की क्षमता में वृद्धि हो जाती है जिससे पुत्र उत्पत्ति में सहायता मिलती है।

३. अत्यधिक बल-वीर्यवर्धक उपाय

मावा	५० ग्राम (दूध से बनता है।)
छोटी इलायची	२० ग्राम
ताँबा भस्म	१२५ मिलीग्राम

इन चारों को मिलाकर प्रतिदिन उक्त मात्रा में खाने तथा ऊपर से गाय का दूध पीने वाले पुरुष की शक्ति में असीमित मात्रा में वृद्धि होती है। ३ मास के प्रयोग से पुरुष एकदम पुत्रोत्पत्ति योग्य हो जाता है।

४. वीर्यवर्धक प्रयोग

मावा	५० ग्राम (दूध को ओटाने से बनता है।)
मिश्री	२० ग्राम
चाँदी भस्म	६० मिलीग्राम

तीनों को मिलाकर प्रतिदिन तीन माह तक खाने से पुरुष के धातु

सम्बन्धी समस्त रोगों का नाश हो जाता है।

५. पान के पत्ते में दो या चार चावल के बराबर चांदी भस्म खाने से शरीर में बलवीर्य वृद्धि होती है।

६. जायफल, जावित्री, इलायची, मिश्री के साथ, ५० मिलीग्राम जस्ता भस्म २ माह तक खाने से पुरुष में उत्तेजना आती है और वह संसर्ग में पूर्णतय सफल हो जाता है।

७. ५० ग्राम मावा (दूध ओटाया हुआ) में १२५ मिलीग्राम बंगभस्म प्रतिदिन खाने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

८. बड़ी इलायची, पीपर और शहद में मिलकर सोना भस्म खाने से नपुंसकता समाप्त हो जाती है।

बड़ी इलायची	२५० मिलीग्राम
पीपल	१२५ मिलीग्राम
शहद	४० ग्राम
सोना भस्म	१२५ मिलीग्राम

चारों को मिलाकर प्रतिदिन प्रातः खाली पेट खाने एवं ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध पीने से आजीवन बलिष्ठ हो जाता है। ३ माह तक प्रतिदिन तक एक बार औषधि सेवन का विधान है। फिर आजीवन औषधि लेने की जरूरत नहीं है।

९. नपुंसकता निवारक अचूक औषधि

अभ्रक भस्म	१२५ मिलीग्राम
हरताल भस्म	१२५ मिलीग्राम
गिलोय का सत्त	२ ग्राम
इलायची	आधा ग्राम
पीपल	२०० मिलीग्राम
शक्कर	२० ग्राम
शहद	४० ग्राम

यह मात्रा प्रतिदिन की है। इन सब को शहद में मिलाकर खाने से ६ मास में हस्तमैथुन से हुआ नपुंसक जो सन्तान पैदा करने में नाकाम हो

गया था वह भी बल-पुष्ट होकर पुत्र प्राप्त करता है।

१०. बल-वीर्य वर्धक प्रयोग

चाँदी भस्म	१२५ मिलीग्राम
पीपल	१२५ मिलीग्राम
इलायची	४०० मिलीग्राम

तीनों को द्राक्षावलेह में जितने दिन खानी हो उतने दिन की खुराक मिलाकर खाने से पुत्र ही होता है।

११.

शहद	५० ग्राम
लोहभस्म	१२५ मिलीग्राम
पीपल चूर्ण	२ ग्राम

३० दिन तक खाने से शरीर पुष्ट होता है।

१२. अपामार्ग की जड़ के चूर्ण को बंगभस्म के साथ खाने से स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

१३. लौंग और शहद के साथ अभ्रक भस्म खाने से धातु पुष्ट होकर पुत्र ही होता है।

१४. हीरा भस्म एवं अमृत जोहर सत जो पुरुषों के लिए ब्रह्मास्त्र है। अत्यन्त मंहगे होने तथा दुर्लभ होने के कारण इनका प्रयोग करोड़ो में एक दो पुरुष ही कर पाते हैं। जीवन में यदि पुरुष एक बार विधिवत १० ग्राम हीरा भस्म और १० ग्राम अमृत जोहर सत औषधि रूप में ६ माह में ले ले तो आजीवन साक्षात् कामदेव बना रहता है तथा उस पुरुष की उम्र भी १० वर्ष बढ़ जाती है। इसके प्रयोग से तो पुत्रोत्पत्ति में सन्देह को स्थान ही नहीं है।

१५. तुलसी के रस में १२५ मिलीग्राम बंगभस्म प्रतिदिन ३० दिन तक खाने से शरीर पुष्ट होकर धातु स्ट्रोंग हो जाती है और पुत्र होता है।

नोट—उपर्युक्त सभी १५ प्रकार की औषधियों में भस्म शामिल है **यथा**—हीरा भस्म, चाँदी भस्म, ताँबा भस्म, जस्ता भस्म, अभ्रक भस्म, बंग भस्म, लोहा भस्म, हरताल भस्म, ये भस्में खाने से सीधे धातु पुष्ट हो जाती है। धातु में धातुएँ ही तो सम्मिलित होती है। अत: धातु (वीर्य) पुष्टि हेतु

धातुएँ (भस्म) सेवन प्रत्यक्ष विधि है जो कि आयुर्वेद की महँगी रस चिकित्सा परन्तु यह अन्य पद्धति ऐलोपेथिक, होम्योपेथी, युनानी चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, आदि अन्य चिकित्सा पद्धति से धातु रोग के मामले में तो लाख गुना अच्छी है। भस्म सेवन करके पुत्र प्राप्त कर सकते हैं चाहे आपके पुत्र योग हो या नहीं, हालाँकि भस्मी चिकित्सा (भस्म चिकित्सा) सेवन से पुत्र उत्पत्ति की पात्रता शत प्रतिशत हो जाती है।

समान्य, सस्ती चिकित्सा, गरीब से लगाकर मध्यम वर्गीय सभी साधारण पुरुषों के लिए

नपुंसकता, वीर्य रोगों को चिकित्सा ताकि पुत्र ही हो।

सबसे पावरफुल शिलाजीत प्रयोग

शतावर चूर्ण	५०० ग्राम
मुलहठी चूर्ण	५०० ग्राम
शिलाजीत	२० ग्राम

तीनों को मिलाकर तीन माह एक चम्मच शहद के साथ सुबह-शाम लेने से हस्तमैथुन के कारण हुए नपुंसक भी ठीक होकर सन्तानोत्पत्ति के योग्य हो जाते हैं।

नोट—यह नुस्खा या औषधि प्रयोग उन पुरुषों को विशेषरूप से करना ही चाहिए जिन्होंने ने अपनी बुरी संगत के कारण विवाह से पूर्व खूब हस्तमैथुन किया हो और अब वे इस गलती के कारण स्त्री संसर्ग के योग्य ही नहीं रहे हों। कई बार यहाँ तक देखा गया है कि लड़का हस्तमैथुन की अपनी गलत प्रवृत्ति से नपुंसक हो जाता है। यह तथ्य माता-पिता को ध्यान होता है और माता-पिता तो उस स्वस्थ ही जानकर विवाह कर देते हैं परन्तु विवाह के पश्चात् पहले ही दिन ऐसे लड़के का सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति आकर माता-पिता के मरने जैसी हालत हो जाती है। यदि ऐसा गलत कार्य किया हो और लड़का बार-बार विवाह के लिए मना करता हो तो पहले यह औषधि तीन माह सेवन कराने के बाद ही विवाह सम्बन्ध करें। पुरुषों की इस गलती से आज लाखों पुरुष संतानोत्पत्ति के योग्य ही नहीं है फिर विवाह के बाद ताकत शफाखाना या ऐसे ही वैद्य, नीम हकीम के चक्कर काटते हैं और

वे नीम हकीम उनसे पचास हजार तक औषधि के नाम से ठग रहे हैं और उन्हें एक हजार या दो हजार की औषधि दे देते हैं। यह प्रयोग नपुंसकता निवारण का सबसे श्रेष्ठ प्रयोग है। अत: सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति पैदा ना हो और पुत्रोत्पत्ति योग्य हो जाये इसके लिए तीन माह यह औषधि अवश्य लें।

सैक्स सम्बन्धी अकेले दिल्ली में लगभग एक हजार पाँच सौ वैद्य हकीम हॉस्पीटल खोलकर बैठे हैं और पूरे भारत में लगभग २२५०० ऐसे चिकित्सालय हैं जो गुप्त रोगों के नाम से ठगने का कार्य चला रहे हैं और विज्ञापन देते हैं—'निसन्तान स्त्री-पुरुष अवश्य मिलें।'

अब ऐसे स्त्री पुरुष इनके चक्कर में आकर धन बर्बाद करते हैं फिर ऐसी गुप्त बर्बादी की व्यथा किसी को बता भी नहीं सकते हैं इसलिए ये ठगने वाले ऐसे स्त्री-पुरुषों पर हावी हैं। प्रस्तुत प्रयोग इसलिए दिया है क्योंकि सभी पुरुषों की बीमारी विवाह विलम्ब होने से इसी गलत आदत के कारण होती है और उसे आजीवन संतानसुख या पुत्रसुख नहीं मिलता है परन्तु पुरुष अपने पुरुषत्व के कारण ऐसे गलत कार्य का विवरण पत्नी को भी नहीं बताता है कि मैंने ऐसे गलत किया था इसलिए अपने यह नहीं हो रहा है। अत: सभी पुरुष जिन्हें शीघ्रपतन हो, हस्तमैथुन किया हो, शुक्राणु कमजोर हो यह औषधि सेवन करके निरोग होकर पुत्रोत्पत्ति का प्रयास करना चाहिए। इस प्रयोग में शतावर व मुलहठी तो पंसारी के यहाँ मिल जायेगी जिसे पिसवा लें परन्तु शुद्ध शीलाजीत परीक्षा करके ही खरीदें अन्यथा लाभ नहीं होगा।

शुद्ध शिलाजीत परीक्षा विधि

शुद्ध शिलाजीत की परीक्षा निम्न प्रकार से करनी चाहिए—

१. शिलाजीत को नासिका से सूँघो, यदि उसमें गोमूत्र के समान गन्ध आये तथा वह रंग में काली और पतले गोंद जैसी हो तथा वजन में हल्की और चिकनी हो और उसमें बालू मिट्‌टी नहीं हो तो वह श्रेष्ठ शिलाजीत है।

२. शिलाजीत बिना धुएँ की अग्नि पर रख दो यदि शिलाजीत शुद्ध होगा तो वह इन्द्रिय सदृश्य खड़ा हो जायेगा।

३. शिलाजीत का थोड़ा सा कण अग्नि पर डाल दो यदि धुआँ नहीं उठे तो समझ लें कि शिलाजीत एकदम शुद्ध है।

४. थोड़ा सा शिलाजीत पानी से भरे गिलास में डाल दो यदि वह बैठ जाये तो उसे बहुत अच्छा समझो।

इस प्रकार शिलाजीत क्रय करते समय उक्त चारों प्रकार की परीक्षा कर लें। एक परीक्षा से सन्तोष नहीं करें। यदि चारों परीक्षा में शिलाजीत कसौटी पर सही उतरे तो ही क्रय करें अन्यथा नहीं।

शिलाजीत क्या है? सूर्य की प्रचण्ड गर्मी से जब पहाड़ तपते हैं तब उनमें से धातुओं का साररूप गोंद जैसा पतला पदार्थ निकलता है उसे ही शिलाजीत कहते हैं। असली शिलाजीत गंगोत्री यमुनोत्री के हिमालय पर्वत पर प्रत्यक्ष जाकर देख सकते हैं। कई धोखेबाज़ विक्रेता पहाड़ी बन्दरों का पाखाना बेचते हैं जो रंग रूप गंध में शिलाजीत सदृश्य होता है परन्तु वह औषधि में बिल्कुल काम नहीं करता है अतः परीक्षा करके ही लें। शिलाजीत पुरुष प्रमेह, वीर्यदोष, स्वप्न दोष, धातु दोष, शुक्राणु कमी की बेहतरीन औषधि है। वेद शास्त्रों में इसकी महिमा से ग्रन्थ भरे पड़े है। पुरुष के समस्त रोगों का इलाज मात्र इस नुस्खे शिलाजीत, शतावर, मुलहठी चूर्ण में सन्निहित है। कई स्त्रियों ने विवाह के बाद जन्मपत्रिका मुझे दिखाई तथा अपनी समस्या में बताया कि क्या मुझे इस प्रकार के अयोग्य पति का ही योग था। मैंने उसमें पाया ऐसा कोई योग नहीं था तो ऐसे में उन स्त्रियों के पति की कुण्डली का अध्ययन किया जिसमें शुक्र चन्द्र की युति होने से उनके स्पष्ट हस्तमैथुन से नपुंसक योग बना। ऐसे पुरुषों को उक्त औषधि प्रयोग दिया तो तीन माह में वे बलिष्ट हो गए और जो स्त्रियाँ सम्बन्ध विच्छेद की स्थिति में थीं उनके इसी प्रयोग से आज दो-दो पुत्र हैं। वैवाहिक जीवन में कई बार गोपनीय समस्या आती है जो एक अच्छी पुस्तक ही हल कर सकती है। किसी के बहकावे में नहीं आकर इस पुस्तक को पूर्ण पढ़ें तथा इसमें वर्णित प्रयोग आजमायें तो जीवन सुधर जायेगा। और यदि आप सन्तुष्ट हों तो दुःखी, निःसंतान, कन्या वाले दम्पत्ति को यह पुस्तक खरीदकर पढ़ने की राय दें।

१. प्याज के रस में शहद मिलाकर खाने से वीर्य बढ़ता है।

२. सफेद प्याज का रस ४० ग्राम
घी २० ग्राम
शहद १५ ग्राम
अदरक का रस २० ग्राम
तीन माह तक निरन्तर सेवन से धातु सम्बन्धी कोई भी रोग हो सभी रोग हो नष्ट हो जाता है।

४. आधा किलो दूध में १० ग्राम शतावर पीसा हुआ डालकर उसे उबालो जब डेढ़ पाव दूध रह जाये तब मिश्री मिला दो इस प्रकार से प्रतिदिन इतना दूध डेढ़माह तक पी जाओ निश्चित पुत्रोत्पत्ति योग्य पावरफुल शुक्राणु होंगे।

५. उड़द की दाल एक घण्टे पानी में भिगोकर छिलके उतारकर पीस लो फिर इसे हलवे की तरह घी डालकर सेंक लो जब अच्छे से सिक जाए तब उसमें मिश्री पीसकर मिला दो और चक्की बना लो। प्रतिदिन २ माह तक खाओ यह गरिष्ठ और भारी है। अतः इसे खाने के बाद सुबह खाना मत खाओ इस प्रयोग से खूब बल एवं वीर्य बढ़ता है और शरीर पुष्ट होता है।

६. सूखे आंवले ५ किलो लाकर कूट पीसकर छान लो। अब इस सूखे महीन चूर्ण में ताजा गीले आंवले लाकर उनका रस निकालकर उस रस में चूर्ण को डूबो दें तथा सूखने दें फिर दूसरे दिन पुनः ताजा आंवले के रस में चूर्ण डूबो दें इस प्रकार सातदिन तक लगातार ताजा आंवले का रस निकालकर डूबने दें और सूखने दें अब सात दिन बाद यह औषधि तैयार है। इसमें २० ग्राम यह चूर्ण, १० ग्राम गाय का घी एवं दो चम्मच शहद में मिलाकर प्रतिदिन ५ माह तक लगातार खाने से धातु रोग पूर्णतया नाश हो जाता है। इससे सस्ता इलाज कहीं नहीं है। इस इलाज में परहेज यही रखना है कि खट्टी चीजें, खारी, नमकीन, चटपटे एवं गर्म पदार्थ अण्डे, मीट, मछली, मदिरा बिल्कुल वर्जित है। असात्त्विक भक्षण करने वाले के लिए यह औषधि कोई

असर नहीं करेगी। यह औषधि परहेज के बाद शीघ्र असर करती है। यहाँ तक कि गर्म पदार्थ लहसुन भी वर्जित है। ५ माह में धातु रोगी पूर्णतया: स्वस्थ होकर सौ स्त्रियों को सन्तुष्ट की ताकत प्राप्त लेता है। आयुर्वेद में लिखा है—चूर्णमिदं पयसा प्रात:लेयं यस्य गृहे प्रमदा शतमस्ति।

७. बलवर्धक प्रयोग—

गोखरू	२५० ग्राम
तालमखाने	२५० ग्राम
शतावर	२५० ग्राम
कौंच के बीजों की गिरी	२५० ग्राम
बड़ी खिरेंटी	२५० ग्राम
गंगेरन	२५० ग्राम

उक्त ६ ही औषधि पंसारी के यहाँ से लाकर कूट पीसकर छान लो। इस चूर्ण को १० ग्राम प्रतिदिन रात में दूध के साथ लेकर पीने से असीमित वीर्य बढ़ता है ९० दिन में ही चमत्कार प्रत्यक्ष सामने आ जाता है। यदि ३ वर्ष तक सेवन करे तो इसके सेवन से बूढ़ा भी जवान हो जाता है। सभी पुरुषों को प्रतिदिन यह औषधि भोजन की तरह रात्रि को लेनी चाहिए ताकि वह ७० वर्ष तक भी प्रतिदिन स्त्री संसर्ग की ताकत रख सके। स्त्री संसर्ग हेतु पुरुषबल बढ़ाने की अचूक आयुर्वेदिक दवा है जो आपको कोई नहीं बतायेगा।

८. तरबूज के बीज छीलकर उसमें समान मिश्री मिलाकर प्रतिदिन २० ग्राम खाने से शरीर ताकतवर बनता है।

९. बिल्व पत्र के पत्तों का रस ५० ग्राम
कमल के फूल की एक डण्डी की राख
गाय का घी ५० ग्राम

तीनों को मिलाकर प्रतिदिन दो माह तक पीने से नपुंसकता समाप्त हो जाती है।

१०. गाय के दूध में पिण्डखजूर या छुआरे पकाकर खालो और उस दूध को

पी जाओ असीमित बल वीर्य बढ़ता है।

११. सफेद मूसली, तालमखाने के बीज, गोखरू तीनों को महीन पीसकर प्रतिदिन १० ग्राम चूर्ण पावभर दूध में ओटाकर तीन महीने तक पीने से स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

१२. सिंघाड़े का हलवा बनाकर खाने से बल वीर्य बढ़ता है।

१३. शकरकन्द का हलवा खाने से वीर्य गाढ़ा हो जाता है।

१४. छिलके वाली उड़द की दाल पकाकर प्रतिदिन एक वर्ष तक खाने से भी स्तम्भन शक्ति बढ़ती है।

१५. इन्द्रियों में अत्यधिक कमी हो तो बाजार के तेलों का उपयोग नहीं करके चमेली के तेल से रोज मालिश करें। २ वर्ष तक लगातार मालिश करने से इन्द्रियाँ कभी कमजोर नहीं रहेंगी।

स्त्रियों के लिए सन्तानोत्पत्ति चिकित्सा योग

बन्द हुए रजोधर्म की चिकित्सा

गर्भ रहने के लिए स्त्री का रजस्वला होना जरूरी है क्योंकि रज गिरने से गर्भाशय का मुँह खुल जाता है और वह सोलह रात्रियों तक खुला रहता है। इन सोलह रात्रियों को ऋतुकाल कहते हैं और इतने समय अर्थात् सोलह दिन तक स्त्री को ऋतुमती कहते हैं। इसी सोलह रात्रियों में से छठी रात्रि से सोलहवीं रात्रि तक पुरुष का संसर्ग करने पर स्त्री को गर्भ धारण होता है, सोलह रात्रि के बाद २८वीं रात्रि तक संसर्ग से गर्भ नहीं ठहरता है चाहे कितना ही बलिष्ट पुरुष हो। इसलिए गर्भ नहीं चाहने वाले के लिए यह प्राकृतिक उपाय भी है कि वे सत्तरहवीं रात्रि से २८वीं रात्रि तक पुरुष संग करें।

तात्पर्य यह है कि गर्भ धारण के लिए स्त्री का ऋतुमती होना अत्यन्त आवश्यक है। जिस स्त्री को प्रत्येक माह रजोधर्म नहीं होता, वह गर्भधारण के योग्य ही नहीं है। स्त्रियों के १३वें वर्ष से ६० वर्ष तक रजोधर्म होना स्वस्थतता का प्रतीक माना जाता है परन्तु आजकल के खानपान से ९९ प्रतिशत स्त्रियों के खून में कमी होकर ५० वर्ष के बाद मासिक धर्म बन्द हो

जाता है और ढेरों बीमरियाँ हो जाती हैं। वे गर्भधारण नहीं कर सकती हैं इसलिए वेदों में स्पष्ट लिखा है—

''बन्ध्या नष्टार्त्तवा ज्ञेया''

अर्थात् जिसका रज नष्ट हो गया है वह बाँझ है क्योंकि अर्थात् रजस्वला स्त्री को ही गर्भ रहता है।

मासिक धर्म सम्बन्धी विभिन्न चार रोग एवं औषधि विवरण

मासिक धर्म सम्बन्धी निम्न चार प्रकार के रोगों एवं चिकित्सा का वेदों में वर्णन है—

१. मासिक धर्म में एक या दो दिन ही खून बहना, जरा सा खून कपड़े पर लगे फिर बन्द हो जाना, खून की गाँठ सी गिरना, पेडु में पीड़ा होना तो स्पष्ट है कि शरीर में खून की कमी है। इस प्रकार कम मासिक धर्म आने पर खून बढ़ाने वाले नुस्खे अर्थात् प्रतिदिन २५ ग्राम द्राक्षावलेह अर्थात् सुबह शाम २५ ग्राम द्राक्षावलेह लगातार ३ वर्षों तक लेनी चाहिए।

२. यदि तीन दिन से ज्यादा ब्लड गिरे अथवा दूसरा महीना लगने के दो-चार दिन पहले तक खून गिरे तो समझना चाहिए कि ब्लड में अत्यधिक गर्मी है। अत: ऐसी स्थिति में गर्मी के सभी पदार्थ जैसे लहसुन, लाल मिर्च अण्डे आदि खाती हैं तो तत्काल बन्द करके सुबह शाम ५० मिलीग्राम गुलाब जल पीयें। ३-४ माह में लाभ हो जायेगा।

३. यदि ब्लड ज्यादा गिरे, ब्लड के साथ सफेद पानी हो तो समझ लें कि प्रदर रोग है। यह सब वर्णन इस पुस्तक में देने का तात्पर्य यह है कि स्त्री को कोई रोग है तो भी पुत्री ही होगी पुत्र नहीं होगा। इसलिए संतुलित मासिकधर्म आवश्यक है। स्त्री रोग होने पर पुरुष का औषधि सेवन भी व्यर्थ हो सकता है। प्रदर रोग के लक्षण हैं कि स्त्री बहुत अधिक पैदल नहीं चल सकती, परिश्रम नहीं कर सकती, ये रोग बार-बार गर्भपात होने से भी, अजीर्ण होने या निरन्तर कब्ज रहने से भी हो जाते हैं।

इस प्रदर रोग के बढ़ने पर शरीर फूल जाता है और वात रोग घेर लेते हैं, स्त्री चिड़चिड़ी भी हो जाती है तथा अत्यधिक कमजोर हो जाती है जिससे किसी भी समय चक्कर आने लगते हैं। इसकी चिकित्सा निम्नानुसार कर सकती हैं—

❖ २० ग्राम अशोक की छाल गाय के दूध में उबालकर मिश्री मिलाकर सुबह-शाम एक माह तक पीने से बड़े से बड़ा रक्त प्रदर समाप्त हो जाता है।

❖ अशोक वृक्ष की छाल को केवल पानी में भी उबालकर पिया जाए तो स्त्री के सभी रोग दूर हो जाते हैं।

❖ मंगलवार के दिन लगभग १०० ग्राम शुद्ध धनिया लेकर किसी कलई किए गए पीतल के बर्तन में एक किलो पानी डालकर पकाएँ। जब पानी आधा रह जाये तो उतार लें और उसमें दो सौ ग्राम मिश्री मिला दें। अब इस बृहस्पतिवार से प्रारम्भ कर रविवार तक पीने से मासिक धर्म नियमित होकर प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

❖ पका हुआ केला और आंवले का रस इन दोनों को दुगनी पीसी हुई मिश्री में मिला लें। मात्र १५ दिन के सेवन से प्रदर रोग में आराम होता है तथा होने वाली सन्तान पुत्र पैदा होती है।

❖ नीम की छाल के रस में सफेद जीरा डालकर १० दिनों तक पीने से घोर से घोर प्रदर नष्ट होता है।

❖ काला नमक, मुलहठी चूर्ण, सफेद जीरा, नीलकमल इनको पीस छानकर दही में मिलायें और जरा सा शहद मिलाकर पी जायें। इस औषधि प्रयोग से बादी या वात या वायु विकार या मोटापे के कारण हुए प्रदर रोग में आराम मिलता है।

❖ गुंजा की जड़ १० ग्राम, मिश्री १० ग्राम, दोनों को चावलों के धोवन में पीसकर पीने से प्रदर रोग का नामोनिशान नहीं रहता है।

- ❖ छुआरों की गुठलियाँ पीसकर घी में तलें या फ्राई करें फिर गोपी चन्दन पीसकर मिलाकर प्रतिदिन खायें तो १५ दिनों में प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

४. **मासिक धर्म बन्द होना**—मासिक धर्म बन्द हो जाना, यह चतुर्थ रोग है। पूर्णतया स्वस्थ महिला को तेरहवें वर्ष से ६० वर्ष तक निर्धारित २८ दिन का मासिकचक्र होता है। कम ज्यादा दिन होना भी स्वास्थ्य में गड़बड़ का प्रतीक है। जिन महिलाओं को फिक्स २८वें दिन मासिक आता हो वे समझ लें कि पूर्णतया: स्वस्थ है उन्हें कोई रोग नहीं है। रजोधर्म १३वें वर्ष से ६०वें वर्ष तक होता है। यदि इससे पहले बन्द हो जाता है तो इसके मुख्य-मुख्य कारण निम्न है—

- ❖ शरीर में ब्लड कम होना या सूख जाना।
- ❖ शरीर में अत्यधिक सर्दी होने से, सर्दी के मारे ब्लड गाढ़े दोषों से मिलकर गाढ़ा हो जाता है और मासिकस्राव नहीं होता है।
- ❖ गर्भाशय से रज आने के मार्ग में मस्सा पैदा हो जाता है और इस कारण रजोधर्म नहीं होता है। क्योंकि मस्से के कारण रज के बाहर आने का मार्ग बन्द हो जाता है।
- ❖ गर्भाशय का मुँह घूम जाना भी रजोधर्म बन्द होने का कारण है।
- ❖ मोटापन।
- ❖ गर्भाशय में सूजन आना।
- ❖ गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाना।

बन्द मासिकधर्म पुनः चालू करने वाली औषधियाँ

पहले तो ५-६ माह लगातार ५० ग्राम द्राक्षावलेह सुबह, ५० ग्राम द्राक्षावलेह शाम को लें इससे ब्लड बनेगा और मासिक धर्म चालू करने वाली दवाएँ शीघ्र असर करेंगी—

- ❖ कालीमिर्च, पीपल, तिल की जड़, ब्रह्मदण्डी की जड़, मुलहठी इन सबको कूटकर काढ़ा बनाकर पीने से बंद मासिकधर्म खुल जाता है।
- ❖ गाजर के बीज १० ग्राम कूटकर पावभर पानी में उबाल लें जब

पानी आधा रह जाये तो शक्कर मिलकर २-३ दिन पीने से मासिक धर्म खुलकर आता है। पुराना रक्त कचरा भी साफ होकर कमर पतली हो जाती है।

❖ कमल की जड़ को पीसकर खाने से रजोधर्म होता है।

❖ मूली के बीज, गाजर के बीज और मैथी के बीज इन तीनों को २५० ग्राम की मात्रा प्रत्येक की लाकर कूट पीसकर छान लें। इस चूर्ण को २० ग्राम गर्म पानी के साथ लें। रुका हुआ मासिकधर्म २-३ माह में प्रारम्भ हो जायेगा।

❖ मालकांगनी के पत्ते और विजयसार लकड़ी इन दोनों को दूध में पीस छानकर पीने से रुका हुआ मासिकधर्म पुनः प्रारम्भ हो जाता है।

❖ पुराना गुड़ १०० ग्राम, काले तिल १०० ग्राम इनका काढ़ा बनकर ठण्डा करके एक दो मास पीने से बहुत वर्षों से मासिकधर्म नहीं होने वाली स्त्री को भी मासिकधर्म होने लगता है और गर्भ धारण कर सकती है।

❖ काले तिल और गोखरू दोनों १०-१० ग्राम रात को भिगो दें, सवेरे उनकी ठण्डाई बनाकर शक्कर मिलाकर ३-४ माह लगातार पीने से बन्द हुआ मासिकधर्म शुरू हो जाता है।

नोट—मासिकधर्म सही हो, नियमित हो, २८ दिन के चक्र से हो पुरुष में कोई कमी नहीं हो तो ऐसी स्थिति में स्त्रियों को गर्भधारण के लिए औषधि प्रयोग करनां चाहिए जिनका वर्णन अग्रानुसार है।

गर्भ धारण नुस्खे

❖ कायफल को कूट छानकर और बराबर शक्कर मिलकर रख लें। ऋतुस्नान के बाद यानि ४वें ५वें एवं छठे एवं ७वें दिन ५० ग्राम खायें फिर ८वें दिन से १६वें दिन पति संसर्ग करें तो अवश्य गर्भ रहता है।

❖ ५० ग्राम अजवायन ५-६ महीने लगातार खाने से गर्भ रह जाता है। बन्ध्या स्त्री को यह अत्यन्त सरल प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

- ❖ नागकेसर को पीस छानकर बछड़े वाली गाय के दूध के साथ खाने से गर्भ रहता है।
- ❖ ऋतु स्नान के बाद असगन्ध को दूध में पकाकर और घी डालकर सवेरे ही पीने और रात्रि को पति संसर्ग करने से गर्भ रहता है।
- ❖ आयुर्वेद के ग्रन्थ भैषज्य रत्नावली में स्पष्ट वर्णित है कि छोटी पीपल, सौंठ, काली मिर्च और नागकेसर इन सबको बराबर-बराबर लाकर पीस कूटकर छान लें इसमें १० ग्राम चूर्ण गाय के घी में मिलाकर मासिकधर्म के आठवें दिन स्त्री प्रातःकाल खा ले तथा रात्रि को पति प्रसंग करे तो निश्चित रूप से गर्भ ठहर जायेगा चाहे वह स्त्री बाँझ ही क्यों न समझी जाती हो।
- ❖ असगन्ध में गर्भोत्पादक शक्ति बहुत है अतः इसे स्त्री सेवन करके ही पति प्रसंग करे तो गर्भाधान हो जाता है।
- ❖ हींग के पेड़ का बीज खाने से अवश्य ही गर्भ रहता है।
- ❖ तुलसी के बीजों का काढ़ा बनाकर ऋतुकाल (मासिक स्राव के प्रथम दिन से तीसरे दिन) में पीने से बांझ के भी गर्भ रह जाता है।
- ❖ लक्ष्मणा की जड़ और सुदर्शन की जड़ पीसकर घी और दूध में मिलकर ऋतुकाल में (प्रथम दिन से तीसरे दिन) पीने से उस बांझ के भी पुत्र हो जाता है। जिसने वर्षों से आशा कर रखी है परन्तु प्रत्येक महीने मासिकस्राव आता है और बड़ा दुःख होता है।
- ❖ बिदारी कन्द के साथ सोना भस्म खाने से गर्भ रहता है और पुत्र ही होता है।
- ❖ असगन्ध की जड़ के साथ चाँदी भस्म को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर खाने से ऐसी बंध्या स्त्री जो इसे केवल ३ दिन सेवन करे जिसके गर्भ ठहरता ही नहीं हो तो भी गर्भ ठहर जायेगा।
- ❖ वैद्यरत्न में लिखा है कि ऋतु स्नान करके चौथे दिन शिवलिंगी का एक फल खाने से बांझ के भी पुत्र होता है।
- ❖ यदि रजस्वला स्त्री बड़ की जटा गाय के घी में मिलाकर पीती है तो गर्भ रह जाता है।

- ❖ ऋतुकाल के तीन दिनों में पारस पीपल के बीजों को पीसकर, घी और चीनी के साथ खाने से गर्भ रह जाता है।
- ❖ शिवलिंगी के बीज, जीरे के साथ मिलाकर, ऋतु स्नान के बाद दूध के साथ पीने से गर्भ रहता है।
- ❖ काकमाची के अर्क के साथ सोना भस्म खाने से गर्भ रहता है, मासिक धर्म शुद्ध होता है और प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।
- ❖ पारस पीपल के बीज सफेद जीरे के साथ मिलाकर ऋतु स्नान के बाद दूध के साथ पीने से गर्भ रहता है।

गर्भ रहने पर पुत्र-पुत्री उत्पन्न करने वाले नुस्खे

गर्भ रहने पर गर्भ के तीन मास पहले औषधि देकर भी लिंग परिर्वतन किया जा सकता है इसमें सन्देह को कोई स्थान नहीं है। इसका स्पष्टीकरण मैं आपको कर देता हूँ।

गर्भावस्था में प्रारम्भिक अवस्था में तीन माह तक लिंग बनने की प्रक्रिया होती है। लिंग बनने के बाद ही पेट, आँख, कान, नाक, बनतें हैं अतः लिंग पुरुष बनेगा तो तद्नुरूप आंतरिक संरचना उसी अनुरूप होगी, लिंग कन्या बनेगा तो कन्या के उदर में आंतरिक संरचना तद्नुरूप होगी। गर्भकाल में पूरा जन्म लेने के बाद तक भी लड़का-लड़की में लिंग कें अलावा कोई परिर्वतन नहीं होता है। सब अंग समान होते हैं। लड़कियों के गर्भाशय एवं स्तन सरंचना ८ से १० वर्ष में बनती है, न कि गर्भकाल में। अतः औषधि से लिंग परिर्वतन होता है। हजारों वैद्य ऐसी औषधि देते हैं। मेरी राय में आपके क्षेत्र में ही ऐसे औषधि देने वाले से गर्भ के तीन माह के अन्दर औषधि अवश्य लेनी चाहिए। यहां पुत्र एवं पुत्री ही जो चाहे वैसी औषधि ले सके इसका सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत है—

पुत्र प्राप्त हेतु गर्भवती स्त्री को लेने की औषधि

- ❖ तीन साल पुराना गुड़ ५० ग्राम, भांग के बीज ३, मोर पंख ३ नग, गर्भ के ४०वें ४१वें ४२वें दिन एक भांग बीज में एक मोर पंख ऊपर का कतरन करके उसमें गुड़ मिलकर गोली बना लें। तीन दिन प्रातः तीन

गोली गर्भ के ४० वें ४१वें ४२वें दिन लेनी है। ४०वें दिन की गणना मासिकस्राव के प्रथम दिन से की जाती है जैसे २ नवम्बर,२००२ के बाद मासिकस्राव नहीं आया और गर्भ रह गया तो ११ दिसम्बर, २००२ को ४०वाँ दिन हो गया, १२ दिसम्बर, २००२ को ४१वाँ दिन एवं १३ दिसम्बर, २००२ को ४२वाँ दिन होगा।

❖ विष्णुकान्ता की जड़ अथवा शिवलिंगी के बीज जो गर्भवती स्त्री पीती है वह कन्या हरगिज नहीं पैदा करती है।

❖ कौंच की जड़ अथवा कैथ का गूदा अथवा शिवलिंगी के बीजों को दूध में पीसकर पीने से कन्या उत्पन्न हो ही नहीं सकती है।

❖ जो गर्भवती स्त्री ढाक के एक कोमल पत्ते को गर्भ के ४५वें दिन से ५० दिन तक ६ दिन पीती है। उसके बलवान पुत्र ही पैदा होता है पुत्री होती ही नहीं है। विदित रहे ढाक का पत्ता एकदम कोमल हो तथा वह बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पीयें।

❖ पुत्रजीवक वृक्ष की जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर पीने से दीर्घायु पुत्र होता है।

❖ सफेद कटेरी की जड़ को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर नाक के दाँयें नथूनें में खींचे। यदि नाक में डालने से दवा गले में उतर जाये तो कोई हर्ज नहीं परन्तु दवा को थूकना नहीं चाहिए।

❖ लक्ष्मणा की जड़ को पुत्र देने वाली कहा है। भारत में गाँव-गाँव में वैद्य गर्भ के दूसरे महीने में यह जड़ बछड़े वाली गाय के दूध के साथ पीसकर गर्भवती स्त्री के दाँयें नाक के नथूने में सींचते हैं तथा मुँह से खिलाते हैं और बछड़े वाली गाय का दूध पिला देते हैं।

❖ बड़ के अंकुरों को बछड़े वाली गाय के दूध में पीसकर गर्भवती स्त्री के दाहिने नाक में डालने से पुत्र होता है।

❖ पुष्य नक्षत्र में बड़ के अंकुर, विजयसार और मूंगे का चूर्ण एक रंग की बछड़े वाली गाय के दूध के साथ पीने से पुत्र होता है।

❖ गर्भवती स्त्री गर्भ के तीन मास तक एक घीया (लौकी) या आल जिसे देशी भाषा में कहते हैं २५० ग्राम घिसकर मिश्री मिलाकर गर्भ रहते

ही तीन मास तक खाये तो कन्या हो ही नहीं सकती है। लौकी (gourd) सब्जी का नाम है। सब्जी मण्डी में मिलती है। इसे कच्ची ही मिश्री मिलाकर २५० ग्राम ३ मास तक खाने से पुरुषलिंग ही गर्भ में बनता है। कई बार चमत्कार देखा है। इस लौकी का यह घरेलू नुस्खा सीधा है, कोई भी गर्भवती महिला गर्भ ठहरते ही ३ मास तक करके देख सकती है।

❖ शिवलिंगी के पाँच बीज दूसरे मास के प्रारम्भ से तीन मास पूरे होने के ५ दिन पूर्व तक रात्रि को बछड़े वाली गाय के साथ निगल जाये तो पुत्र ही होगा। पुत्री की सम्भावना बिल्कुल समाप्त हो जाती है। शिवलिंगी के बीजों में लिंग परिर्वतन की पूरी ताकत है।

❖ गर्भ के दूसरे मास में भांग के दो तीन बीज निगलकर ऊपर से बछड़े वाली गाय का दूध पीये तो भी पुत्र ही होता है।

पुत्री प्राप्त करने हेतु गर्भवती स्त्री को लेने की औषधि

❖ लक्ष्मणा की जड़ बछड़ी (केड़ी) वाली गाय के दूध में पीसकर बाँयें नाक में डालने से पुत्री ही होती है।

❖ बड़ के अंकुरों का दूध बछड़ी (केड़ी) वाली गाय के दूध में पीसकर गर्भिणी के बाँयें नाक में सींचे, कन्या ही होगी।

❖ सफेद कटेरी की जड़ केड़ी (बछड़ी) वाली गाय के दूध में पीसकर गर्भिणी के नाक के नथूने में सींचे, पुत्री ही होगी।

❖ गर्भ ठहरने के बाद अधिक से अधिक खट्टाई खायें तथा दूध बिल्कुल नहीं पीयें तो कन्या ही पैदा होती है।

सुखपूर्वक प्रसव उपाय

❖ बछड़े वाली गाय का दूध आधा पाव और एक पाव पानी मिलाकर गर्भिणी को प्रसव से जाने के पूर्व पिलाने से बच्चा जरा भी कष्ट नहीं देता है और सुखपूर्वक हो जाता है।

❖ प्रसव पर जाने से पहले दिवालमसक नामक औषधि थोड़ी सी देने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।

- ❖ प्रसूता को प्रसव दर्द के बाद थोड़ी सी हींग खिला दें तो सुखपूर्वक प्रसव होगा।
- ❖ लाल कपड़े में थोड़ा सा नमक डालकर बाँधकर प्रसूता के बाँयें हाथ की तरफ बाँध दें। बिमा कष्ट के बच्चा हो जायेगा।
- ❖ कड़वे नीम की जड़ कमर में बाँधने से सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।
- ❖ प्रसव पर जाते समय भगवान् शिव का चरणामृत पिलाने से सुखपूर्वक प्रसव होता है।
- ❖ प्रसूता को प्रसव पर जाने से पूर्व पारद शिवलिंग का दर्शन करा दें सुखपूर्वक प्रसव होता है।

बन्ध्या बनाने वाली औषधियाँ

परिवार नियोजन के लिए

- ❖ वैद्य वल्लभ में लिखा है कि जो स्त्री ढाक के बीजों की राख ठण्डे जल के साथ पीती है उस कभी गर्भ नहीं रहता है। यह ऋतुकाल में तीन दिन मासिकस्राव के दिनों में लेना है।
- ❖ करेले के रस को पीने से गर्भ नहीं रहता है।
- ❖ जाशुकी के सूखे फल खाने से गर्भ नहीं रहता है। पुराने गुड़ (५-७ वर्ष पुराना हो) में उड़द खाने से गर्भ नहीं रहता है।
- ❖ अगर स्त्री चमेली की एक कली निगल ले तो एक वर्ष तक गर्भवती नहीं होती है।
- ❖ यदि स्त्री मासिकस्राव होने के पहले दिन से लगाकर उन्नीसवें दिन तक हल्दी पीस-पीस कर खाये तो उसे गर्भ नहीं रहता है। प्रत्येक माह यह प्रयोग करना पड़ता है।
- ❖ यदि स्त्री प्रतिदिन एक लौंग प्रातःकाल निगलती रहे तो उसे कभी गर्भ नहीं रहता है।
- ❖ ऋतुवती स्त्री अगर सात या आठ दिन तक खीरे के बीज पानी में पीसकर पीती है तो वह बाँझ हो जाती है।
- ❖ तुलसी के पत्तों का काढ़ा मासिकस्राव में तीन दिन में पीने से स्त्री बाँझ

हो जाती है। परन्तु इन्हीं तीन दिनों में तुलसी के बीजों का काढ़ा पीती है तो बाँझ भी गर्भवती हो जाती है। अतः विदित रहे पत्ते, बीज, तना, जड़ अलग-अलग का अलग-अलग महत्त्व है। औषधि लेने में विशेष ध्यान रखें।

❖ यदि स्त्री चमेली की जड़ और गुले चीनिया का जीरा बराबर-बराबर लेकर पीसकर मासिकस्राव के पहले दिन से तीन दिन तक खाती है और ठण्डा पानी पीती है तो कभी गर्भवती नहीं होती है।

❖ ऋतुकाल में तीन दिन तक ५० ग्राम पुराना गुड़ खाने से गर्भ नहीं रहता है।

विशेष—

❖ जो स्त्री गर्भवती है उसे करेले का रस, खट्टे पदार्थ, चटपटे पदार्थ, गर्म वस्तुएँ नहीं खानीं चाहिए।

❖ जो स्त्री बाँझ है वह कहीं ऐसे पदार्थ तो नहीं खा रही है जिससे गर्भ नहीं ठहरता हो। जैसे ऋतुकाल में गुड़खाना, तुलसी के पत्ते खाना, अतः चिकित्सा कराने से पूर्व अपने आहार-विहार में बदलाव कर लें।

गर्भिणी की ९ महीने की चिकित्सा

❖ गर्भवती महिला नौ मास तक द्राक्षावलेह सुबह-शाम खायें तथा बछड़े वाली गाय दूध ९ मास तक पीये तो हिमोग्लोबिन की कमी नहीं रहेगी। बच्चे को आयरन, केल्शीयम सब मिलेगा। द्राक्षावलेह में सब शक्तियाँ निहित हैं।

❖ गर्भवती महिला को मीठा पका हुआ आम उच्च क्वालिटी का प्रतिदिन आधा किलो खाने से बच्चा हृष्ट-पुष्ट तंदुरुस्त होता है।

❖ हल्का खाना खाएँ, खूब टहलें तथा फल एवं गाय के दूध का प्रतिदिन सुबह-शाम सेवन करें।

नोट—भोजन करना भूल जायें परन्तु द्राक्षावलेह लेना नहीं भूलें तो बच्चा पूर्णतयाः स्वस्थ होगा तथा पूर्णांग होगा उसमें कोई कमी नहीं होगी।

पुत्र प्राप्ति के इच्छुक माता-पिता के लिए विशेष सूचना

पौराणिक एवं वैदिक हिन्दु संस्कृति के अनुसार पिता अपने ऋण से तभी मुक्त होता है जब वह एक पुत्र उत्पन्न करे दे। पुत्र नहीं होने का प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी पड़ता है। यहाँ तक की आपकी पुत्री को भी भाई नहीं होने का प्रभाव तो सहना ही पड़ता है। पुत्री के पुत्र को भी मामा नहीं होने से वंचित रहना पड़ता है। हिन्दू शास्त्र के अनुसार मामा होने से मान बढ़ता है। जब एक पुत्र नहीं होने का प्रभाव प्रत्येक रिश्तेदार पर पड़ता है क्योंकि पुत्र उत्पत्ति के बाद आप बेटी के घर का भोजन भी ग्रहण कर सकते हैं। शास्त्रों में लिखा है कि कन्या के घर का भोजन तब तक नहीं करना चाहिए जब तक उसके एक पुत्र नहीं हो यानि की नाना-नानी तक प्रभाव पड़ता है। दादा-दादी का तो वंश पुत्र के पुत्र नहीं होने से आगे चलता ही नहीं है। तात्पर्य यह है कि पुत्र प्राप्ति को हंसी मजाक में नहीं ले। मैंने अपने कुछ शिष्यों को बताया कि पुत्र प्राप्ति हेतु शुक्लपक्ष समरात्रि ही होनी चाहिए तब उन्होंने अन्तर्मन की भावना बताई की पति-पत्नी प्रसंग ऐसी चीज थोड़ी है कि जब चाहे जब कर ले; यह तो भावना एवं तरंग पर होती है। इसमें शुक्लपक्ष-कृष्णपक्ष और पहले ही दिन निर्धारित कर लोगे तो उत्तेजना ही नहीं होती है। यह प्रयोग हमने करके फिर निवेदन किया है और हम उस रात्रि संसर्ग कर ही नहीं पाते क्योंकि पहले से सोच लेते हैं। ऐसे भी सभी पुरुषों से निवेदन है कि उस शुक्लपक्ष समरात्रि में पत्नी संसर्ग से दो घण्टे पूर्व शुद्ध शिलाजीत ले लें परन्तु करें शुक्लपक्ष एवं समरात्रि में ही यदि इस पर लापरवाही की तो फिर पुस्तक पर सन्देह मत करना। अनेक पाठकों के पत्र मेरी पूर्व लिखित पुस्तकों के बारे में प्रतिदिन प्राप्त होते रहते हैं कि हमने आपकी अमुक पुस्तक का अमुक प्रयोग किया परन्तु लाभ नहीं हुआ। ऐसे पाठकों से में यहाँ विशेषरूप से सूचित कर रहा हूँ कि प्रयोग को पूरे तन, मन, धन से करें। आपकी जिज्ञासा उस वस्तु को प्राप्त करने की कितनी है इसी से प्राप्ति की सफलता का अनुमान लगाया जा सकता है। उदाहरणार्थ पुत्र प्राप्ति का प्रयास भी कर रहे हैं परन्तु कृष्णपक्ष में या शुक्लपक्ष में मासिकस्राव से विषम रात्रि

में ही प्रेम प्रसंग कर लिया और कह दिया कि होगा जो देखेंगे, यार कुछ नहीं होता है। आजतक जिनके लड़के हुए उन्होंने देखकर थोड़ी लगाया होगा। ऐसे तर्क-वितर्क मन में लाकर पत्नी को भी गुमराह करके प्रसंग कर लो और फिर उम्मीद रखो कि पुत्र ही हो तो इसे पूर्णतया विश्वास से नहीं कहा जा सकता है। लेकिन सब प्रयासों के बाद भी अर्थात् इतना करने पर भी कार्य फलीभूत नहीं हो तो इसका कारण यह है कि प्रारब्ध में किये गए पापों का क्षय होना अभी बाकी है।



डॉ. अनिल मोदी कृत
अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

- ❑ धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान
- ❑ रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान
- ❑ श्री हनुमान सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका
- ❑ श्री लक्ष्मी सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका
- ❑ श्री गणेश सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका
- ❑ श्री दुर्गा सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका
- ❑ श्री महामृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका
- ❑ रुद्राष्टाध्यायी भाषा-टीका
- ❑ श्री रामनवमी व्रतकथा और नवरात्रि में रामचरितमानस के पाठ का महत्व
- ❑ मन्त्र तन्त्र यन्त्र आखिर है क्या
- ❑ जानिए शनि का असली स्वरूप
- ❑ मन्त्र साधना एवं इष्ट सिद्धि कैसे करें

इन सभी पुस्तकों को मँगाने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें—

रणधीर प्रकाशन

रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे), हरिद्वार

दूरभाष : ०१३३४-२२६२९७

धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान

लेखक : डॉ. अनिल मोदी

यह लक्ष्मी जी के प्रभावशाली स्तोत्रों की अनुपम पुस्तक है। महालक्ष्मी की विभिन्न स्तोत्रों से आराधना तथा श्रीसूक्तम्, लक्ष्मी सूक्तम्, देवराज इन्द्रकृत लक्ष्मी स्तोत्र, महालक्ष्मी अष्टक, कनकधारा स्तोत्र, पुरुष सूक्तम्, धनदा लक्ष्मी स्तोत्रम्, धनदा देवी स्तोत्रम्, धनदा कवचम्, ऋणमोचन मंगल स्तोत्रम्, ऋणहर्ता गणेश स्तोत्र, ऋण मुक्ति गणेश स्तोत्र, गणेश स्तवन से लक्ष्मी वृद्धि कैसे, लक्ष्मी प्राप्ति के कुछ अन्य प्रयोग, ऋण मुक्ति के लिए अद्‌भुत प्रयोग—श्री ललिता सहस्रनाम अर्थात् श्रीविद्या की देवी के एक हजार नामों की महिमा और दीपावली पूजन, श्रीयंत्रम्, महालक्ष्मी यन्त्र, कनकधारा यन्त्र इत्यादि संकलित कर उनके विधिवत् प्रयोग की सारी जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। आप डाक द्वारा यह अद्‌भुत पुस्तक मँगायें तो आप केवल १००.०० (एक सौ रुपए) का मनीआर्डर भेज दें—पुस्तक रजिस्टर्ड पैकेट से भेजी जाती है।

श्रीयन्त्र पूजा विधान

सम्पादक : महामहिम पं. कुलपति मिश्र

इस पुस्तक में श्रीयंत्रम् का १८''× २२'' आकार का शुद्ध एवं विधि विधान से बना श्रीयंत्र (रंगीन) दिया गया है, साथ ही त्रिपुरसुन्दरी ललिताम्बिका देवी का साक्षात् स्वरूप भी है जो अन्यत्र कहीं भी नहीं मिलता है।

सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के प्रतीक श्रीचक्र पूजा यन्त्र का स्वरूप, सत्‌चित आनन्दरूप माँ ललिता के श्री विग्रह के दर्शन एवं श्रीचक्र की महिमा, उपासना एवं श्रीयंत्र की पूजा विधान सहित इस पुस्तक में वर्णित है। किसी भी शुभ दिन से पूजा प्रारम्भ करें और इस पुस्तक में दिए गए श्रीयंत्र को घर में पूजा स्थल पर लगायें—नित्य धूप-दीप करें, श्रीसूक्तम् का पाठ करें तो इसका चमत्कारी प्रभाव आप स्वयं जान लेंगे। श्रीयंत्र और श्रीविद्या की महिमा का बखान करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आप यह पुस्तक ७५ रुपये मनीआर्डर से भेजकर निम्न पते से मँगवा लें—

रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार

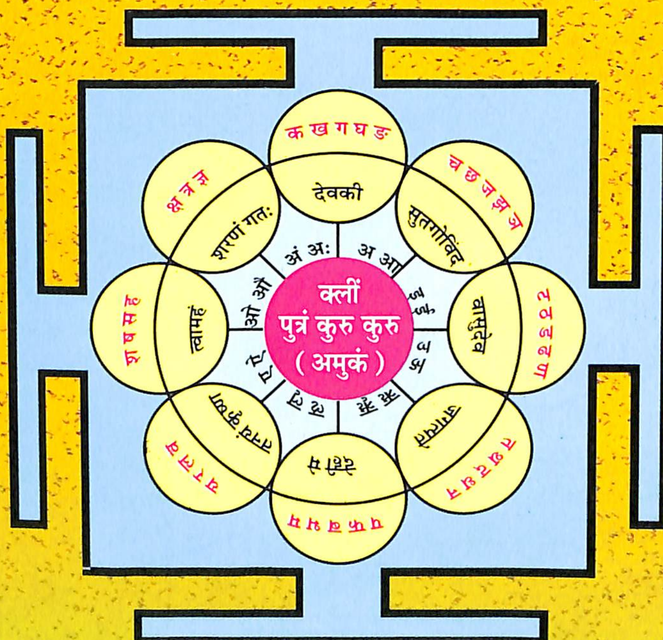
लेखक श्री अनिल मोदी को

जिला पुलिस अधीक्षक श्री बी.एन. योगेश्वर सम्मानित करते हुए।



मनचाही सन्तान प्राप्ति के लिये

सन्तान गोपाल यन्त्र



रणधीर प्रकाशन हरिद्वार